रेशम वाणी

अंक : 58 (दिसम्बर, 2023)

"सोंधी सुगंध, मीठी भाषा, गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा"

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

पिस्का नगड़ी, राँची – 835 303, झारखण्ड

प्रधान संपादक की कलम से...

रेशम वाणी अंक–58 (दिसम्बर, 2023) सम्मानित पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार गर्व की अनुभूति हो रही है। संस्थान तसर उद्योग से जुड़े दस से अधिक राज्यों की आदिवासी आबादी की आजीविका में वृद्धि के अपने मूल उद्देश्य के साथ नूतन अनुसंधान एवं विकास कार्य में सतत् लगा हुआ है। संस्थान के अनुसंधान निष्कर्ष विभिन्न तकनीकी प्रकाशनों के माध्यम से हिन्दी भाषा में तसर कीटपालकों तक उपलब्ध कराने से कीटपालन में नवीनतम प्रौद्योगिकियों को अपनाना और अधिक सुगम हुआ है। यह उद्योग ग्रामीण एवं गरीब आबादी को रोजगार का सुअवसर प्रदान करता है। यह उद्योग आदिवासी जनसमूह के पलायन को रोकने में भी कारगर है।

हिन्दी अब वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुकी है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण अभी हाल में भारत की अध्यक्षता में हुई जी–20 की आम सभा की बैठक में मिला, जहाँ विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने हिन्दी के प्रति अपने लगाव को दर्शाया।

संस्थान अपने अनुसंधान दायित्वों के निर्वहन के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी निरन्तर उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है। मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत गर्व हो रहा है कि संस्थान को वर्ष 2022–23 के दौरान पूर्वी क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि संस्थान को लगातार तीसरे वर्ष प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस उपलब्धि में जहाँ एक ओर संस्थान एवं अधीनस्थ केन्द्रों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान है वहीं दूसरी ओर मैं इसका श्रेय रेशम वाणी के प्रबुद्ध रचनाकारों को भी देता हूँ। राजभाषा प्रकाशन में उनका सहयोग अविस्मरणीय है। पत्रिका की लोकप्रियता का पता इसी से चलता है कि हमें देश के प्रत्येक क्षेत्र से रचनाएँ प्राप्त हो रही हैं। इसके लिए मैं सभी का आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि उनके रचनात्मक सहयोग से ही हम पत्रिका का नियमित रूप से ससमय प्रकाशन करने में सफल हुए हैं। मुझे आशा है कि रचनाकारों का सहयोग हमें भविष्य में भी इसी प्रकार मिलता रहेगा।

यह अकाट्य सत्य है कि किसी भी सृजन में सदैव ही परिष्करण–परिमार्जन की गुंजाइश रहती है। रेशम वाणी को और अधिक रोचक बनाने में हमें सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएँ एक नई ऊर्जा एवं स्फूर्ति प्रदान करती हैं। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

''आदिवासियों की आस : तसर से विकास''

शुभकामनाओं सहित

डॉ. एन. बी. चौधरी
निदेशक

रेशम वाणी

अंक : 58
दिसम्बर, 2023

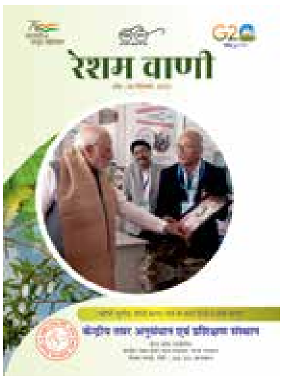

प्रधान संपादक

- **डॉ. एन. बी. चौधरी**
  निदेशक

प्रबंध संपादक

- **डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय**
  वैज्ञानिक - डी

संपादक

- **कमल किशोर बडोला**
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

संपादन सहयोग एवं शब्द संसाधन

- **सिकंदर रविदास**
  आशुलिपिक, ग्रेड - I

छायांकन

- **तिमिर अधिकारी**
  वरिष्ठ कलाकार

विभागीय पत्रिका

- **निःशुल्क वितरण हेतु**

संपर्क

सम्पादक, रेशम वाणी
केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी
राँची - 835303, झारखण्ड
ई-मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in
वेबसाइट : www.ctrti.res.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं, उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय-सूची

भाषा और साहित्य		
• जिसमें करुणा का स्पंदन वह सच्चा साहित्य	गिरीश पंकज	2
• राजकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग	अंकुश्री	5
• संस्कृति के अर्थ और आयाम	डॉ. कविता विकास	8
तकनीकी गतिविधि		
• अनुभव साझा करने हेतु कार्यशाला	जगदज्योति बिन्कदाकट्टी	10
तकनीकी आलेख		
• दीमकों का पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन	श्रेयांश	13
• तसर परपोषी पौधे के उभरते कीट पीड़क बैगवर्म की विशिष्टिताएँ	अम्पी भगत	16
• ओक तसर रेशम बीजागार विधि	ए. एस. वर्मा	19
• एक्टोमाईकोरिज़ल कवक	बेला आर. भगत	25
सफलता की कहानी		
• दीवान राम की सफलता की कहानी	शेख एजाज़ अहमद	29
• कुमारी कांति पुजारी की सफलता की कहानी	सुनील कुमार मिश्र	30
कहानी		
• रेशम गली	सपना चंद्रा	32
• रक्षा बंधन	महेश कुमार केशरी	35
• मन की खूँटी	ज्योति मिश्रा	37
• अंतर्द्वंद्व	नीलोत्पल रमेश	39
• पाँच पांडव	गीता चौबे 'गूँज'	41
• लौट आओ फिर न जाने के लिए	डॉ. रंजना जायसवाल	42
व्यंग्य		
• वीरू-बसंती वैवाहिक प्रस्ताव	विनोद कुमार विक्की	33
लघु कथा		
• ऊपर से रंग	पूनम पाण्डेय दुर्गेश	34
• आभारी चोर	डॉ. चेनापल्ली रविशंकर	36
कविता		
• सार्थकता	सविता दास सवि	38
• मैं तरंगिणी	डॉ. रचना सिंह 'रश्मि'	46
ग़ज़ल		
• ग़ज़ल	डॉ. राजीव गुप्ता	24
• ग़ज़लें	रेखा भारती मिश्रा	45
• लम्हें	नवीन कुमार सिन्हा	45
पर्यावरण		
• पुकारती है नदी	हरीश चन्द्र पाण्डे	47
पाठकों की प्रतिक्रिया		48

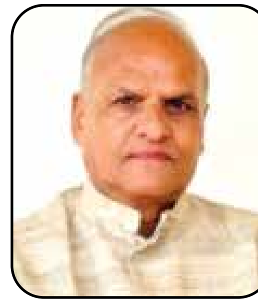

जिसमें करूणा का स्पंदन वह सच्चा साहित्य

गिरिश पंकज*

साहित्य मानवीय प्रवृत्ति के निर्माण का एक महान उपक्रम है। साहित्य का अर्थ ही है, जो हित के साथ हो। जो हित के सहित हो, वह साहित्य है। मैंने कभी विनम्रतापूर्वक साहित्य की परिभाषा देते हुए एक पुस्तक में लिखा था,

जिसमें करुणा का स्पंदन वह सच्चा साहित्य।
जिसमें जन गण मन का वंदन वह सच्चा साहित्य।
आजादी का अर्थ नहीं हम हो जाए निर्वस्त्र,
जिसमें नैतिकता का बंधन का सच्चा साहित्य।

तो साहित्य वही है, जो उच्च आदर्श या मूल्यों के प्रति आसक्त करे। जो 'रेशम' की तरह कोमल 'वाणी' बोलने के संस्कार दे। सृजन हमारे जीवन को मूल्यवान बनाए। इस दृष्टि से रचा जाने वाला साहित्य अगर युवकों तक पहुँचता है, तो नि:संदेह युवकों का बौद्धिक विकास होगा। वे देश और समाज के बारे में अपनी बेहतर सोच विकसित कर सकेंगे। हमारे यहाँ कहा गया है, 'जैसा खाए अन्न, वैसा होगा मन'। उसी तर्ज पर कहा जा सकता है, 'जैसा पाए ज्ञान, वैसा बने इंसान'। मैंने कोशिश की है यह कहावत गढ़ने की। ज्ञान का ही सारा खेल है, जिसके आधार पर मनुष्य का निर्माण होता है। युवक हमारे समाज की ताकत होते हैं। युवा चाहे तो देश को उन्नति के शिखर पर ले जाएं, चाहे तो रसातल में। इसलिए स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों ने अपने चिंतन के केंद्र बिंदु में युवकों को रखा। वे अपने उद्बोधनों में अकसर युवकों को ही संबोधित किया करते थे और कहते थे, युवा अगर मजबूत होगा, तो यह देश मजबूत होगा। उनकी मशहूर उक्ति है, "उठो, जागो ! और जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो रुको मत"। 'उठो, जागो' का अर्थ सिर्फ सुबह उठने और जागने से नहीं, वरन् उस जाग्रत अवस्था से है, जो मनुष्य को निरन्तर चेतन बनाती है। यह चेतना तभी विकसित हो सकती है, जब हम सब साहित्य की ओर प्रवृत्त हों। परीक्षा पास करने के लिए जो किताबें युवकों को दी जाती हैं, उसका अध्ययन डिग्री प्राप्त करने के लिए बहुत जरूरी है और उन्हें पढ़ा जाना चाहिए। लेकिन त्रासदी यही है कि अनेक युवा उन किताबों को भी नहीं पढ़ना चाहते और कुंजी के सहारे परीक्षा की वैतरणी पार कर लेते हैं। ऐसे युवाओं से अगर हम आग्रह करें कि वह साहित्य की दुनिया में प्रवेश करें, तो यह एक बड़ी चुनौती है लेकिन यह चुनौती स्वीकार की जानी चाहिए और युवाओं से निरंतर संवाद कायम करके उन्हें साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

चार तरह का साहित्य : इस बात का हमें ध्यान रखना होगा कि युवा कैसा साहित्य पढ़े। साहित्य के भी कई प्रकार हैं। एक कैरियर को आगे बढ़ाने वाला साहित्य, दूसरा मनोरंजन करने वाला साहित्य, तीसरा अश्लीलता को बढ़ावा देने वाला साहित्य और चौथा है वह साहित्य जो नैतिकता को बढ़ावा देता है। चार तरह के साहित्य हमारे समाज में यत्र-तत्र-सर्वत्र मिल जाते हैं। युवकों को अपनी रुचि के अनुरूप साहित्य के चयन की स्वतंत्रता है। लेकिन उसका दुष्परिणाम यह हो रहा है कि इधर जो साहित्य रचा जा रहा है, वह युवकों की मानसिकता को विकृत करने की दृष्टि से रचा जा रहा है। अँगरेज़ी में जिसे हम 'वल्गर' कहते हैं, हिंदी में वह 'घृणित' है और दोनों भाषाओं में इसी तरह के साहित्य लेखन का दौर चल पड़ा है 'लिव इन रिलेशनशिप' और 'समलैंगिकता' आदि विषयों पर लिखे गए उपन्यास पिछले एक दशक में काफी चर्चित हुए और कुछ तो बेस्ट सेलर की उपाधि से विभूषित किए गए। यहाँ किसी खास कृति का नाम नहीं लेना चाहता लेकिन जानकार लोगों को पता है कि अनेक ऐसी कृतियाँ बाजार में उपलब्ध हैं, जिसने साहित्य को विकृत किया है। युवाओं की पसंद को विकृत कर दिया। कविताएं ऐसी लिखी गई, जो सीधे-सीधे योनि-विमर्श करती नजर आई। कहानियों में वासना जनित स्थितियाँ निर्मित की गई। मशहूर पत्रिकाओं में अश्लील कहानियाँ प्रकाशित होती रही और जब ऐसे साहित्य को युवा पाठक पढ़ता है, तो उसे लगता है,

यही साहित्य है और उसका मन ऐसे साहित्य में ही रमने लगता है। साहित्य के इस पतनकाल में सतसाहित्य की तलाश अंधेरे में सुई खोजने की तरह है, लेकिन मुझे लगता है इस अंधेरे में ज्ञान का दीप जलाना ही चाहिए। तमाम विरोधों के बावजूद सतसाहित्य की रचना एक सच्चे लेखक का परम कर्तव्य है। अब हम यह तर्क नहीं दे सकते कि आज का युवा निकृष्ट साहित्य पढ़ना चाहता है। ऐसा साहित्य ही पढ़ना चाहता है जिसमें अश्लीलता भरी हो। नहीं, यह अर्धसत्य है। अगर युवकों के सामने श्रेष्ठ साहित्य आएगा, तो वह उसे भी पढ़ेगा लेकिन जब चारों ओर अंग्रेजी मानसिकता वाले लेखक बढ़ते जाएं, तो साहित्य की दिशा भी थोड़ा गलत हो ही जाएगी इसलिए युवकों का सतत् उन्नयन करने वाला साहित्य रचा जाना चाहिए। इन दिनों मिथकों पर केंद्रित उपन्यास भी युवाओं की पसंद बने हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है। मिथकों के पुनरपाठ हमें एक तरह से अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। इस सनातन राष्ट्र की बुनियाद में मिथकों की अहम् भूमिका रही है। हमारे अधिकतर देवी देवताओं से जुड़ी कहानियाँ मिथक हैं। उनमें कहीं कोई सच्चाई नहीं है लेकिन ये मिथक हमें कहीं-न-कहीं सकारात्मक संदेश भी देते हैं। इस दृष्टि से अगर देवी-देवताओं पर काल्पनिक उपन्यास भी लिखे जा रहे हैं, तो मैं उसकी सराहना करूँगा। ये उपन्यास अश्लील उपन्यासों से हजार गुना अच्छे हैं। अश्लीलता युवकों को पतन की ओर ले जाती है लेकिन मिथकीय उपन्यास युवकों को एक दृष्टि प्रदान करते हैं। उनकी कल्पना शक्ति को ही बढ़ाते हैं। इसलिए मुझे लगता है युवाओं के सामने ऐसा साहित्य ही परोसा जाये जो उन्हें आदमी से इंसान बना दे। आदमी से शैतान बनाने वाला साहित्य बहिष्कृत होना चाहिए।

विविध साहित्य की रचना : हर समझदार युवक जीवन में कुछ बन करके दिखाना चाहता है। इसलिए बाजार में कैरियर से जुड़ी बहुत-सी किताबें उपलब्ध हैं। 'सफल कैसे हों', 'सफलता के सूत्र', 'सफलता अपनी मुट्ठी में' जैसे शीर्षक वाली अनेक किताबें बाजार में उपलब्ध हैं। यह भी एक साहित्य ही है। इसे पढ़कर भी युवा अपने भविष्य का बेहतर निर्माण कर सकते हैं। कर भी रहे हैं, लेकिन इसके साथ ही अगर वे विशुद्ध साहित्य कृतियों को भी पढ़ते हैं, तो उनकी कल्पना शक्ति का ही विकास होता है। वर्तमान में बहुत कम ऐसी कृतियाँ हैं, जिसको पढ़कर युवक अपनी सकारात्मक कल्पना शक्ति का विकास कर सके। इसलिए मैं साहित्य में रुचि रखने वाले युवा पाठकों से अपील करूँगा-चार-पाँच दशक पहले लिखी गई किताबों से ज़रूर गुजरें। तब सही मायने में वे साहित्य के स्वाद को आनन्द को समझ सकेंगे। मुंशी प्रेमचंद, निराला, प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, अज्ञेय, मुक्तिबोध, राम नरेश त्रिपाठी, माखन लाल चतुर्वेदी, द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण, दुष्यंत, नागार्जुन, शिवानी आदि अनेक नाम है, जिनके साहित्य को पढ़कर युवा दिशाहीन नहीं हो सकता। उसे नई दृष्टि मिलेगी और यह नई दृष्टि ही उसकी बेहतर सृष्टि कर सकती है। कई बार आगे बढ़ने के लिए हमें पीछे भी लौटना पड़ता है। डॉ. राम मनोहर लोहिया इसी को कहते थे 'पीछे देखो वाली आधुनिकता'। हमें आधुनिक होना है। हमें आगे बढ़ना है लेकिन जब तक हम पीछे नहीं देखेंगे, हम आगे नहीं बढ़ सकते। पीछे देखने का मतलब, जो हमारा श्रेष्ठ प्रदेय है, जो महान परम्पराएं हैं, उनको देखना और उनके अनुरूप अपने जीवन को ढालना। युवकों को अगर अपना जीवन बेहतर करना है, तो वर्तमान में रहकर वे सफल नहीं हो सकते। उन्हें अतीत के आँगन में भी टहलना होगा। वहाँ जो ज्ञान के बड़े-बड़े सुवासित वृक्ष सुशोभित हैं, उनमें लगे फलों का स्वाद चखना होगा। तब उन्हें अतीत और वर्तमान के सर्जन का अंतर भी समझ में आएगा। अश्लीलता या अराजकता साहित्य का केंद्र बिंदु नहीं हो सकती। नवजागरण साहित्य का प्रथम लक्ष्य होना चाहिए। इस समय एक बड़ा संकट यह भी है कि जब से इंटरनेट का पदार्पण हुआ है और मोबाइल में सारी दुनिया सिमट कर आ गई है तब से पुस्तक पढ़ने की संस्कृति धीरे-धीरे कम होती गई है लेकिन मैं इसे भी बहुत चिंताजनक स्थिति नहीं मानता क्योंकि अंततः मोबाइल में भी ज्ञान का खजाना छुपा हुआ है। 'गूगल' के माध्यम से आज भी बहुत कुछ श्रेष्ठ उपलब्ध हो जाता है। 'गद्य कोश' और 'कविता कोश' जैसी साइटें युवकों को दिशा प्रदान कराने के लिए पर्याप्त हैं। अनेक पुराने साहित्यकार गद्य कोश और कविता कोश के माध्यम से आज भी हमें उपलब्ध हो जाते हैं। उनको पढ़कर हम बहुत कुछ श्रेष्ठ प्राप्त कर सकते हैं। अगर प्राप्त करना चाहें तो ! गूगल में हम चाहे तो अश्लीलता खोज लें और चाहे तो नैतिकता खोज लें। वहाँ सब कुछ समान रूप से उपलब्ध है। जिसकी जैसी रुचि हो, वैसा साहित्य गूगल के माध्यम से आसानी से उपलब्ध हो जाता है। यह तो युवाओं के अपने संस्कार पर निर्भर करता है कि वह किस साहित्य की ओर जाना चाहता है। उसके जीवन का लक्ष्य क्या है। क्या वह अश्लीलता को ही अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहता है, या नैतिक मूल्यों को ? यह उसके ऊपर निर्भर है।

संस्कार देने का कार्य : मुझे लगता है कि युवकों को संस्कार देने का कार्य स्कूल-कॉलेज के माध्यम से शुरू हो जाना चाहिए। यह शिक्षकों का, माता-पिताओं का दायित्व है कि वे अपने बच्चों को सतसाहित्य की ओर प्रेरित करें। अपने कैरियर बनाने के लिए तत्संबंधी साहित्य जरूर पढ़ें और एक बेहतर मुकाम हासिल करें, लेकिन आत्म रंजन के लिए आत्म परिष्कार के लिए वैसा साहित्य पढ़ें जैसा साहित्य पढ़ा जाना चाहिए। इस समय यही एक बड़ी चुनौती है, जिसे मैं महसूस कर रहा हूं।

युवा शक्ति ही कर सकती है, अब विकास के सारे काम।
इसकी अगुवाई जो करता, उसी का होता जग में नाम।

मैंने कभी युवको के लिए एक गीत लिखा था। उसकी उक्त दो पंक्तियां हैं। आंकड़े बता रहे हैं कि इस समय देश में सर्वाधिक आबादी युवा पीढ़ी की है। यह युवा पीढ़ी अगर देश के महत्व को समझे, नैतिक मूल्यों को आत्मसात करे, तो मेरा भारत महान हो सकता है। देश भक्ति इस समय उपहास का विषय बन गई है। देश में ऐसी ताकतें तेजी के साथ बढ़ रही हैं, जो युवकों को राष्ट्रभक्ति से काटने की कोशिश कर रही हैं। युवाओं को पतन की राह पर ले जाने की कोशिश कर रही हैं। अनेक युवक-युवतियां दोनों आधुनिकता के नाम पर निर्लज्ज होते जा रहे हैं। सिगरेट-शराब पीना, खुलेआम एक-दूसरे को बाहों में भर कर चूमना-चाटना आदि न जाने कितने अमर्यादित आचरणों की खबरें आए दिन मिलती रहती हैं। बलात्कार की घटनाएं तेजी के साथ बढ़ी हैं और इसे करने वाले ज्यादातर युवक ही हैं इसलिए ऐसे गुमराह युवकों को दिशा देने के लिए सतसाहित्य की रचना बहुत जरूरी है। अगर हमारा युवा नैतिक मूल्यों के उत्थान का साहित्य पढ़ेगा तो उसकी मानसिकता वैसी बनेगी। अगर वह माँ-बहन की गालियों से भरपूर अश्लील उपन्यास पढ़ेगा, तो स्वाभाविक है कि उसकी मानसिकता में वैसी चीजें शामिल हो जाएंगी। ऐसा साहित्य पढ़ने वाला युवा अपनी यौन कुंठाओं को दूर करने के लिए बलात्कार जैसी घृणित प्रवृत्ति से जुड़ जाएगा। इसलिए अब समय आ गया है कि युवकों को स्वामी विवेकानंद के आदर्शों से जोड़ा जाये। स्वामी विवेकानंद का चिंतन आज भी हमें ऊर्जा से भर देता है। अतः मुझे लगता है, हमारा नया साहित्य स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों के बताए रास्ते पर चलकर रचने वाला साहित्य होना चाहिए। गाँधी ने जिस महान भारत की कल्पना की थी, उस महान भारत के निर्माण का साहित्य रचा जाना चाहिए। यह एक बड़ी चुनौती है जिसे स्वीकार करके साहित्य सृजन करना हर श्रेष्ठ साहित्यकार का दायित्व है। धारा पतन की बह रही है लेकिन हमें उत्थान की ओर उन्मुख होना है। यानी धारा के विपरीत बहना है। साहित्य की परिभाषा हित सहित हो, उसे आत्मसात करके जो सृजन किया जाएगा, वही अंततः सारस्वत भी होगा, शाश्वत भी और मूल्यवान भी। पुनर्जागरण की दिशा में युवकों का पाथेय भी यही बनेगा।

*एचआईजी 2/2 सेक्टर-3, दीनदयाल
उपाध्याय नगर, रायपुर-492010, छत्तीसगढ़

रचनाकारों के लिए सूचना

रेशम वाणी के सभी सम्मानित रचनाकारों से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाओं के साथ अपना बैंक विवरण यथा-बैंक का नाम, खाता संख्या, IFSC कोड एवं मोबाइल नम्बर भी भेजें ताकि रचनाओं के मानदेय का भुगतान केवल ऑन-लाइन माध्यम से उन्हें समय पर किया जा सके। साथ ही रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ भी भेजें। रचनाकारों से अनुरोध है कि रचनाएँ साफ-साफ हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टंकित रूप में भेजें तथा यदि संभव हो तो रचना की सॉफ्ट प्रति ई-मेल : (ctrtihindi@gmail.com) के माध्यम से भेजें। रचनाएँ यथा समय रेशम वाणी में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा तथापि अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाएंगी।

संपादक

राजकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग

अंकुश्री*

राजकाज में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसे राजभाषा कहते हैं। हमारे भारत देश के केंद्र सरकार के कार्यालयों और प्रतिष्ठानों तथा कई राज्यों में हिंदी सरकारी भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। अर्थात् हिंदी वहाँ की राजभाषा है। वहाँ राजकाज में हिंदी का प्रयोग होता है।

राजभाषा नियम : निर्धारित भाषा में पत्राचार करने से उसमें एकरूपता आ जाती है और इससे पत्र लिखने का उद्देश्य अधिक कारगर हो जाता है। इसलिए हमारे संविधान के अनुच्छेद-343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। हमारे यहाँ राजभाषा के प्रयोग के लिए 1976 में नियम बनाये गये हैं। नियमों में बंधकर काम करने से उसमें जो एकरूपता आती है उससे संपर्क आसान हो जाता है और काम की सुचारूता भी बढ़ जाती है। संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव गोपालस्वामी आयंगर ने दिया था। यह एक सुखद आश्चर्य है कि हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव देने वाले गोपालस्वामी आयंगर हिंदी भाषी नहीं थे।

पत्राचार की राजभाषा : पत्र-लेखन और साहित्य-सृजन में बहुत अंतर है। दोनों में विषय के अनुसार शब्दों का चयन किया जाता है। मगर दोनों की प्रस्तुति का ढंग अलग होता है। मोटे तौर पर कहा जाए तो पत्र तथ्यात्मक होता है और साहित्य भावनात्मक। हाँ, निबंध भी तथ्यात्मक और सूचनात्मक होता है, मगर पत्र से यह बिल्कुल भिन्न होता है। निबंध आदेशात्मक नहीं होता है जबकि पत्र में आदेश या उसका अनुपालन होता है जो उसकी प्रमुख विशेषता है। सरकारी पत्र आदेश या आदेशों के क्रियान्वयन के निहितार्थ होता है।

हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि : हमारे देश में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य का सृजन किया गया है। हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का मानना था कि भारत की प्रादेशिक भाषाओं का साहित्य देवनागरी लिपि के माध्यम से हर भारतीय के लिए उपलब्ध कराना चाहिए। वीर सावरकर देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में मान्यता देने के पक्षधर थे। लाला लाजपत राय राष्ट्रीय एकता के लिए समूचे भारत में देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार आवश्यक मानते थे। आचार्य विनोबा भावे तेरह लिपियों के जानकार थे और वे देवनागरी लिपि को विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि मानते थे। देवनागरी लिपि हमारे देश से बाहर भी कई देशों में प्रयुक्त होती है। मारीशस, सूरिनाम, फिजी, गुयाना, त्रिनिदाद, टुबैगो आदि देश के लोग देवनागरी लिपि का अधिकतम प्रयोग करते हैं। दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती है। विदेशों में हिंदी विषय पर अनेक शोध हुए हैं और हिंदी साहित्य का विदेशी भाषाओं में और विदेशी भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ है। यह काम देश-विदेश के अनेक विद्वानों द्वारा संपन्न किया गया है। विदेशों में हिंदी का प्रयोग या अध्ययन किसी के द्वारा थोपा नहीं गया है, अपितु यह एक स्वतः स्फूर्त प्रक्रिया के तहत किया जाता है।

राजभाषा हिंदी और अंग्रेजी का प्रचलन : राजभाषा हिंदी के प्रयोग के नियम के साथ यह बात भी जुड़ी हुई है कि जहाँ हिंदी प्रचलित नहीं है, वहाँ हिंदी पत्र के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद भी भेजा जाए। मगर कुछ हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी अंग्रेजी प्रचलित है, जो उपयुक्त नहीं है। यह एक सोचनीय विषय है। अंग्रेजी बोलने वाले कुछ भारतीयों को इस बात का गुमान है कि वे समाज में अन्य लोगों से भिन्न और विशिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी बोलने वाले ही नहीं, उसे सुनने वाले

कुछ लोग भी अंग्रेजी बोलने वालों को खास महत्व देते हैं। ऐसी ही परिस्थिति में कुछ लोग हिंदी बोलने वालों को तुलनात्मक रूप से कम जानकार या अज्ञानी मानने की भूल कर बैठते हैं। अंग्रेजी बोलने वाले उस भाषा के जानकार या विशेषज्ञ नहीं होते। कई लोग तो टो-टाकर अंग्रेजी बोलते हैं और उसी बल पर अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं। अंग्रेजी बोलने वाले कुछ लोगों की स्थिति बहुत हास्यास्पद लगती है। वे अंग्रेजी के कुछ जुमले सीख लेते हैं और अपने अधूरे ज्ञान की उसी सीढ़ी पर चढ़ कर अपने को ऊँचा दिखाने की कोशिश करते हैं। किसी भी भाषा या उस भाषा के विद्वान का कद्र किया जाना चाहिए। मगर टो-टाकर अंग्रेजी बोलने वाले के समक्ष अपनी हिंदी की जानकारी को कम आँकना अपनी ही नहीं, भाषा की भी तौहिनी है।

भाषा के प्रयोग के लिए आत्मविश्वास आवश्यक है : अपनी भाषा का प्रयोग करने में हिचकना नहीं चाहिए। स्वामी विवेकानंद को अच्छी अंग्रेजी आती थी। मगर सर्वधर्म सम्मेलन में उन्होंने अंग्रेजी में भाषण नहीं दिया था। शिकागो में दिया गया उनका विश्वप्रसिद्ध भाषण हिंदी में था। वक्तव्य के लिए वक्ता को ज्ञान से अधिक आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। स्वामी विवेकानंद द्वारा हिंदी में दिया गया भाषण किसी भी वक्ता द्वारा दूसरी भाषाओं में दिए गए भाषण से ऊपर स्तर का सिद्ध हुआ। उस भाषण का प्रसंग हमारे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में आज भी दिया जाता है। मुंशी प्रेमचंद के युग में फारसी का बोलबाला था। मगर उन्होंने हिंदी में साहित्य का सृजन कर अपनी जो पहचान बना ली, वह फारसी में संभव नहीं था। ऐसा इसलिए हो पाया कि उन्होंने हिंदी में पूर्ण आत्मविश्वासपूर्ण ढंग से अपनी कलम चलाई। उनके आत्मविश्वास का ही परिणाम है कि हिंदी में उनके द्वारा लिखा गया साहित्य देश में ही नहीं, पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहा है। हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी विदेशों में जाते हैं तो वहाँ अपना भाषण अंग्रेजी में नहीं देकर हिंदी में देते हैं। उनकी अंग्रेजी बहुत अच्छी है। मगर वे हिंदी भाषा के बल पर ही अपने वक्तव्य से सबको बाँध देते हैं और विदेशों में अपने साथ ही देश की भी एक विशिष्ट पहचान बना कर आते हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हिचकिचाहट क्यों : हिंदी राजभाषा तो है ही, यह बहुतों की मातृभाषा भी है। अपनी भाषा के प्रयोग में हिचकिचाहट क्यों की जाए। यह ठीक उसी तरह है जैसे कोई गरीब आदमी का बेटा पढ़-लिख कर साहेब बन जाए और अपने पिता का परिचय अपने नौकर के रूप में दे। लानत है ऐसी शिक्षा और प्रगति पर जो अपने संस्कार को भूल जाए, अपनी पहचान को भूल जाए। इस बात का हमें गर्व होना चाहिए कि हिंदी हमारी भाषा है और हम उसका प्रयोग करते हैं। हिंदी हमारी माटी से जुड़ी हुई भाषा है, हमारा संस्कार है और हमारा परिचय भी। अपनी भाषा के प्रयोग से जो गर्व होता है, वह विदेशी भाषा के प्रयोग से संभव नहीं है। अंग्रेजी के सभी वक्तव्य सुनने में प्रिय नहीं लगते हैं। कुछ अंग्रेजी वक्ता को सुनने पर ऐसा लगता है जैसे कोई बदसूरत महिला अपनी पहचान बनाने के लिए चेहरे पर पाउडर पोत कर लिप-स्टिक और काजल लगा ली हो। ऐसा व्यक्ति दूर से पहचान में तो आ जाता है, मगर अफसोस कि उस पहचान का स्तर ऊँचा न होकर निम्नतर होता है।

इतिहास पुराना है : हिंदी भाषा कोई नई-नवेली दुल्हन नहीं है कि वह अब भी शर्माती ही रहे। यह हजार वर्ष पुरानी हो चुकी है। संस्कृत, पाली और प्राकृत से हिंदी का प्रारंभ होता है। जायसी और अमीर खुसरो की रचनाओं में भी हिंदी का प्रयोग किया गया है, जिससे यह आगे बढ़ने में सहायक हुई। भारतेंदु हरिश्चंद का नाम हिंदी को आगे बढ़ाने में विशेष रूप से लिया जाता है। हिंदी कथा साहित्य को लोकप्रिय बनाने में हम देवकीनंदन खत्री को नहीं भूल सकते।

भाषा हर किसी की पहचान और शान होती है। अपनी भाषा का प्रयोग करने से जो पहचान बनती है, वह स्थाई होती है और उससे गरिमा टपकती है। अपनी भाषा का प्रयोग करने से लोग एक सूत्र में बँधते हैं और उससे जो ताकत मिलती है, वह राष्ट्रहित में काम आती है।

कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग : एक बड़ी विसंगति यह है कि राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचलन पर उन्हीं कार्यालयों में अधिक जोर दिया जाता है, जिन कार्यालयों में इसका पूर्ण रूप से प्रयोग नहीं किया जाता है। हिंदी अधिकारी या राजभाषा अधिकारी जैसे पदों का सृजन उन्हीं कार्यालयों या विभागों में किया जाता है, जहाँ हिंदी का प्रयोग राजभाषा के रूप में किया

जाना तो है, मगर कम किया जाता है। राजकर्मियों द्वारा यदि थोड़ा ध्यान दिया जाए तो हिंदी का प्रयोग करने के लिए उन्हें सचेत करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। जिन कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में काम होता है वहाँ नियुक्ति परीक्षाओं में यदि हिंदी को अनिवार्य कर दिया जाए और कार्यालयों के काम में इसे पूर्ण रूप से प्रचलित रखा जाए तो परेशानी उतनी नहीं होगी जितनी हो रही है। ऐसे में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की चिंता कम, इसके विकास की चिंता अधिक रहेगी, जो इसके स्वास्थ्य के लिए अधिक आवश्यक है। कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग पर बल देने के लिए दिवस, सप्ताह या पखवाड़ा मनाना अथवा कार्यशालाएँ आयोजित करना राई छिंट कर चुनने जैसे लगता है। कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग करने के लिए योजनाएँ लागू करने के परिणाम से स्पष्ट होता है कि इसमें लगे लोग चाहे जितना व्यस्त हों, मगर कार्यक्रम पूरा अस्त-व्यस्त है। राजभाषा के प्रयोग को नियुक्ति के समय ही अनिवार्य कर दिए जाने से उसके प्रयोग को बढ़ावा के लिए विभिन्न संसाधनों पर होने वाले व्यय की आवश्यकता कम रह जाएगी। नव नियुक्त राजकर्मियों को तीन वर्षों के अंदर हिंदी टिप्पण और प्रारूपण परीक्षा में उत्तीर्ण होने की अनिवार्यता है। परीक्षा उत्तीर्ण नहीं होने तक वार्षिक वेतनवृद्धि रोक देने का प्रावधान है। यह राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में बनाई गई एक व्यवस्था है।

दूसरी भाषाएँ मेहमान हैं, मेजबान नहीं : राजभाषा का विकास सिर्फ कार्यालयों या सरकारी काम-काज में इसके प्रयोग से संभव नहीं है। इसके लिए बचपन से हिंदी के प्रयोग पर बल देना होगा। इससे यह बच्चों के संस्कार में शामिल हो जाएगी। अभी स्थिति ऐसी है कि हिंदी भाषी क्षेत्र के बालकों और किशोरों को हिंदी के अनेक प्रचलित शब्दों की सही जानकारी नहीं है। बायां-दायां बताने के लिए उन्हें लेफ्ट-राइट कह कर समझाना पड़ता है। गिनती के शब्दों का हिंदी में प्रयोग आज के अनेक युवाओं के लिए एक कठिन काम है। ग्यारह, उन्सठ, उन्हत्तर, उन्नासी आदि का वे अर्थ ही नहीं समझ पाते हैं। किसी शब्द को नहीं जानना उतना बुरा नहीं है, जितना कि उसे जानने का प्रयास नहीं करना है। सवा, डेढ़ या ढाई कितना होता है इसे समझने की कोशिश नहीं करना पूरी तरह अज्ञानता है। मगर अफसोस है कि इसे अंग्रेजियत की शान के तौर पर प्रदर्शित किया जाता है और इसी कारण इसे सीखने का प्रयास भी नहीं किया जाता है। हिंदी के अनेक घरेलू शब्दों का प्रयोग कुछ लोगों को आधुनिकता के विरुद्ध लगता है। माता, पिता, दादी-नानी, दादा-नाना, चाचा-चाची जैसे शब्दों का प्रयोग तो आज के बच्चे भूल ही गए हैं। इसके बदले वे मॉम, पॉप, ग्रैंड मॉम, ग्रैंड पॉप, अंकल जी, ऑन्टी जी बोलते हैं। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले अधिकतर बच्चों का हिंदी ज्ञान बहुत कमजोर होता है और वे अंग्रेजी भी तारभाषी (टेलिग्राफिक) बोलते या लिखते हैं। अर्थात् वे शब्दों को अंग्रेजी में बोलते या लिखते अवश्य हैं, मगर अधिकतर मामलों में उनका वाक्य-विन्याश सही नहीं होता। ऐसे लोग हिंदी में सही ढंग से दो पंक्तियाँ नहीं लिख पाते हैं। इस प्रकरण का सबसे दुःखद पहलू यह है कि बच्चों के अशुद्ध हिंदी प्रयोग को उनके अभिभावक गरिमापूर्ण बात समझते हैं और शान से कहते हैं, "अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा है न !" भाषा कोई भी हो उसका सम्मान करना चाहिए, मगर मेहमान की तरह, मेजबान की तरह नहीं।

राजभाषा और पत्राचार : भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। यह सिर्फ बोलने का माध्यम नहीं होती बल्कि इससे बोलने वाले का व्यक्तित्व भी परिलक्षित होता है। प्राचीन काल से विभिन्न भाषाओं में साहित्य की रचना होती रही है। उन सबमें रचनाकारों द्वारा अपने मनोभाव को प्रकट किया गया है। सरकारी काम-काज में भी विषय के अनुरूप मनोभाव की ही प्रस्तुति होती है। कार्यालयों में अपनी बातों को मुख्यतः दो रूपों में प्रस्तुत किया जाता है। एक टिप्पणी लिखकर और दूसरा पत्र द्वारा। कार्यालयों में पत्राचार कुछ विशेष विषयों के इर्द-गिर्द घूमता जरूर है, मगर उसकी प्रस्तुति का ढंग समान नहीं होकर अलग-अलग होता है। यह पत्र लिखने वाले के ज्ञान, विषय पर उसकी पकड़, अभिव्यक्ति की क्षमता और उसकी भाषाई समझ पर निर्भर करता है। लिंग और वर्तनी के सही प्रयोग से पत्र में चार चाँद लग जाता है। सही शब्दों का चयन कर शुद्ध भाषा में लिखे गए पत्र से विषय की गंभीरता बढ़ जाती है और वह अधिक उपयोगी बन जाता है। इससे पत्र में निहित तथ्यों के अनुपालन में आसानी होती है, जो राजभाषा के राजकाज में प्रयोग के निहितार्थ है।

*8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम,
राँची - 834 010, झारखण्ड

भाषा एवं साहित्य

संस्कृति के अर्थ और आयाम

डॉ. कविता विकास*

मनुष्य के लौकिक-पारलौकिक सर्वाभ्युदय के अनुरूप आचार-विचार की संहति को ही संस्कृति कहा जाता है। जिन चेष्टाओं द्वारा मनुष्य अपने जीवन के समस्त क्षेत्रों में उन्नति करता हुआ सुख - शांति प्राप्त करता है, वे चेष्टाएँ ही संस्कृति कही जा सकती हैं। संस्कृति वाकई में मानव-जीवन के विविध पक्षों से सम्बद्ध एक सतत् विकासमान प्रक्रिया है, जिसमें देश और जाति विशेष की परम्पराओं का विशेष महत्त्व होता है। वस्तुतः किसी भी देश की संस्कृति उस देश के खान-पान, वेश-भूषा, आचार-विचार, रीति-रिवाज़, ज्ञान-विज्ञान, मान्यताओं -प्रवृतियों का सम्यक बोध कराती है। इसलिए बुद्धिजीवी किसी देश की संस्कृति पहचानने के लिए वहाँ के साहित्य, संगीत-नृत्य और चित्रकला-मूर्तिकला को जानने की सलाह देते हैं। हमारे देश की भौगोलिक स्थिति यहाँ के सांस्कृतिक आयाम को विस्तार देने में सहायक है। पंजाब और बंगाल इसके दो हाथ हैं। कटाक्ष और पुष्कर राज इसके दो नेत्र हैं। उत्तर प्रदेश वक्षस्थल है। महा कौशल हृदय है। नासिक इसकी नाभि और त्रावंकोर तथा रामेश्वरम इसके दो चरण हैं। सागर इसका चरण-सेवक है। हिमालय संतरी, कैलाश सरमौर और गंगा-जमुना की मालाएँ इसके वक्षस्थल की शोभा है। यही भौगोलिक विविधता वेषभूषा, खान-पान और रीति-रिवाज़ों को भी वैविध्य प्रदान करती है। जितने राज्य, उतनी ही संस्कृतियाँ। बंगाल अपनी मीठी बोली के लिए जाना जाता है तो पंजाब अपने स्वादिष्ट व्यंजन के लिए। कश्मीर के गुलनार सरीखे कश्मीरी के अलग अंदाज़ हैं तो तमिलनाडु की अलग पहचान। हर प्रदेश खान-पान, गीत-संगीत, पहनावे और भाषा में दूसरे से अलग है। यही विविधता हमारे भव्य सांस्कृतिक परिवेश को संवृद्धि प्रदान करती है। राज्य के आधार पर भिन्नता तो एक बात है। एक ही राज्य में भी जाति-जनजातियों की अपनी विशिष्ट परम्पराएँ हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन करने पर स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति भारतीय जीवन शैली और जीवन दर्शन की तात्त्विक व्याख्या है। 'सादा जीवन उच्च विचार' भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। यह त्याग-परायण, तप - आश्रित है। भारतीय संस्कृति में जीवन का उद्देश्य अपनी सुख-सुविधाओं का अधिकतम संग्रह करना नहीं है, बल्कि श्रमपूर्वक अर्जित उपलब्धियों को भी अन्य वंचितों में वितरित कर देना है। यह आत्म-विस्तार की संस्कृति है, जिसमें सब अपने हैं, कोई पराया नहीं। सबके सुख की चिंता करना अपना कर्तव्य है, यहाँ तक कि पशु-पक्षियों की भी। भारतीय संस्कृति की आदिकाल से विशेषता रही है कि उसने बाहरी देशों के लोगों को आगे बढ़ कर गले लगाया। उदारता का अर्थ है अपने हित के साथ-साथ पड़ोसियों का भी ख्याल रखे। उनकी जीवन शैली और परंपरा में कुछ भी अनुकरणीय है तो अवश्य अपनायें लेकिन अपनी जीवन-शैली को त्याग कर नहीं। भाषाओं को सीखना नौकरी और पर्यटन के लिहाज से अति आवश्यक है लेकिन ध्यान यह भी रखना है कि अपनी भाषा का अपमान न हो। संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो जितनी हमारी संस्कृति में है। धर्म की स्वतन्त्रता तो संविधान से मिली है। इसलिए हिन्दू धर्म को मात्र धर्म नहीं, जीवन पद्धति की संज्ञा दी गई है। भारतीय संस्कृति के इस लचीले स्वरूप में जब-जब भी जड़ता आई, कोई-न- कोई विचारक या महापुरुष ने इसे गतिशीलता प्रदान की। राम, कृष्ण, नानक, गौतम, गांधी, आदि इसी संस्कृति के प्रतिष्ठापरक पुरस्कर्ता प्रतीक पुरुष हैं। आस्तिकता, रूढ़ि-भंजकता, समन्वयवादिता, दानशीलता, राष्ट्रीयता, स्वाभिमान आदि भारतीय संस्कृति के अन्य मान्य मूल्य हैं, जिनकी सिद्धि के लिए भारतीय जीवन और चिंतन सतत् सचेष्ट हैं। स्वामी दयानन्द, महात्मा ज्योतिबा फुले, विवेकानंद, राजा राम मोहन रॉय आदि महापुरुष इस संस्कृति के महत्त्वपूर्ण धरोहर बन गए हैं। भारतीय संस्कृति जीवन में दैन्य और पलायन का विरोध करती है। महाभारत के अर्जुन

की दो प्रतिज्ञाएं थीं, 'पार्थस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पालयनम', अर्थात् मैं दीनता नहीं दिखाऊँगा और संघर्ष से पलायन नहीं करूंगा। भारत अपनी इसी सांस्कृतिक शक्ति के कारण 'भारत' बना हुआ है। विदेशी आक्रांताओं के क्रूर-निर्मम प्रहार उसने इसी सांस्कृतिक संकल्प की ढाल पर झेले हैं। यह संस्कृति सिर झुका कर नहीं, सिर उठा कर चलना सिखाती है। मध्ययुगीन नायक महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह आदि इस सांस्कृतिक मूल्य के प्रतिनिधि प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति का एक महत्वूपर्ण गुण दानशीलता भी है। दधीचि ने अपना अस्थि शस्त्र बनाने के लिए दान कर दिया तो कर्ण ने अपना कवच-कुंडल दान कर खुद को मृत्यु लोक का भागी बना लिया। शिवि, भामाशाह, हरिश्चंद्र आदि दानवीरों ने भारतीय इतिहास को गौरवशाली अतीत दिया है। भारतीय संस्कृति रूढ़िवादिता को तोड़ने वाली है। जीव- जंतुओं के पोषण के लिए उन्हें कुछ देना हमारा स्वभाव है, किन्तु मनुष्यों की उपेक्षा करके उनका पालन करना अंधविश्वास है। मंदिरों के अनेक नियम रूढ़िवादी थे, शादी-ब्याह के उपलक्ष्य में दान-दहेज जब वीभत्स रूप लेने लगे तब युगानुरूप और बुद्धिसम्मत से उनका भी निराकरण किया गया। बलि प्रथा का अंत किया गया। औरतों की शिक्षा से जुड़े अधिकार को आवश्यक बताकर उनको अनिवार्य रूप से लागू किया गया। हमारे साहित्य को भी स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्यों का साधक-संवाहक बना कर रूढ़िवादिता को तोड़ने की कोशिश की गई। आध्यात्मिक आस्तिकता भारतीय संस्कृति का मेरुदंड है। भारतीय दर्शन ईश्वर की सत्ता की अनुभूति कराता है। ईश्वर की सर्वत्र व्याप्ति और जीव-मात्र में उसकी उपस्थिति का ज्ञान भारतीय संस्कृति की अनन्यतम उपलब्धि है। जीवात्मा और परमात्मा की अभिन्नता अद्वैतवादी दर्शन की उपज है। यही वह बिन्दु है जहाँ मानव स्वयं को सबसे जुड़ा हुआ अनुभव करता है और सबके प्रति मैत्री और करुणा का भाव धारण करता है। श्रीमद्भगवद गीता का संदेश भी तो यही है, 'अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्र: करुण एव च'। हमारे गुण, हमारी विशेषताएँ ही कभी - कभार हमारी संस्कृति के विशाल आयाम में विकार ले आतीं हैं। ज़रूरत से ज्यादा उदारता को विश्व के कई देशों ने हमारी कमजोरी समझ लिया। आतंकवादी करतूतें, घुसपैठ आदि इसी उदारता के परिणाम हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की अवहेलना का दूसरा महत्वपूर्ण कारण सदियों की गुलामी के कारण हीनता की भावना का सशक्त प्रादुर्भाव है। पश्चिमी संस्कृति अपना कर अपनी नस्ल को काटने वाले लोग दिशाहीन हैं। परिवर्तनशील समय में शनैः-शनैः परिवर्तन होना अवश्यंभावी है परंतु अपनी संस्कृति का ह्रास न हो यह भी देखना होगा। हमारी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसमें आज भी निरंतरता बनी हुई है जबकि विश्व की अनेक संस्कृतियों में इतनी मिलावटें हुई हैं कि वे अपना वास्तविक रूप खो चुकी हैं। उनमें आमूल परिवर्तन दिख जाता है। भारत में नदियों, पीपल, वट, सूर्य और प्राकृतिक देवी- देवताओं की पूजा सृष्टि के आरंभ से आज तक चली आ रही है। वेदों और वैदिक धर्म में आस्था आज भी उतनी ही है जितनी हजारों साल पूर्व थी। हमारे आधारभूत तत्वों, जीवन मूल्यों और वचन पद्धति में एक ऐसी निरंतरता चली आ रही है कि आज भी करोड़ों भारतीय स्वयं को उन मूल्यों और चिंतन प्रणाली से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं और इनसे प्रेरणा प्राप्त कर के अपना जीवन सुखमय बनाते हैं। भारतीय संस्कृति में प्राचीनता के साथ नवीनता का संगम है। अमरता और जगद्गुरू होना यहाँ की उपलब्धि है। यह संस्कृति शिष्टाचार, तहज़ीब और सभ्य संवादों के लिए इतनी लोकप्रिय है कि देश के बाहर के लोग भी यहाँ आकार अपनापन महसूस करते हैं। यही भावना 'अतिथि देवो भव' की मान्यता को बल प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति की मूल विचारधाराएँ एक-दूसरे से ऐसे जुड़ी हुई हैं जिनको कोई भी शक्ति एक-दूसरे से अलग नहीं कर सकती है। देखिये, अतिथि के प्रति देव भाव रखना ही 'अहिंसा परमो धरम' की बुनियाद भी रखता है। सत्य और अहिंसा का व्रत पालन इतना आसान नहीं है। बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय मसलों को कलम की धार से सुलझाने वाला यह अनोखा देश अपनी आंतरिक सुरक्षा में कोई कोताही नहीं बरतता है बल्कि जब आन-बान-शान की बात आती है, तब हमारे वीर सिपाही शमशीर उठा कर या तो दुश्मनों का सिर काट देते हैं या खुद अपना सिर कटा देते हैं। संस्कृति, इतिहास और प्रकृति इन तीनों संपदाओं के समूह का नाम राष्ट्र है। पूर्वजों द्वारा परिभाषित और निर्मित जीवन विधि ही संस्कृति है जिसमें हर दिन कुछ नया जुड़ता जाता है जो इसके स्वरूप को विस्तार देता है और भावी पीढ़ी के लिए सुगम और सरल राह का निर्माण करता है।

*डी.-15, सेक्टर-9, कोयलानगर,
धनबाद - 826005, झारखण्ड

अनुभव साझा करने हेतु कार्यशाला : प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का एक प्रभावी साधन

**जगदज्योति बिंकदाकट्टी* विशाल मित्तल, के.जेना,
जे.पी. पाण्डेय और के. सत्यनारायण**

परिचय : वर्ष 2014-2019 के दौरान झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (एमकेएसपी) के तहत बड़े पैमाने पर रेशम उत्पादन आधारित आजीविका को बढ़ावा देने के लिए बहु-राज्य परियोजना लागू की गई थी जिसके तहत तसर मूल्य श्रृंखला में विभिन्न उद्यमिता मॉडल स्थापित किए गए और केंद्रीय रेशम बोर्ड / राज्य सरकार के प्रयासों से निजी क्षेत्र में तसर बीज वृद्धि, सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों (सीआरपी) द्वारा विस्तार और समर्थन सेवाएं, उत्पादक समूहों (तसर विकास समितियों) के माध्यम से कार्यान्वयन और निर्माता संस्थाओं का प्रदर्शन किया गया। इस पृष्ठभूमि के साथ एमकेएसपी के तहत तसर रेशम उत्पादन आधारित आजीविकाओं पर अनुभव साझा करने वाली कार्यशाला को सर्वश्रेष्ठ मॉडल, प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को दोहराने के लिए शुरू किया गया एवं तसर किसानों और तसर संवर्धन में शामिल विभिन्न हितधारकों के लाभ के लिए अनुभव साझा किया गया। इस दिशा में एमकेएसपी के तहत 18 नवंबर, 2021 को बी देवघर, झारखंड में एक अनुभव साझाकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विशेषज्ञ की राय : डॉ. के. सत्यनारायण, तत्कालीन निदेशक, कें.त.अ.एवं प्र.सं.,राँची ने भी अपना अनुभव साझा किया और बताया कि एमकेएसपी 2014 के दौरान शुरू हुआ था एवं शुरुआत में किसी ने भी इस गतिविधि के लिए दिलचस्पी नहीं दिखाई थी और परियोजना क्षेत्र में श्रम प्रवासन आय का मुख्य स्रोत था, जो एक बड़ी चुनौती थी। इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए तमाम मुश्किलों के बावजूद पिछले दो दशकों में तसर रेशम उत्पादन का परिदृश्य काफी प्रभावशाली था और काफी प्रगति और सुधार हासिल हुआ। एमकेएसपी परियोजना ने इस तरह की प्रगति हासिल करने और तसर रेशम उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी और प्रदर्शन में क्रांतिकारी सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एमकेएसपी ग्रामीण और अगम्य क्षेत्रों में क्षमता निर्माण करने में सक्षम है और तसर रेशमकीट बीज उत्पादन धीरे-धीरे आत्मनिर्भर हो रहा है। अब पोस्ट कोकून सेक्टर को मजबूत करने के लिए इसी तरह के कदम उठाने की जरूरत है। इसके अलावा, तसर क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं और उन्नत अनुसंधान एवं विकास उत्पादन अत्यधिक आवश्यक है और विकसित तकनीक को वन्य रेशम उद्योग की बेहतरी के लिए क्षेत्र में उचित रूप से प्रसारित किया जाना चाहिए। श्री दिव्यांशु झा, भा.प्र.से., रेशम निदेशालय, झारखंड ने परियोजना क्षेत्रों में दौरे के अपने अनुभव साझा किए और बताया कि तसर संस्कृति के सतत् विकास के लिए एमकेएसपी सबसे अच्छे मॉडल में से एक है, जो बहुत सारे प्रयोग के बाद विकसित हुआ है और इसे देश में दोहराया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि समुदाय और गैर-सरकारी संगठन सरकार की तुलना में योजनाओं को बेहतर ढंग से लागू कर सकते हैं। योजना को वापस लेने के बाद एमकेएसपी सदस्यों/लाभार्थियों का आत्म-विश्वास दूसरों के लिए आँखें खोलने वाला है। तसर पालन से सम्बंधित सभी गतिविधियां जैसे रोमुच तैयार करना, पालना और रीलिंग कार्य आदि समुदायों द्वारा किया जाता है और विशेष समूह की आत्मनिर्भरता को दर्शाता है। कुछ जगहों पर ग्रामीण तसर खाद्य पौधों के वनों की कटाई की अनुमति नहीं दे रहे थे, जो कार्बन पृथक्करण के साथ-साथ उनके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। श्री पी. राजेंद्र नायडू, भ.व.से., डीएफओ, गोड्डा ने अपना अनुभव साझा किया कि तसर उत्पादन के लिए

वन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, हालांकि वनों की कटाई के कारण उत्पादकता प्रभावित हो रही है। तसर उद्योग की बेहतरी के लिए अधिक-से-अधिक तसर वृक्षारोपण की आवश्यकता है। इसके अलावा उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि वन अधिनियम के दिशा-निर्देश के अनुसार कई प्रजातियां विकसित होनी चाहिए और सभी हितधारकों को एक साथ आना चाहिए और लाभार्थियों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कृषि-वन योजना/मॉडल विकसित करना चाहिए। श्री एस. आचार्य, इंटीग्रेटर, प्रदान ने एमकेएसपी परियोजनाओं के कार्यान्वयन पर अतीत की यादों को साझा किया। शुरुआती दिनों की महिलाओं को तसर पालन की अनुमति नहीं थी लेकिन एमकेएसपी योजना के कार्यान्वयन के कारण परिदृश्य पूरी तरह से उलट गया है और तसर संस्कृति अब फलफूल रही है। उन्होंने समुदायों के विस्तार के बारे में भी व्यक्त किया कि तसर विकास समिति (टीवीएस) आदि तसर उद्योग के विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं। मोहम्मद शमशाद आलम, इंटीग्रेटर, प्रदान ने आवश्यकताओं, संगठनात्मक ढांचे, भूमिका, नियामक प्रावधानों, व्यावसायिक आयामों और निर्माता संस्थानों के प्रभाव जैसे विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि उत्पादक संस्थानों के माध्यम से कार्यकर्ता का उद्यमी में परिवर्तन संभव है। तसर विकास फाउंडेशन के समन्वयक श्री राजेंद्र खंडई ने अपने विचार साझा किए और तसर बीज उत्पादन की विभिन्न चुनौतियाँ, एमकेएसपी के तहत किए गए हस्तक्षेप, तसर बीज मूल्य श्रृंखला आदि के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये और बताया कि एमकेएसपी हस्तक्षेप के माध्यम से, आठ बुनियादी बीज उत्पादन इकाइयां (बीएसपीयू) विभिन्न राज्यों और अब समुदायों द्वारा संचालित 2016-2021 के दौरान समुदायों द्वारा कुल 14.42 लाख रो.मु.च. का उत्पादन किया गया है। श्री. आशीष चक्रवर्ती, इंटीग्रेटर, प्रदान ने भी मार्केटिंग और मूल्य श्रृंखला के विभिन्न पहलुओं पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कोकून, रोमुच, यार्न और फैब्रिक के बिजनेस मॉडल की जानकारी दी। एमकेएसपी परियोजना के तहत तसर रेशम मूल्य श्रृंखला को संशोधित किया गया था। बीएसपीयू, ग्राम आधारित समुदाय और बीज उत्पादन इकाइयां स्थापित की गईं। इससे परियोजना में 32.91 लाख कॉमर्शियल रोमुच और 7.22 लाख न्यूक्लियस और मूल बीज रोमुच का उत्पादन हुआ। यह कोकून और बीज उत्पादन में 10% लाभ मार्जिन और यार्न और कपड़े उत्पादन में 5% लाभ मार्जिन के साथ संस्थानों का समर्थन करने के लिए एक आर्थिक रूप से व्यवहार्य व्यवसाय मॉडल है। एमकेएसपी के हस्तक्षेप ने अतिरिक्त मूल्य में उत्पादकों की हिस्सेदारी को 25% से बढ़ाकर 55% कर दिया। कोकून क्षेत्र और विपणन के लिए ऐसी परियोजनाओं के माध्यम से अधिक निवेश की आवश्यकता होती है।

उद्यमी समूहों की राय : इसके अलावा, कई उद्यमी समूहों ने अपने अनुभव साझा किए। शुरुआत में श्रीमती कविता सिंह, सीईओ, जंगल महल ट्रस्ट, श्यामनगर, झारग्राम, पश्चिम बंगाल ने ट्रस्ट की प्रगति को साझा किया। अपने संबोधन में उन्होंने सूचित किया कि वर्तमान में 3000 महिला सदस्य विश्वास के साथ काम कर रही हैं और उन्होंने रोमुच के उत्पादन के लिए लगभग 30 बीज उत्पादन इकाइयां स्थापित की हैं। इनके अलावा, ट्रस्ट किसानों को प्रशिक्षण भी प्रदान करता है और ट्रस्ट का वार्षिक लेन-देन लगभग 1 करोड़ है। उन्होंने तसर संस्कृतियों के माध्यम से महिला श्रमिकों की आजीविका में बदलाव पर भी प्रसन्नता व्यक्त की। श्रीमती बसंत महतो, अध्यक्ष, तसर विकास समिति (टीवीएस), बांकुरा, पश्चिम बंगाल ने अपने अनुभव साझा किए और बताया कि शुरू में उस गाँव में केवल तीन सदस्यों और बाद में 70 सदस्यों के साथ समिति का गठन किया गया था और कुल मिलाकर उसने बताया कि वर्तमान में 3000 सदस्य टीवीएस के साथ पंजीकृत हैं। तसर पालन (कीट पालन और बीजागार गतिविधि) एक मौसमी गतिविधि है और अन्य समय के दौरान लाभार्थी रीलिंग और कताई कार्यों से जुड़े रहते हैं। श्रीमती रीता देवी (स्पिनर) यार्न प्रोड्यूसर ग्रुप, सरैयाहाट-दुमका, झारखंड ने अपने अनुभव में बताया कि 40 महिला कर्मचारी समूह से जुड़ी थीं और प्रत्येक सदस्य ने रीलिंग और कताई गतिविधियों के माध्यम से लगभग 4000-5000 रुपये/माह कमाए। श्रीमती सोनी मरांडी, प्रबंधक, बीएसपीयू, बांका-दुमका ने सूक्ष्मदर्शी परीक्षण, अंडे की धुलाई आदि पर अपने अनुभव को साझा किया। श्रीमती दुगनी पूर्ति, श्री शिवशंकर टीवीएस, बांसपाल, क्योंझर-ओडिशा ने भी बीज उत्पादन गतिविधियों के माध्यम से अपनी आजीविका में बदलाव पर अपने अनुभव साझा किये और कहा कि पहले पारंपरिक तरीकों से तसर संस्कृति का अभ्यास किया जा रहा था और कम आय मिल रही थी हालांकि नई वैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों के अनुकूलन के बाद आय स्तर में वृद्धि हुई है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि पहले के दिनों में महिलाएं केवल घर के काम और बच्चे

को खिलाने में शामिल रहती थीं। अब परिदृश्य पूरी तरह बदल गया है। इस वर्ष समिति महिला श्रमिकों के माध्यम से 70000 व्यावसायिक रोमुच का उत्पादन किया है। श्रीमती अनीता टुडू, एनएसआर, बांका-बिहार ने भी नाभिकीय बीजों के उत्पादन पर अपने अनुभव साझा किए।

निष्कर्ष : अनुभव साझाकरण कार्यशाला के माध्यम से सभी हितधारकों को एक सामान्य मंच पर लाया गया है, जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के विशेषज्ञ निदेशक, रेशम उत्पादन विभाग, प्रभागीय वन अधिकारी, गैर-सरकारी संगठन विशेषज्ञ जैसे प्रदान, तसर डेवलपमेंट फाउंडेशन और सफल उद्यमी समूह। इन सभी हितधारकों और विशेषज्ञों ने तसर उद्योग की समस्याओं और कें.त.अ.प्र.सं, राँची द्वारा विकसित विभिन्न उपलब्ध और लोकप्रिय प्रौद्योगिकियों के बारे में चर्चा की। इस प्रयास से तसर उद्योग में पिछले 3 से 4 वर्षों से उठे मुद्दों का निश्चित रूप से समाधान होगा। इसलिए यह साबित हो गया है कि तसर उद्योगों के प्रचार और विकास के लिए अनुभव साझाकरण कार्यशाला, प्रौद्योगिकी उपकरण के प्रभावी हस्तांतरण में से एक है।

*वैज्ञानिक-सी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची, झारखण्ड

अनुभव साझाकरण कार्यशाला की फोटो गैलरी

दीमकों का पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन

श्रेयांश* , हनमंत गडाद और के. सत्यनारायण

प्रस्तावना : *एन्थिरिया माइलिट्टा* तसर रेशम कोकून का उत्पादन करने वाले जंगली रेशम कीड़ों में से एक है। वे मुख्य रूप से *टर्मिनलिया अर्जुना* (अर्जुन), *टर्मिनलिया टोमेंटोसा* (आसन) और *शोरिया रोबस्टा* (साल) जैसी पेड़ प्रजातियों पर पाले जाते हैं, जिन्हें तसर रेशम के कीड़ों के प्राथमिक खाद्य पौधे के रूप में भी जाना जाता है। टर्मिनेलिया प्रजातियों का आम तौर पर ब्लॉक प्लांटेशन में उपयोग किया जाता है जबकि शोरिया के पौधे जंगली और प्राकृतिक रूप से उगाए जाते हैं। *एनोजिसस लैटिफोला, टर्मिनेलिया मायरियोकार्पा, लेजरस्ट्रोइमिया इंडिका, लैगेरस्ट्रोइमिया परविफ्लोरा, लेजरस्ट्रोइमिया स्पेसिओसा* तसर रेशमकीट के द्वितीयक खाद्य पादप हैं। प्राथमिक तसर खाद्य पौधों पर कई बहुभक्षी कीटों द्वारा हमला किया जाता है और विभिन्न विकास और विकासात्मक चरणों के दौरान पौधों के विभिन्न भागों को नुकसान पहुँचता है। इन कीटों से होने वाली क्षति की मात्रा क्षति की प्रकृति के आधार पर भिन्न होती है। विभिन्न कीटों की ये गतिविधियाँ पत्तियों की गुणवत्ता और मात्रा के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। पौधों की क्षति को रोकने के लिए उनकी आबादी को आर्थिक सीमा स्तर से नीचे प्रबंधित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसके लिए विभिन्न कीटों, उनके जीवन चक्र, रहन-सहन के व्यवहार और उनके द्वारा होने वाले नुकसान की प्रकृति का पहले से ज्ञान होना आवश्यक है।

संक्रमण के लक्षण एवं क्षति की प्रकृति : तसर खाद्य पौधों के पहले रिपोर्ट किए गए कीटों के अलावा हाल के वर्षों में प्रमुख तसर उगाने वाले क्षेत्रों में दीमक के प्रकोप में वृद्धि हुई है। दीमक का प्रकोप कई वन पौधों की प्रजातियों के लिए हानिकारक है जिसमें तसर खाद्य पौधे भी शामिल हैं। दीमक द्वारा आमतौर पर क्षतिग्रस्त होने वाले रेशम उत्पादन के पौधों में शहतूत, अर्जुन, आसन, साल, ओक, सोम और सोआलु के पौधे हैं। आम तौर पर इन पौधों को नुकसान पहुँचाने वाली दीमक की प्रजातियाँ हैं *ओडोन्टोटर्म्स परविडेंस, ओडोन्टोटर्म्स ओबेसस, ओडोन्टोटर्म्स प्रोफ़ॉर्मोसैनस, माइक्रोटर्म्स ओबेसी* (होल्स), *कोप्टोटर्मेशिमी* (वासम), *ओडोन्टोटर्मेस लैटिगुलोइड्स, ओडोन्टोटर्मेस गणपति, ओडोन्टोटर्मेस रेडेमैनी* दीमक मिट्टी के ठीक नीचे विशेष रूप से युवा भोज्य पौधों की टैप रूट को संक्रमित करता है। इसके परिणामस्वरूप केंद्रीय जड़ प्रणाली को नुकसान होता है और कैविटी का निर्माण होता है, जो मिट्टी से भर जाती हैं जिसके कारण पौधों का मुरझाना एवं सूखना देखा जा सकता है। उनका संक्रमण भोज्य पौधों की उत्तरजीविता और शक्ति को कम कर देता है जो बाद में उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट में कोकून उत्पादकता को प्रभावित करता है। दीमकों द्वारा कीटपालन क्षेत्रों में विभिन्न रेशम उत्पादन अवसंरचनाओं जैसे फर्नीचर और शेड को नुकसान पहुँचाने की सूचना मिली है। इससे सीधे तौर पर आर्थिक नुकसान होता है और रेशमकीट की ब्रश करने की क्षमता और कोकून की उपज कम होने के कारण सीमांत किसानों की आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसलिए, यहाँ हम कुछ पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन पर चर्चा करने जा रहे हैं जो रेशम कीट के लिए सुरक्षित हैं।

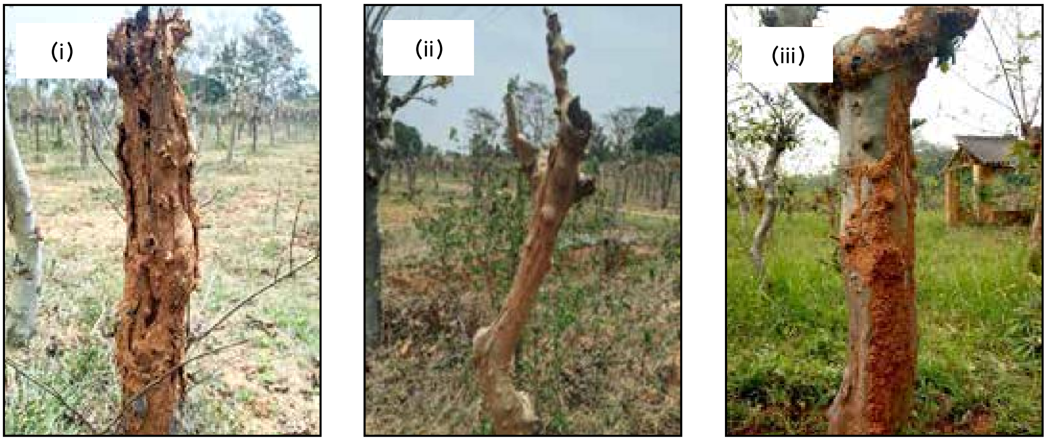

चित्र- दीमक का शुरुआती संक्रमण (i), संक्रमण के कारण सूख चुके अर्जुन के पेड़ (ii, iii)

चित्र- दीमकों का समूह

प्रबंधन

यांत्रिक नियंत्रण –

- प्रक्षेत्र में मौजूद दीमक के टीले की खुदाई करना ताकि उसमें उपस्थित रानी को मारा जा सके क्योंकि दीमकों की कॉलोनी में रानी एकमात्र प्रजनन करने एवं अंडे देने में सक्षम होती है।
- प्रक्षेत्रों/खेतों में मौजूद दीमकों को मारने के लिए साल में दो बार (मार्च-अप्रैल एवं नवम्बर-दिसम्बर) गहरी जुताई करनी चाहिए।
- संक्रमित पेड़ों के तनों को लोहे के ब्रश से रगड़कर साफ करना चाहिए जिससे दीमक कॉलोनी को नष्ट किया जा सके।

कल्चरल नियंत्रण –

- सड़े-गले पौधे अथवा मरे हुए पौधों को प्रक्षेत्र से हटा देना चाहिए अन्यथा ये दीमकों को आकर्षित करेंगे।
- प्रक्षेत्र में जल-जमाव होने से रोकना क्योंकि यह दीमकों के संक्रमण को बढ़ता है।
- अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर खाद का प्रयोग अन्यथा इसमें मौजूद पानी के कण दीमक संक्रमण के कारण बढ़ाते है।

वानस्पतिक नियंत्रण-

- कीटपालन के 20-30 दिन पहले 200-400 ग्राम नीम खली प्रति पेड़ प्रयोग करें।
- 4 फुट पर काटे एवं अच्छी तरह से दीमक कॉलोनी को हटाने के बाद हर्बल आधारित दीमक विकर्षक RAPTER का प्रयोग 1:1 के अनुपात में पानी के साथ मिला कर गाढ़ा

घोल / पेस्ट बनने के बाद पेंट ब्रश की सहायता से तनों के ऊपर प्रयोग करना।

- संक्रमित पौधों के ऊपर लेमन ग्रास, विटेक्सनेगुंडो (सिन्दुवार) एवं यूकेलिप्टस के वानस्पतिक अर्क का छिड़काव करना।
- जले हुए इंजन ऑइल को तसर रेशमकीट के ब्रशिंग से 1 महीने पहले 4 फुट तक तसर खाद्य पौधों पर अच्छी तरह लगाए एवं हर 6 महीने में दोहराएं।

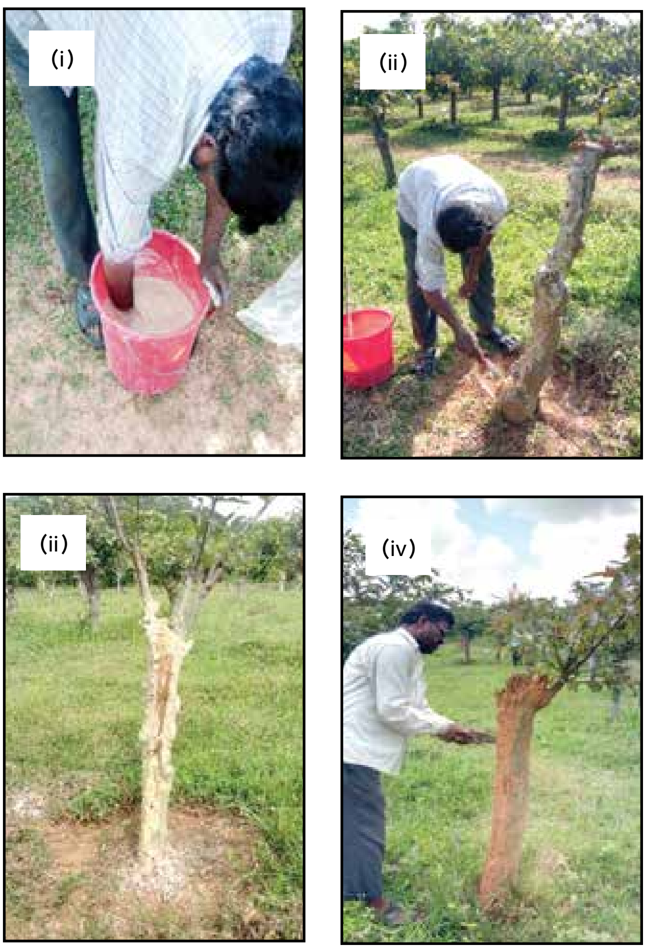

चित्र-लोहे के ब्रश से रगड़कर दीमक कॉलोनी को हटाना (i), 1:1 के अनुपात में REPTER : पानी मिलाकर पेस्ट बनाना (ii), पेंट ब्रश की सहायता से तनों पर हर्बल आधारित दीमक विकर्षक का REPTER उपयोग (iii), तनों पर अच्छी तरह REPTER लगाने के बाद (iv).

चित्र - जले हुए इंजन ऑयल का 4 फुट तक पेड़ के तनों पर इस्तेमाल

निष्कर्ष : पिछले कुछ सालों से दीमकों का प्रकोप तसर खाद्य पौधों अथवा अन्य पौधों के साथ-साथ लकड़ी के बने फर्नीचर को भी नुकसान पहुँचा रहा है इसलिए दीमकों के प्रबंधन की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि रसायन युक्त कीटनाशक न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुँचते हैं अपितु कीटनाशक में मौजूद रसायन के कारण रेशमकीट को भी हानि पहुँचती है इसलिए दीमकों के प्रबंधन के लिए रसायन रहित प्रभावी उपचार अपनाया जाना आवश्यक है।

*परियोजना सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची, झारखण्ड

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है

... अमरनाथ झा

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय हृदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है।

... महात्मा गांधी

हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है

... माखनलाल चतुर्वेदी

तकनीकी आलेख

तसर परपोषी पौधे के उभरते हुए कीट पीड़क बैगवर्म की विशिष्टिताएँ

अम्पी भगत* हनमंत गडाद, विशाल मित्तल,
जे. सिंह और के. सत्यनारायण

परिचय : तसर रेशमकीट एक बाहरी अवस्था में पाले जाने वाला कीट है जो अपने विकास और पोषाहार के लिए अर्जुन और आसन वृक्षों पर निर्भर है । तसर रेशमकीट के परपोषी पौधे समय और वातावरण के बदलाव के कारण कई पीड़को के संपर्क में आते है । वैज्ञानिकों द्वारा कई पीड़कों कि जानकारी दर्ज कि गई है जिसका लाभ हम भोज्य पौधे के संरक्षण के लिए उठा सकते हैं । ऐसा देखा गया है कि जितना समय हम एक पीड़क की जानकारी इकट्ठा करने में लगाते हैं उतने समय के अंतराल में कोई अन्य नया पीड़क उसमें अपना जीवनचक्र पूरा कर चुका होता । ऐसा ही एक नया पीड़क कीट बैगवर्म वर्ष (2021- 2022) में तसर भोज्य पौधे अर्जुन और आसन को नुकसान पहुँचाते देखने को मिला जो कि साइकिडे परिवार से सम्बंधित लेपिडोप्टेरेन हैं जो असामान्य यौन द्विरूपता को साझा करते हैं जिसमें उड़ान रहित मादाओं की प्रजातियों का एक बड़ा हिस्सा होता है । इनमें लगभग 1,350 प्रजातियां (सोब्जिक, थॉमस 2011), (वैन नीकेरकेन व अन्य, 2011) और 241 जेंरा है । वे आमतौर पर बैगवर्म के नाम से जाने जाते हैं क्योंकि वे अपने लार्वा विकास को एक स्व-परिवेश के भीतर पूरा करते हैं, जो एक पेड़ की शाखाओं या ऊँचाई पर एक टहनी पर लटका रहता है । वे दुनिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय भागों में पाए जाते हैं । केवल जीनस क्लैनिया को छोड़कर जोकीइंडो-ऑस्ट्रेलियाई क्षेत्र में पाया जाता है । बैगवर्म वृक्ष प्रमियों का बहुत बड़ा शत्रु है जो मानव आँखों के लिए अगोचर है तथा चुपके से पेड़ो से पर्ण समूह को छीन लेता है । बैगवर्म ज्यादातर आर्बोरविटे, बाल्ड सरू, देवदार, जुनिपर, पाइन और स्प्रूस जैसे कोनिफर्स से जुड़े होते हैं । हालांकि बैगवर्म काले टिड्डी, एल्म हैकबेरी, हनी टिड्डे, लिंडन, मेपल, ओक, गूलर और विलो सहित पर्णपाती चौड़ी पत्ती वाले पेड़ों और झाड़ियों को भी खाते हैं और हाल के वर्षों में बैगवर्म को ए.माइलिट्टा के खाद्य पौधों *टर्मेनेलिया अर्जुना* और *टोमेंटोसा* के पत्तों को खाते हुए देखा गया है । बैगवर्म का जीवनचक्र एक प्रजाति से दूसरी प्रजातियों तथा एक स्थान से दूसरे स्थान तक भिन्न होता है, हालांकि कुछ बैगवर्म जैसे लीफ केस, कोन केस, स्टिक केस एकल ब्रूड कीट होते हैं यानी इसे जीवनचक्र पूरा करने में एक वर्ष का समय लगता है । यह अपना जीवनचक्र वसंत ऋतु से शुरू करती हैं और अगले वर्ष के शुरुआती वसंत में अपना विकास पूरा कर मर जाती हैं । यह अप्रैल से सितम्बर के दौरान देखा गया है लेकिन चरम संक्रमण जून-जुलाई के दौरान रहता है क्योंकि जून-जुलाई तक इसका आकार बड़ा हो जाता जिसके कारण पत्तों को काफी नुकसान पहुँचाती हैं, जो की नग्न आखों से आसानी से दिख जाती हैं ।

चित्र - 1 वैगवर्म द्वारा पत्तो में नुकसान की प्रकृति

नुकसान की प्रकृति : बैगवर्म पत्ती को नुकसान पहुँचाने वाले डिफोलीएटर कीट हैं जो पत्तियों की सतह पर खरोंच कर केंद्र में अनियमित छेद करते हैं और मिडरिब को छोड़कर पत्तियों के मार्जिन पर अनियमित फीडिंग करते हैं।

बैग केस : बैगवर्म कीटों की दुनीया में अपने बैग के नाम से ही जाने जाते हैं। बैगवर्म के बैग दूर से क्रिसमस ट्री, आइसक्रीम कोन, घोंघे, डबल अपार्टमेंट के जैसा दिखते हैं। बैग के निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री विभिन्न बैगवर्म के बीच भिन्न होती है, जैसे पेड़/जड़ी बूटी/घास के पत्ते लाइकेन, टहनियाँ, डंठल, छाल के टुकड़े, लकड़ी के मलबे और रेत के कण इत्यादि। बैगवर्म मॉथ के निर्मित बैग अविश्वसनीय रूप से कठोर होते हैं जो कि सिल्क फाइबर की तरह होती है जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल होता है। बैगवर्म शाखाओं, तने या पत्तियों से जुड़े होते हैं लेकिन वे कभी भी एक ही स्थान पर नहीं रहते हैं। वहनीय बैग प्राकृतिक दुश्मनों के खिलाफ वहनीय कवच के रूप में एक प्रमुख भूमिका के रूप में कार्य करता है।

चित्र - 2 वैगवर्म की बिभिन्न प्रजातियाँ

बैगवर्म अपनी खुराक के लिए हमेशा चलायमान रहता है और अपने सुरक्षात्मक, जलरोधक घर को अपने साथ जहाँ भी जाते हैं ले जाते हैं। बैग में दो छोटे निकास हैं एक नीचे और एक शीर्ष पर। कैटरपिलर खाने के लिए ऊपर से बाहर आता है और नीचे से कचरे को बाहर निकाल देता है। निचला द्वार उभरते नर वयस्क के लिए बाहर निकलने का एक रास्ता भी है। जब कीड़े को किसी खतरे का आभास होता है तो यह बिना किसी हलचल से बैग के अंदर छिप जाता है। बैगवर्म कैटरपिलर बैग में ही केचुलीकरण, प्रजनन से लेकर कीट बनने का कार्य अपने द्वारा निर्मित बैग के अंदर ही पूरा करते हैं। बैगवर्म का यही व्यवहार इसे सभी लेपिडोप्टेरेन के बीच अद्वितीय बनाता है।

लार्वा : लार्वा के रंग पैटर्न और आकार में अंतर होता है। पत्तों से बना बैग क्रीम से लेकर हल्के भूरे रंग का पाया गया, जिसकी लंबाई ज्यादातर 2-2.5 थी, जबकि डंठल से बने केस में काले रंग जिसकी सिर के तरफ हल्का पीला रंग पाया गया जिसकी लंबाई 2-2.7 थी। परिपक्व लार्वा अपने बैग को रेशम की एक मजबूत पट्टी के साथ एक शाखा से जोड़ता है और बैग के भीतर अपनी स्थिति को उल्टा कर देता है, सिर नीचे की ओर उन्मुख कर लेता है।

चित्र - 3 वैगवर्म के लार्वा

प्यूपा : प्यूपा बैग के अंदर गहरे भूरे रंग का होता है। नर प्यूपा की तुलना में मादा का आकार बड़ा होता है। मादा प्यूपा मैं पंख नहीं दिखते, उभरने के समय यह केस के नीचे से थोड़ा बाहर आ जाता है।

चित्र - 4 नर और मादा प्यूपा

वयस्क : अध्ययन के दौरान दो प्रकार के नर वयस्क देखने को मिले जिसमें एक सफ़ेद और दूसरा बुकनी भूरा रंग। पतंगा का आकार में 1.5 सेंटीमीटर था, आगे के पंख क्षैतिज रूप से 1.5 सेंटीमीटर और लंबवत 0.6 सेंटीमीटर माप था। पीछे के पंख क्षैतिज रूप से 1 सेमी और लंबवत 0.6 सेमी के एंटीना द्विभाजित और 0.5 सेमी लंबाई के थे। जहां मादा पंखहीन होती है और मृत्यु तक बैग के अंदर रहती है। मादा कभी भी संभोग करने के लिए बैग नहीं छोड़ती प्रजनन के मौसम के दौरान मादा फेरोमोन द्वारा नर को अपने बैग की ओर आकर्षित करती हैं। अंडे बैग में पूरी सर्दियां और वसंत में रहते हैं। हर साल बैगवर्म की केवल एक पीढ़ी होती है।

चित्र - 5 नर वयस्क

चित्र - 6 मादा वयस्क

प्रबंधन : बैगवर्म को मारने का सबसे अच्छा तरीका बैगवर्म के अंडे प्रस्फुटित होने से पहले उसे हाथ से चुनकर नष्ट करना होता है। बैगवर्म के कई प्राकृतिक दुश्मन हैं जिसमे पक्षी और टैचिनिड है जिसे हमने अध्ययन के दौरान देखा जो बैगवर्म के लार्वा को परजीवी बना रहा था।

चित्र - 7 वैगवर्म में पाया जाने वाला लार्वा

एकीकृत तरीके से नियंत्रण उपाय प्रभावी और कुशल होंगे। इसलिए, नियमित निगरानी गतिविधियाँ आवश्यक हैं ताकि कीटों की उपस्थिति का जल्द-से-जल्द पता लगाया जा सके।

निष्कर्ष : बैगवर्म की अनेक प्राजातियां तसर परपोषी पोधे में देखने को मिलीं। हालांकि इन सभी बैगवॉर्म में से एक प्रजाति, जो कि पत्तियों से अपना बैग बनाता है, उसकी DNA मोलेकुलर आइडेंटिफिकेशन द्वारा पहचान की गई है, जो कि महेसेना एसपी का है। अन्य सभी बैगवर्म की तुलना में लीफकेस और स्टिककेस की घटनाएं तुलनात्मक रूप से अर्जुन और आसन के पेड़ों में अधिक थीं लेकिन क्षति का स्तर अपेक्षाकृत कम था। फिर भी, बैग वर्म संक्रमण के लिए नियंत्रण उपाय अभी भी आवश्यक हैं क्योंकि यह भविष्य में अन्य सदाबहार पेड़ों की तरह तसर परपोषी पौधों को गंभीर क्षति पहुंचा सकता है।

* परियोजना सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची, झारखण्ड

संस्थान को राजभाषा पुरस्कार

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी,रांची को वर्ष 2022-23 के दौरान पूर्वी क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार के लिए चनियत किया गया है। उल्लेखनीय है कि संस्थान को लगातार तीसरे वर्ष प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। संस्थान के निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी ने इस उपलब्धि के लिए संस्थान तथा अधीनस्थ केन्द्रों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई दी।

तकनीकी आलेख

ओक तसर रेशम बीजागार विधि

ए. एस. वर्मा*, जगदज्योति बिंकदाकट्टी,
शेख एजाज अहमद एवं एन.बी. चौधरी

सरांश : भारत के उत्तर-पश्चिम में *एन्थीरिया प्रॉयली* ओक तसर रेशम का मुख्य स्रोत है जिसे शीतोष्ण तसर रेशम के नाम से भी जाना जाता है। उत्तर-पश्चिम में ओक तसर कोकून का अत्पादन काफी कम है चूँकि ओक तसर कीटपालन दूसरे रेशम कीटपालन की तुलना में काफी कठिन है। ओक तसर कीट के खाद्य पौधे, जो प्राकृतिक रूप से उत्तराखण्ड के वन क्षेत्र में उपलब्ध हैं व इनकी ऊँचाई बहुत अधिक होती है, जिसके कारण कीटपालन हेतु पत्तियों का दोहन करना काफी जोखिम भरा होता है। निम्न, मध्य एवं उच्च ऊँचाई समुद्र तल से ऊँचाई के मानक एवं उस ऊँचाई की जलवायु के अनुसार कीटपालन किया जाता है। निम्न एवं मध्य पर लोकल बाँज (*क्वेरकस कोट्राईकाफोरा*), मणिपुरी बाँज (*क्वेरकस सेरेटा*) एवं उच्च ऊँचाई पर मोरू, तिलौज (*क्वेरकस हिमालियाना*), खरसू (*क्वेरकस सेमीकापीफोलिया*) की पत्तियों को कीटपालन हेतु उपयोग में लाया जाता है। उत्तराखण्ड एवं हिमाचाल प्रदेश मे माँग के अनुरूप बीज का उत्पादन नहीं हो पा रहा है, जिसके कारण दोनों ही राज्यों मे कीटपालन भरपूर मात्रा में नही हो रहा है। उत्तराखण्ड राज्य में बीज के उत्पादन को बढ़ाने एवं भरपूर मात्रा में कीटपालन कराये जाने के प्रयास जारी हैं ताकि राज्य में ओक तसर रेशम के उत्पादन को बढ़ाया जा सके एवं इससे जुड़े किसानों को अधिक-से-अधिक लाभ मिल सके।

कुंजी शब्द - बीज कोसे, तापमान, आर्द्रता, शलभ निर्गमन, स्व.डि.स. कोंपलें, ऊँचाई आदि।

क्रिया विधि : ओक तसर में प्यूपा लगभग 8-10 महीने तक सुसुप्तावस्था में चले जाते हैं। इसलिए कोसों को विशेष रूप से सावधानी के साथ संरक्षित किया जाता है ताकि संरक्षण के समय होने वाली किसी भी प्रकार की क्षति से बचा जा सके। संरक्षण की अबधि 8 से 10 माह तक लम्बी होने के कारण मादा शलभों में अण्डजनन क्षमता भी काफी कम, 50-60 अण्डे प्रति स्वस्थ डिम्ब समूह रह जाती है। ओक तसर में गुणवत्ता युक्त बीजोत्पादन (स्व.डि.स.) में काफी कठिनाइयाँ हैं। जब जिस ऊँचाई पर खाद्य पौधों पर कोपलें आने की सम्भावना होती है, उसके अनुसार समय से ब्रशिंग कार्य को ध्यान में रखते हुए लगभग एक माह पूर्व बीजागार सम्बन्धी क्रियाकलाप प्रारम्भ किये जाते हैं। क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल मे बीजोत्पादन के लिए अपनायी जा रही बीजागार विधि जिसमें बीजागार भवन में संरक्षित किये गये बीज कोसों में से चयनित बीज कोसों को शलभ निर्गमन के पूर्व बीज की आवश्यकता के अनुसार अलग से तैयार किये गये कमरे में बाँस के फ्रेम पर मालाओं को लटकाकर धीरे-धीरे हाईग्रो-फोटो-थर्मिक उपचार दिया जाता है जिससे 21 से 24 दिन के अन्दर शलभ निर्गमन शुरू हो जाता है और बीज बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। तैयार किये गये बीज को समय से निम्न, मध्य एवं उच्च ऊँचाई पर ब्रशिंग हेतु आपूर्ति किया जाता है। चूँकि अलग-अलग समय में कीटपालन के लिए बीजागार सम्बन्धी क्रियाकलाप भी अलग ही किये जाते हैं। जैसे - पूर्व वसंत फसल कीटपालन के लिए जनवरी-फरवरी, वसंत फसल के लिए फरवरी-मार्च, उच्च ऊँचाई फसल के लिए अप्रैल-मई एवं ऑटम फसल कीटपालन के लिए जुलाई-अगस्त। बीज तैयार करने के लिए अपनाई जाने वाली विधि में बीज कोसों का चुनाव, बीज कोसों का संरक्षण, बीजागार प्रारम्भ होने के पूर्व एवं बीजागार के समय आवश्यक सामग्री एवं बीजागार प्रबंधन शामिल हैं। जैसे-

1. बीजागार भवन कीटपालन स्थल से दूर होना चाहिए एवं बीजागार से सम्बंधित आवश्यक सभी उपकरण जैसे- सूक्ष्मदर्शी, गैस हीटर, गैस सिलिन्डर एवं बिजली तथा प्रचुर प्रकाश होना चाहिए।
2. बीजागार भवन में अच्छी तरह हवा का आवागमन हो एवं चूहों का प्रवेश निषिद्ध हो।

3. बीजागार भवन के पास पानी की व्यवस्था रहनी चाहिए।

4. बीजागार के अवशेष के निपटान के लिए एक सोकपिट का होना आवश्यक है।

बीजागार का महत्व : उष्ण कटिबन्धीय तसर की तरह ओक तसर में प्राकृतिक बीजागार सम्भव नहीं है। ओक तसर कीट के खाद्य पौधें जो प्राकृतिक रूप से उत्तराखण्ड के वन क्षेत्र मे उपलब्ध हैं, उन पर मौसम के अनुकूल होने पर ही कोंपलों का आना शुरू होता है, इन सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए बीज उत्पादन हेतु बीज कोसों को बीजागार में उपचारित करने पर ही स्व.डि.स. का उत्पादन सम्भव होता है। बीजोत्पादन के लिए कीटपालन के उपरान्त उत्पादित कोसों में से अच्छे बीज कोसों का चयन, कोसों की माला बनाना, बीजागार में कोसों का विधिवत् संरक्षण, अलग कमरे में बीजोत्पादन के समय बीज कोसों का उपचार, बीजोत्पादन क्रिया-कलाप आदि शामिल हैं। अलग-अलग समय में कीटपालन के पूर्व बीजागार सम्बन्धी क्रिया-कलाप किये जाते हैं। जैसा कि पूर्व वसंत फसल कीटपालन के लिए जनवरी-फरवरी, वसंत फसल के लिए फरवरी-मार्च, उच्च ऊँचाई फसल के लिए अप्रैल-मई एवं ऑटम फसल कीटपालन के लिए जुलाई-अगस्त माह में बीजागार किया जाता है। ऐसे में ओक तसर में बीजागार कार्य काफी महत्वपूर्ण है। बीजागार का समय तालिका-01 में दर्शाया गया है।

बीजागार की विधियाँ :

1. बीज कोसों का चयन :

कोसों को बीजागार में संरक्षण के पूर्व अच्छी तरह से जाँच-परख कर चयनित करना चाहिए। जीवित, कठोर, सुगठित बीज कोसों का ही चयन कर बीजागार में संरक्षण के लिए भेजना चाहिए। बीज कोसों के उचित चयन से कोसों के संरक्षण एवं बीजागार से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

बीज कोसों का चयन

2. बीज कोसों का संरक्षण :

चयनित बीज कोसों की धागे के साथ 100-100 बीज कोसों की माला बनाई जाती है। मालाओं को पूर्व विसंक्रमित एवं अर्द्ध-अंधकारयुक्त बीजागार भवन जिसमें हवा के आवागमन की उचित व्यवस्था है, में बाँस से बने फ्रेम पर माला-से-माला की दूरी 4 इंच, कतार-से-कतार की दूरी 12 इंच एवं जमीन से माला के छोर की ऊँचाई कम-से-कम 1.5 फीट पर लटकाकर संरक्षण किया जाता है। बीजागार भवन में अगर कोई असामयिक शलभ का निर्गमन होता है तो उसे तुरन्त हटाया जाना चाहिए। बीजागार भवन को नियमित रूप से उपयुक्त विसंक्रमक अथवा फिनायल, डिटॉल से पोछा लगाकर साफ-सुथरा रखना चाहिए ताकि कमरे के अन्दर स्वस्थकर स्थिति हमेशा बनी रहे और किसी प्रकार की बीमारी होने का अन्देशा न रहे।

बीजागार भवन में बीज कोसों की लटकाई गई मालाएँ **हाईग्रो-फोटो-थर्मिक उपचार**

3. बीजागार के समय व्यवस्था :

बीजागार क्रिया-कलापों के समय निम्न व्यवस्थाएँ आवश्यक हैं :-

- बीज कोसों के उपचार हेतु एक कमरा तथा मादा शलभों के अण्डजनन हेतु एक छोटा कमरा।
- बीजागार कार्य से सम्बंधित आवश्यक सभी सामान एवं उपकरण जैसे-सूक्ष्मदर्शी, गैस हीटर, गैस सिलिन्डर, सिगडी, लकड़ी का कोयला एवं बिजली तथा प्रचुर मात्रा में प्रकाश।
- बीजागार में अच्छी तरह हवा का आवागमन हो, चूहों का प्रवेश निषिद्ध हो, भवन के पास पानी की व्यवस्था तथा अवशेष के निपटान के लिए एक सोकपिट का होना भी आवश्यक है।

तालिका-01

क्र.सं	बीजागार का समय	फसल की प्रकृति	समुद्र तल से ऊँचाई	ब्रशिंग की तिथि	ओक तसर खाद्य पौधे जिनपर कोंपलें अलग-अलग समय पर-आती हैं
1.	जनवरी - फरवरी	पूर्व वसंत फसल	निम्न ऊँचाई 500- मी. से 1100 मी.	25 फरवरी से 05 मार्च	*क्वेरकस ल्यूकोट्राइकोफोरा* (बॉज) एवं *क्वेरकस सेरेटा* (मणिपुरी बाँज)
2.	जनवरी-मार्च	वसंत फसल	मध्य ऊँचाई 1100- से 2100 मी.	05 से 15 मार्च	*क्वेरकस ल्यूकोट्राइकोफोरा* (बॉज) एवं *क्वेरकस सेरेटा* (मणिपुरी बाँज)
3.	अप्रैल-मई	उच्च ऊँचाई या ग्रीष्म फसल	उच्च ऊँचाई 2100 से 2700 मी. एवं 2400 से 3700 मी.	15 से 25 मई	*क्वेरकस हिमालियाना* (मोरू, तिलौज) सेमीकार्पिफोलिया (खरसू)
4.	जुलाई-अगस्त	शरद फसल	निम्न एवं मध्य ऊँचाई-500 मी. से 2100 मी.	25 से 31 अगस्त	*क्वेरकस सेरेटा* (मणिपुरी बाँज)

बीजागार क्रिया-कलाप :

बीजागार के समय बीज का उत्पादन एक काफी महत्वपूर्ण पहलू है जिसके लिए उच्च कौशल एवं उपयुक्त प्रबंधन की आवश्यकता होती है। ओक तसर में अलग-अलग समय पर कीटपालन हेतु रो.मु.च. तैयार करने के लिए बीजागार क्रिया-कलाप किये जाते हैं, पूर्व वसंत फसल हेतु जनवरी-फरवरी, वसंत फसल हेतु फरवरी-मार्च, उच्च ऊँचाई या ग्रीष्म फसल हेतु अप्रेल-मई तथा शरद फसल हेतु जुलाई-अगस्त।

1. **शलभ निर्गमन पूर्व के क्रिया-कलाप :** ओक तसर में कीटपालन हेतु रो.मु.च. को तैयार करने के लिए बीजागार में संरक्षित बीज कोसों की सुसुप्तावस्था को तोड़ने के लिए बीजागार भवन के अन्दर 75-85 प्रतिशत सापेक्ष आर्द्रता एवं 40 या 60 वाट के बल्व का उपयोग कर 16 घण्टे प्रकाश समय एवं 24-26 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान कृत्रिम रूप से देकर उपचार किया जाता है जिससे 21-24 दिन के अन्दर जीवित कोसों से शलभ निर्गमन प्रारम्भ हो जाता है।
2. **शलभ निर्गमन :** कृत्रिम रूप से उपचार दिये गये जीवित कोसों से 21 से 24 दिन के अन्दर शलभ निर्गमन प्रारम्भ हो जाता है। अधिकांशतः कोसों से नर एवं मादा शलभों का निर्गमन शाम 7.00 बजे से लेकर 10.00 रात तक होता है।

निर्गमन **शलभ युग्मन**

3. **शलभों का युग्मन एवं अण्ड निषेचन :** नर एवं मादा शलभों के निर्गमन के 2-3 घण्टे के उपरान्त युग्मन हेतु यदि उपयुक्त परिस्थितियाँ हैं तो 70-80 प्रतिशत युग्मन ही प्राकृतिक रूप से हो पाता है। शेष 20-30 प्रतिशत शलभों को उचित स्थान पर नायलॉन नेट के अन्दर युग्मन हेतु रखा जाता है। शलभों को युग्मन के लिए 4-6 घण्टे छोड़ा जाता है ताकि अच्छी तरह से मादा शलभ के अन्दर अण्डों का निषेचन हो सके और अण्डों से प्रस्फुटन अधिक-से-अधिक हो सके।

4. **अण्ड निषेचन :** नर एवं मादा शलभों को 4-6 घण्टे युग्मन के उपरान्त वियुग्मित कर मादा शलभों के पंखों को काटकर एवं मूत्र निष्कासन के उपरान्त अण्डजनन हेतु मिट्टी के कप अथवा नायलॉन नेट की तैयार 9x5 इंच लम्बाई-चौड़ाई की थैली में 72 घण्टे के लिए अंधरे कमरे में 24-26 डिग्री तापमान, 75-85 प्रतिशत आर्द्रता के रखरखाव के साथ रखा जाता है। शेष मरे हुए एवं अनुपयोगी शलभों को गड्ढे में डाल दिया जाता है अथवा जला दिया जाता है।

अण्डजनन हेतु रखी गई मादा शलभ

मादा शलभों का सूक्ष्मदर्शी परीक्षण

5. **सूक्ष्मदर्शी परीक्षण :** 72 घण्टे अण्डजनन के उपरान्त मादा शलभों के उदर को कुचलकर अथवा टूथ पीक के माध्यम से स्मीयर तैयार कर सूक्ष्मदर्शी परीक्षण विभन्न रोगों की पहचान हेतु किया जाता है। सूक्ष्मदर्शी परीक्षण के उपरान्त रोग ग्रसित शलभों एवं बीज को जला दिया जाता है और रोग रहित बीज को कीटपालन हेतु रख लिया जाता है।

6. **अण्डों को एकत्रित करना :** सूक्ष्मदर्शी परीक्षण के उपरान्त रोग रहित अण्डों को एकत्रित किया जाता है एवं अण्डों के साथ मादा शलभों के टूटे हुए पंख, स्केल्स एवं अन्य कचरे को साफ कर धोने की प्रक्रिया में लाया जाता है।

7. **अण्डों को धोना एवं निसंक्रमण :** अण्डों को तीन विधियों से धोया जाता है -

   1. अण्डों को एक नेट के थैले के अन्दर एकत्रित कर थैले के साइज के अनुसार रख कर ढीला बाँध लिया जाता है ताकि अण्डों को थैले के अन्दर आसानी से हिलाया जा सके। सादा पानी में अण्डों को भिगोकर लाइफबॉय साबुन लगायें। तत्पश्चात सादा पानी में अण्डों को अच्छी तरह साफ करें ताकि साबुन अण्डों के ऊपर से हट जाये।

   2. थैले के अन्दर रखकर ढीले बाँधे गये अण्डों को रासायनिक के माध्यम से भी धोया जाता है जिसे 0.5 प्रतिशत सोडियम हाइड्रोक्लोराइड के घोल में 40 सेकंड तक डुबोयें एवं धीरे-धीरे हिलाएँ एवं इसके तुरन्त बाद कम-से-कम 5 बार सादा पानी में अच्छी तरह धोयें ताकि सोडियम हाइड्रोक्लोराइड को हटाया जा सके। तत्पश्चात 3 प्रतिशत हायड्रोक्लोरिक अम्ल एवं 3 प्रतिशत फार्मलीन का घोल बनाकर उपयोग में लाने से पहले समान मात्रा में एक साथ मिलाकर इस मिश्रण में 30 मिनट तक अण्डों को डुबोकर रखें एवं 30 मिनट के बाद अच्छी तरह पानी में धोकर जालीदार ट्रे में पतली परत में फैलाकर छाया में सुखायें।

   3. अण्डों को एक नेट के थैले के अन्दर एकत्रित कर थैले के साइज के अनुसार रखकर ढीला बाँध लिया जाता है एवं केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची द्वारा विकसित एग वाशिंग सॉलुशन डुपराटेक्स (एक लीटर पानी मे 50 एम.एल डुपराटेक्स मिलाकर) से तैयार किये गये घोल के माध्यम से धोकर छाया में सुखाया जाता है।

अण्डों को धोना　　अण्डों का निसंक्रमण　　अण्डों को सुखाना

8. अण्डों को सुखाना : अण्डों को धोने एवं निसंक्रमण के उपरान्त जालीदार ट्रे में अथवा ब्लॉटिंग पेपर पर पतली परत में फैलाकर छाया में सुखाया जाता है। निसंक्रमित अण्डों को संक्रमण से बचाव की दृष्टि से सीधे ही हाथ से नहीं छूना चाहिए।

9. अण्डों की फ्रीजिंग : कीटपालन हेतु पत्तियों की उपलब्धता के आधार पर एक समय में अण्डों के प्रस्फुटन एवं समूह में कीटाण्डों की आपूर्ति के उद्देश्य से *एन्थिरिया प्रॉयली* के अण्डों के प्रस्फुटन की प्रतिशतता को बिना प्रभावित किये 5 डिग्री ± 2 डिग्री सेन्टीग्रेट पर फ्रीजिंग कर संरक्षित किया जा सकता है। *एन्थिरिया प्रॉयली* के अण्डों के उपयुक्त समय पर प्रस्फुटन के लिए फ्रीजिंग एक आवश्यक कदम है।

10. अण्डों की पैकिंग : सूखे हुए एवं उचित रूप से निसंक्रमित अण्डों को मलमल के कपड़े या पतले नायलॉन नैट के कपड़े की थैली में ढीले रूप में पैक किया जाता है। एक पैकेट में 100 रो.मु.च. का वजन 200 ग्राम होता है। पैकेट पर युग्मन एवं प्रस्फुटन तिथि अंकित की जाती है।

11. अण्डों का परिवहन : अण्डों के परिवहन के समय उचित सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। परिवहन से 10-12 घण्टे पहले अण्डों को फ्रीज से बाहर निकाल कर कमरे के तापमान पर रखना चाहिए। परिवहन रात्रि अथवा सुबह के समय में करना चाहिए।

क्या करें, क्या न करें ?

क्या करें :

- बीजागार की किसी भी प्रक्रिया से पहले बीजागार में प्रयोग की हर वस्तु का विसंक्रमण कर लें।
- बीजागार में हमेशा पुष्ट एवं बीज कोसे ही संरक्षित करें।
- बीजागार में मरे हुए एवं झीने कोसों को संरक्षण हेतु कदापि ना जाने दें।
- बीजागार भवन में जूते-चप्पल पहनकर ना घुसे। इस हेतु रखी चप्पल का प्रयोग करें।
- बीजागार क्रिया-कलापों के समय कक्ष में समुचित तापमान (24 ± 2^{0}C) तथा सापेक्ष आर्द्रता (75-85%) की व्यवस्था करें।
- बीजागार के अवशेष के निपटान के लिए एक सोकपिट का होना भी आवश्यक है।
- निसंक्रमण हेतु चूना 9% मात्रा एवं 1 भाग ब्लीचिंग पाउडर को मिलाकर डस्टिंग अवश्य करें।
- मादा शलभों को कम-से-कम 4-6 घण्टे युग्मन में रहने दें।
- गुणवत्तायुक्त कीटाण्ड प्राप्त करने के बाद मादा शलभों की सूक्ष्मदर्शी जाँच अवश्य करें।

क्या न करें :

- विसंक्रमण के वगैर किसी प्रक्रिया को न करें। बीजागार भवन में घुटन कदापि ना होने दें।
- नव प्रस्फुटित कीटों को अंगुली/हाथ से कदापि न छुएं।
- गन्दे/बाहर के जूते चप्पल लेकर कदापि बीजागार भवन में न जायें।
- बिना विसंक्रमण किये सीधे टूथपिक, स्लाइड, कवर स्लिप का प्रयोग न करें।
- बीजागार कक्ष में काफी कम या काफी अधिक तापमान व सापेक्ष आर्द्रता न रखें।

- गंदे हाथ/पैर तथा मरी हुई तितलिओं को छूने के बाद स्वस्थ तितलिओं को न छुएं।
- अण्डों को धोते समय सुझायी गयी रसायनों की मात्रा का ही प्रयोग करें।
- बीज की पैकिंग के समय थैली में उचित मात्रा में ही बीज को भरें।
- बीज के परिवहन के कीटाण्डों को तेज धूप से अवश्य बचायें।

निष्कर्ष : उत्तराखण्ड राज्य में निम्न, मध्य एवं उच्च ऊँचाई पर ओक तसर खाद्य पौधों के अर्थिक पौधा रोपण का अभाव है। ऐसी स्थिति में प्राकृतिक रूप से जंगल में उपलब्ध खाद्य पौधों पर ही कीटपालन हेतु निर्भर करना पड़ता है जिसके कारण जंगल में उपलब्ध खाद्य पौधों पर कोंपलों के आने के अनुरूप ही बीजागार क्रिया-कलाप किये जाते हैं। क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल के अतिरिक्त ओक तसर उद्योग से जुड़ी संस्थाएँ बीज का उत्पादन विधिवत् रूप से नहीं कर पा रही हैं। यदि वे भी बीजोत्पादन की इस विधि को अपना कर बीज का उत्पादन करें तो माँग के अनुरूप सभी फसलों हेतु बीज की आपूर्ति की जा सकती है तथा बीजोत्पादन की समस्या का समाधान किया जा सकता है।

*वैज्ञानिक-डी, क्षे.रे.उ.अ.के.,भीमताल

गज़ल

गज़ल

डॉ. राजीव गुप्ता*

धूप, हवा और पानी दे दो,
फिर से नींद सुहानी दे दो।
किस्से और कहानी हों फिर,
बूढ़ी दादी-नानी दे दो।
मिले दूध अमृत सा घर-घर,
गाय को बस सानी दे दो।
धूल-धुआँ-प्रदूषण का हल,
साइकिल वही पुरानी दे दो।
बिगड़े काम बने सुविधा से,
मुझको मीठी बानी दे दो।
कहीं परिंदे लौट न जाएँ,
उनको दाना-पानी दे दो।

मात-पिता ईश्वर के प्रतिनिधि,
ऐसा ज्ञान भवानी दे दो।
खुशियों से यह घर भर जाए,
बिटिया कुछ शैतानी दे दो।
नाकारा प्रतिनिधि ठुकराओ,
काहे उसे प्रधानी दे दो।
होली की मस्ती में झूमूँ,
फिर से नई जवानी दे दो।
जीवन यूँ ही गुजर न जाए,
कुछ तो इसको मानी दे दो।

*5/11, बाग कूँचा, फर्रुखाबाद-209625, उत्तर प्रदेश

संस्थान की गतिविधियाँ

रेशम विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा लखनऊ में आयोजित मेगा एक्सपो में पं. दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से.

गुवाहाटी आसाम में आयोजित केन्द्रीय रेशम बोर्ड की अनुसंधान समन्वय समिति (आरसीसी) की बैठक के दौरान सदस्य सचिव श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से. के साथ बोर्ड के संस्थानों के निदेशक

झारखण्ड में तसर उद्योग के अनुसंधान व विकास पहलुओं से श्री हेमन्त सोरेन, माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड को अवगत कराते संस्थान के निदेशक

संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशाला में मुख्य अतिथि डॉ. अमित कुमार पाण्डेय, निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान, राँची का संबोधन

हिन्दी पखवाड़ा, 2023 के मुख्य समारोह का एक दृश्य

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय रेशम दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते संस्थान के निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित विश्व आदिवासी दिवस कार्यक्रम में
शामिल निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी एवं
वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारी

दिनांक 18.07.2023 को वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा
नई दिल्ली में आयोजित चिंतन शिविर सह विचार–मंथन
सत्र में केन्द्रीय रेशम बोर्ड पदाधिकरियों के साथ संस्थान
के निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी

महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड श्री सी. पी. राधाकृष्णन
से शिष्टाचार भेंट एवं तसर संस्थान की गतिविधियाँ
बताते संस्थान के निदेशक

विद्यालयों के बच्चों एवं शिक्षकों द्वारा
तसर संस्थान का भ्रमण

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती एवं राष्ट्रीय रेशम दिवस पर
पुष्पांजलि देते महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी. राधाकृष्णन एवं संस्थान के निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी

झारखण्ड में तसर रेशम उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर
श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग,
झारखण्ड से चर्चा करते हुए संस्थान के निदेशक

दैनिक भास्कर की 13वीं वर्षगांठ पर तसर सिल्क का अहसास कराता आज का मास्टहेड

रांची संस्करण पाठकों के विश्वास के 13 वर्ष

दैनिक भास्कर

आज बम्पर अंक कुल पेज 48

हमर सोना झारखंड

क्योंकि... झारखंड सुंदर, समृद्ध और सामर्थ्यवान है। जल, जंगल, खनिज संपदा से परिपूर्ण होने के साथ तसर उत्पादन में भी नंबर-1 है। सातवीं शताब्दी के चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारतीय रेशम को 'जंगली रेशम' कहा था। ब्रिटिश गजेटियर में भी संथाल के भगैया सिल्क का जिक्र है। झारखंडी तसर की चमक अमेरिका तक है। पीएम नरेंद्र मोदी ने जून में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन को तसर सिल्क भेंट किया, वह झारखंड का ही था...

10 देशों में भेजा जाता है हमारा तसर सिल्क, 2 हजार मीट्रिक टन से भी ज्यादा सालाना उत्पादन

ऐसे बनता है धागा...

तसर रेशम कीट का जीवन चक्र

सदियों से संस्कृति का अंग

गोड्डा का भगैया गांव, जहां सिल्क की कुताई से लेकर फिनिशिंग तक हो रही

सुनहरी चमक खास पहचान

3.5 लाख लोग देशभर में तसर उद्योग से जुड़े हैं, इनमें लगभग 2.22 लाख लोग सिर्फ झारखंड के हैं

रांची में है देश का एकमात्र तसर अनुसंधान केंद्र

दैनिक भास्कर समाचार पत्र द्वारा झारखण्ड में रेशम उत्पादन पर व्यापक कवरेज

रामकृष्ण मिशन, विवेकानन्द शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थान, राँची के दीक्षांत समारोह में उपस्थित श्री बादल पत्रलेख, कृषि मंत्री, झारखण्ड, स्वामी सुविदानन्द महाराज, रामकृष्ण मिशन आश्रम एवं तसर संस्थान के निदेशक

रामकृष्ण मिशन, विवेकानन्द शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थान, राँची के वार्षिक दिक्षांत समारोह में उपस्थित स्वामी सुविदानन्द महाराज, रामकृष्ण मिशन आश्रम एवं तसर संस्थान के निदेशक व विद्यार्थी

मीडिया सुर्खियाँ

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक बने एन बी चौधरी
राष्ट्रीय हस्तकरघा दिवस पर प्रदर्शनी
रांची, 20 जुलाई 2023
झारखंड तसर रेशम धागे/कपड़े को हाल ही में अपने अमेरिकी दौरे के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा वैश्विक प्रसिद्धि मिली
हिंदी पखवाड़ा 2023 का मुख्य समारोह आयोजित
तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा 2023 का आयोजन
किसानों के कल्याण के लिए समझौता ज्ञापन पर किये
तसर अनुसंधान संस्थान के नये निदेशक ने संभाला कार्यभार
देश में 50 प्रतिशत तसर रेशम उत्पादन करने वाला राज्य झारखंड
केंद्रीय तसर अनुसंधान संस्थान का स्थापना दिवस समारोह आयोजित, राज्यपाल हुए शामिल
अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान में कार्यक्रम का आयोजन
केंद्रीय तसर अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान में विश्व आदिवासी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित
केन्द्रीय तसर संस्थान में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस का आयोजन
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी की प्रदर्शनी का किया अवलोकन
तसर संस्थान में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस का आयोजन
केंद्रीय तसर अनुसंधान केंद्र में कार्यशाला, देश भर के तसर वैज्ञानिक और पदाधिकारीगण रहे मौजूद
तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान और सिदकोफेड के बीच समझौता ज्ञापन पर हुआ हस्ताक्षर
सिदको फेडरेशन के अधिकारियों ने तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान का किया दौरा
तसर संस्थान में स्थापना दिवस समारोह का आयोजन
तसर संस्थान में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस का आयोजन
अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान में कार्यक्रम का आयोजन
रेशम दिवस मनाया गया
तसर संस्थान में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस का आयोजन
नये निदेशक ने पदभार ग्रहण किया
सिल्ला नगड़ी। नगड़ी स्थित केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान संस्थान में डॉ एनबी चौधरी ने नये निदेशक के रूप में शनिवार को पद ग्रहण किया। डॉ चौधरी को देश के छह राज्यों के संस्थानों के विकास का लंबा अनुभव है। उन्हें शहतूती रेशम के साथ तसर रेशम के क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल है। अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं। सामाजिक और आर्थिक उत्थान डॉ चौधरी की प्राथमिकता है।
रांची /खूंटी
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के योगदान एवं दूरदर्शिता की स्मृति में रेशम दिवस मनाया गया
झारखंड तसर रेशम की जननी है : राज्यपाल
झारखंड के तसर रेशम कपड़े को प्रधानमंत्री के अमेरिकी दौरे के दौरान मिली वैश्विक प्रसिद्धि
तसर संस्थान में स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

तकनीकी आलेख

एक्टोमाइकोरिज़ल कवक : माइसेलियल नेटवर्क के महत्व

बेला आर. भगत* एवं अपर्णा के.

शोध सारांश : एक्टोमाइकोरिज़ल (ईसीएम) कवक कई पेड़ प्रजातियों के साथ पारस्परिक सह-जीवन बनाते हैं और वन पारिस्थितिकी तंत्र में पोषक तत्व और कार्बन चक्र में प्रमुख जीव माने जाते हैं। इन प्रक्रियाओं में उनकी भूमिकाओं की हमारी सराहना उनकी मिट्टी-जनित मायसेलियल प्रणालियों की समझ की कमी के कारण बाधित होती है। ये मायसेलियाई सीएम कवक की वनस्पति थैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कार्बन पैदा करने वाले पेड़ की जड़ों को मिट्टी के पोषक तत्वों से जोड़ते हैं, फिर भी हम वन मिट्टी में उनके वितरण, गतिशीलता और गतिविधियों से काफी हद तक अनभिज्ञ हैं। इस पेपर में हम फलने वाले पिंडों, ईसीएम जड़ युक्तियों और प्रयोगशाला-आधारित सूक्ष्म जगत अध्ययनों की जांच से प्राप्त जानकारी पर विचार करते हैं, और निष्कर्ष निकालते हैं तसर भोज्य पौधे की जड़ों और मिट्टी के कवक के एकीकरण में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो पोषक तत्वों के लिए कवक के साथ प्रकाश संश्लेषक रूप से उत्पादित कार्बन के आदान-प्रदान द्वारा नियंत्रित होते हैं जैसे नाइट्रोजन और पोटेशियम। इस आदान-प्रदान का उद्देश्य तसर वृक्षों के विकास और उत्पादकता को बनाए रखना है, विशेषकर कम पोषक तत्वों की उपलब्धता वाली मिट्टी में।

कुंजी शब्द : एक्टोमाइकोरिज़ल कवक, सहजीवी संघ तसर वृक्ष, कवक जाल, पोटेशियम

1. प्रस्तावना : दुनिया भर में वन निवासों में कई पेड़ प्रजातियां अपनी पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पारस्परिक एक्टोमाइकोरिज़ल (ईसीएम) कवक पर निर्भर हैं (स्मिथ एंड रीड, 1997)। ये कवक खनिज अपक्षय (लैंडवेर्ट व अन्य, 2001) और कार्बनिक परिसरों से पोषक तत्वों को एकत्रित करने (रीड और पेरेज़-मोरेनो, 2003) के माध्यम से पेड़ों के पोषण में योगदान करते हैं। इस प्रकार ईसीएम कवक को वन पोषक चक्र के प्रमुख तत्व और वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रक्रियाओं के मजबूत चालक के रूप में माना जाता है (रीड व अन्य, 2004)। ईसीएम एसोसिएशन बनाने वाले कवक में बेसिडिओमाइसेट्स और कुछ हद तक एस्कोमाइसेट्स (स्मिथ एंड रीड, 1997) का वर्गीकरण रूप से व्यापक सूट शामिल होता है। आम तौर पर, कवक अपने भोज्य की छोटी पार्श्व जड़ों के चारों ओर एक मायसेलियल मेंटल बनाते हैं और एपिडर्मल और कॉर्टिकल कोशिकाओं के बीच प्रवेश करते हैं, उनके चारों ओर एक अत्यधिक शाखित संरचना, हार्टिगनेट (चित्र-1) (पीटरसन व अन्य, 2004)। ईसीएम जड़ युक्तियों की आकृति विज्ञान में महत्वपूर्ण भिन्नता मौजूद है जो विभिन्न फंगल टैक्सा से संक्रमित हैं और ईसीएम जड़ों की मैक्रोस्कोपिक और सूक्ष्म विशेषताओं का विश्लेषण ईसीएम कवक की पहचान के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। ईसीएम रूट में हार्टिगनेट द्वारा निर्मित फंगस-प्लांट इंटर फ़ेस पारस्परिकता के लिए कार्यात्मक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उस इंटर फ़ेस का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से पोषक तत्वों और कार्बन को भागीदारों के बीच स्थानांतरित किया जाता है (स्मिथ एंड रीड, 1997)। भोज्य जड़ पर बनी संरचनाओं के अलावा, ईसीएम कवक माइसेलिया का उत्पादन करता है जो मेंटल से आसपास की मिट्टी तक फैलता है (चित्र-2)। ईसीएम कवक के मृदा-जनित

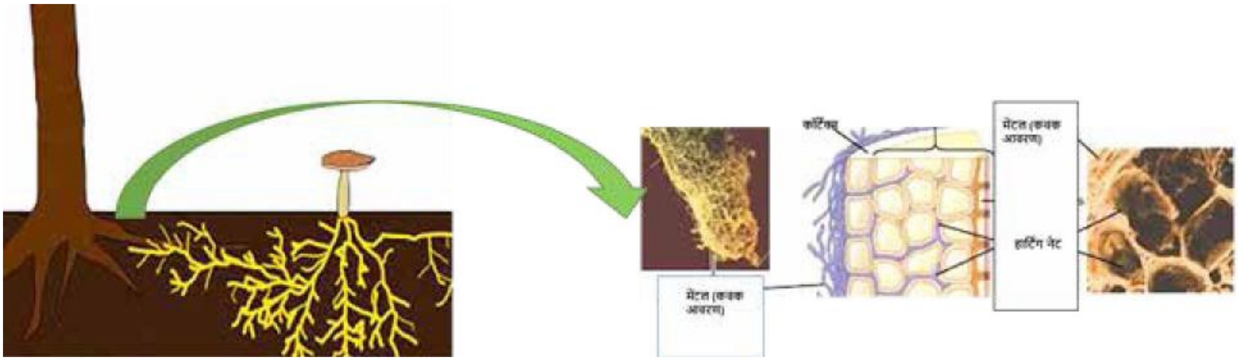

चित्र-1 : ईसीएम रूट में हार्टिंगनेट द्वारा निर्मित फंगस-प्लांट इंटरफ़ेस

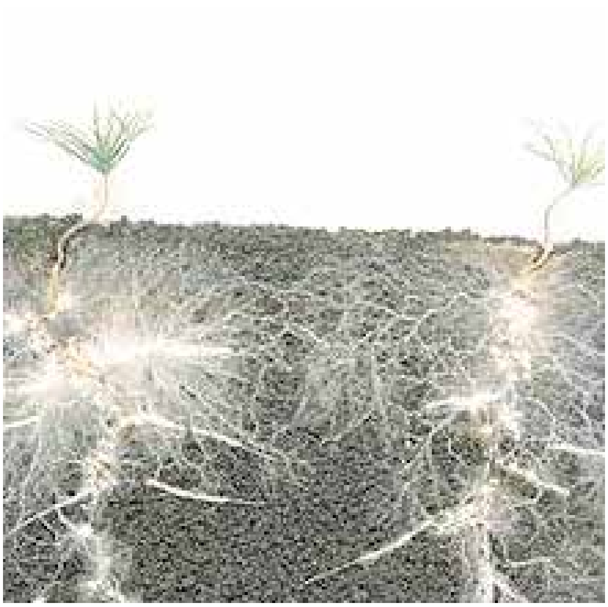

चित्र-2 : ईसीएम कवक माइसेलिया का उत्पादनइंटरफ़ेस

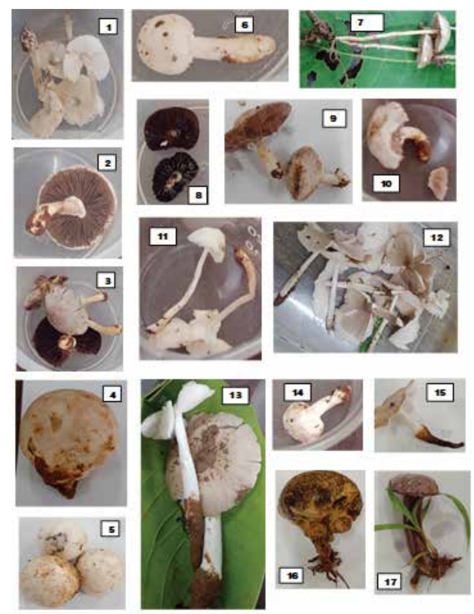

चित्र-3 : के.त.अ.प्र.सं. परिसर में एकत्र किए गए कुछ फलन निकाय

चित्र स्रोत : माइसेलियम : मिट्टी के नीचे राजमार्ग (मैडी लिटस्टर द्वारा 28 जून, 2021 को प्रकाशित)

मायसेलियाको पोषक तत्वों और पानी की तलाश और स्थानांतरण में पारस्परिकता के लिए कार्यात्मक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। वे छोटी पार्श्व जड़ों को भी संक्रमित करते हैं और संभावित रूप से एक सामान्य मायसेलियल नेटवर्क बनाते हैं जो व्यक्तिगत वृक्ष भोज्य के बीच कार्बन और/ या पोषक तत्वों की आवाजाही को सुविधाजनक बना सकता है (सिमर्ड एंड ड्यूरल, 2004; सेलोसे व अन्य, 2006)। पारिस्थितिकी तंत्र के स्तर पर इन मायसेलिया का मिट्टी-पौधे सातत्य के भीतर पोषक तत्वों के स्थानांतरण में प्रतिस्पर्धा में और मिट्टी में रहने वाले सैप्रोट्रॉफ़्स के साथ सहयोग में, कार्बनिक और अकार्बनिक स्रोतों से पोषक तत्वों को जुटाने में और अधिक महत्व है (लीक व अन्य, 2002; वालैंडर, 2006)। वर्तमान अध्ययन में हम नाइट्रोजन और पोटेशियम ग्रहण के संदर्भ में पोषक तत्वों के आदान-प्रदान के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ मृदाजनित ईसीएम माइसेलियल सिस्टम के वितरण, गतिशीलता और गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं।

2. सामग्री और विधियाँ

2.1. फलने वाले पिंडों का संग्रह

तसर भोज्य पौधों के पास उगने वाले मशरूम जैसे कवक के फल शरीर झारखंड के विभिन्न तसर रेशम उत्पादन क्षेत्रों (खरसावाँ, चक्रधरपुर, चाईबासा, के.त.अ.प्र.सं. राँची) से एकत्र किए गए थे।

2.2 कवक का अलगाव -

- एकत्रित फलने वाले पिंडों को सतह पर 70% मेथनॉल द्वारा निष्फल किया गया और 1 मिनट के लिए आसुत जल से धोया गया।
- 3 मिमी फलने वाले पिंडों को निष्फल सर्जिकल ब्लेड से काटा गया और 0.5% एम्पीसिलीन के साथ एसडीए (सबौरौडकेडेक्सट्रोज़एगर) कल्चर प्लेटों पर रखा गया।
- कल्चर प्लेटों को इनक्यूबेटर में 25-28 डिग्री सेल्सियस पर 48 घंटों के लिए याफंगल हाइपहे की वृद्धि देखी जाने तक ऊष्मायन के लिए रखा गया था।
- विकास आरंभ होने के बाद, कवक को स्टेराइलइनो क्यूलेशनलूप के साथ प्लेटों से उठाया जाता है और एक्सेनिक कल्चर प्राप्त करने के लिए ताजा स्टेराइल एसडीए (SDA) प्लेटों में डाला जाताहै।

2.3. कवकीय कल्चर का रखरखाव

फंगल कल्चर प्लेटों को सक्रिय रूप से विकसित होने वाले फंगस कल्चर से इनोकुलम के आवधिक स्थानांतरण द्वारा टेस्ट ट्यूब (कपासयाफोम के साथ प्लग किया गया) यापेट्रीडिश (सूखने को कम करने के लिए पैरा फिल्म के साथ लपेटा हुआ) में सबाउरॉडडेक्सट्रोज एगर (एसडीए) माध्यम से स्थानांतरित करके बनाए रखा गया। कल्चर स्थापित होने के बाद इसे 4°C पर रखा गया। संदूषण और शुष्कन के लिए कल्चर की समय-समय पर जाँच की गई।

2.4. अमोनिया खनिजकरण

नेस्लर के अभिकर्मक का उपयोग करके अमोनिया खनिजकरण का अध्ययन किया गया।

- कवक कल्चर को सबाउरॉड डेक्सट्रोज़ (एसडी) शोरबा में टीका लगाया गया था।
- 2 मिली लीटर कल्चर शोरबा को 15 मिनट के लिए 5000 आरपीएम पर सेंट्रीफ्यूज किया गया।
- मिली लीटर सतह पर तैरने वाला को एक नई टेस्ट ट्यूब में स्थानांतरित किया और नेस्लर के अभिकर्मक की 2 बूंदें डाली गईं।
- पीले से नारंगी रंग के विकास ने अमोनिया की उपस्थिति की पुष्टि की।

2.5. पोटेशियम घुलनशीलता अध्ययन

पिकोवस्काया (पीवीके) मीडिया पर 28 डिग्री सेल्सियस पर कल्चर करके उनकी पोटेशियम – घुलनशील क्षमता के लिए कवक के फलने वाले शरीर को अलग किया गया। जब एक सप्ताह में कॉलोनियां दिखाई दीं, तो एक स्पष्ट पोटेशियम-घुलनशील क्षेत्र का निरीक्षण किया गया और प्रत्येक कॉलोनी के लिए पोटेशियम-घुलनशील क्षेत्र का आकार निर्धारित किया गया। पोटेशियम घुलनशीलता सूचकांक निम्नलिखित सूत्र का उपयोग कर के निर्धारित किया गया था : कुलव्यास (कॉलोनी + हेलोजोन) और कॉलोनी व्यास का अनुपात।

घुलनशीलतासूचकांक (एसआई) = कॉलोनी व्यास + हेलोजोन व्यास कॉलोनी व्यास

3. परिणाम

3.1. फलनेवाले पिंडों का वितरण

ईसीएम के 118 फलन निकाय एकत्र किए गए जिनमें से 42% अकेले सीटीआरटीआई से थे। सीटीआरटीआई परिसर में एकत्र किए गए फलन निकायों की विशाल रेंज और विविधता दिखाई गई, इस प्रकार फलने वाले पिंडों का अधिकतम वितरण और इसलिए मायसेलियल नेटवर्क प्रदर्शित हुआ (चित्र-3)।

3.2. अमोनिया खनिजकरण

अधिकांश फंगल कल्चर ने इनविट्रो परिस्थितियों में अमोनिया खनिजकरण दक्षता दिखाई ।अमोनिया उत्पादन को बहुत मजबूत(++++), मजबूत (+++), मध्यम (++)और कमजोर(+) के रूप में तालिका में दर्शाया गया है ।

तालिका

क्रमिक संख्या	फ्रुइटिंग बॉडीज कल्चर्स	अमोनिया खनिजकरण
1	APRd	+++
2	APRlk	++++
3	APRBk	++
4	APRm	+++
5	APRy1	+++
6	APRXIII	+++
7	APRIII	+++
8	APRjk	++++
9	APRi	++++
10	APRg (c)	++++
11	APREk	+++
12	APRy	++
13	APRo	++
14	APRVI	+++
15	APRXV	+++
16	APRXIV	+++
17	APRFk	+++
18	APRVII	+
19	APRu	+++

3.3. पोटेशियम घुलनशीलता

लगभग 61प्रतिशत आइसोलेट्स ने पोटेशियम घुलनशीलता क्षमता प्रदर्शित पोटेशियम घुलनशीलता सूचकांक 1.0-2.15 के बीच था (चित्र-4)

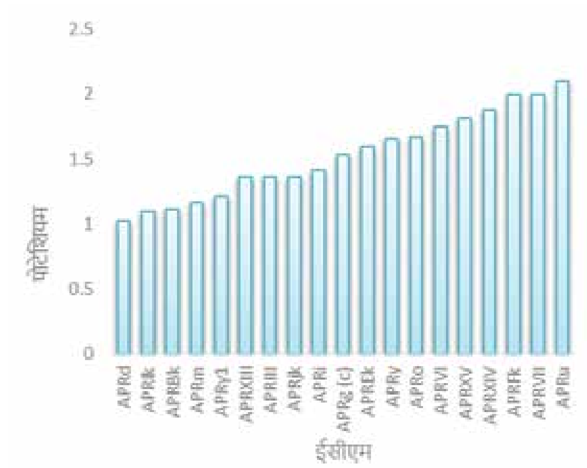

चित्र-4 : पोटेशियम घुलनशीलता

4. निष्कर्ष : वर्तमान अध्ययन का निष्कर्ष है कि तसर रेशम उत्पादन बागानों में उगने वाले मशरूम जैसे कवक फलने वाले शरीर में कार्यात्मक मायसेलियल नेटवर्क होता है जिसमें पौधों के विकास को बढ़ावा देने वाले गुण होते हैं और इस प्रकार तसर वृक्षारोपण मिट्टी में पोषक तत्व परिवर्तन के साथ-साथ तसर भोज्य पौधे की वृद्धि और उत्पादकता में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

*परियोजना सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल
... भारतेंदु हरिश्चंद्र

सफलता की कहानी

दीवान राम की सफलता की कहानी

शेख एजाज अहमद*

यदि जीवन सीमित साधनों और अवसरों की अनुमति देता तो कभी भी समस्या उत्पन्न नहीं होती। रेशम उत्पादन की अन्य गतिविधियों के साथ एक्सपोज़र प्रशिक्षण ने जिला नैनीताल के एक ग्रामीण किसान श्री दीवान राम को आश्वस्त किया कि वह क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल से सीखी गई प्रौद्योगिकियों के गहन ज्ञान के साथ बेहतर आय के लिए ओक तसर कीटपालन में हिस्सा लेने को तैयार हुआ और वह ग्रामीण किसान अपनी कड़ी मेहनत के रवैये के साथ अन्य किसानों को प्रेरित और मार्गदर्शन करने की योग्यता रखता है। वन्य रेशम उत्पादन गरीबों और आदिवासियों के जुड़ने से उनकी आय को बढ़ा सकता है और जीवन बदल सकता है।

दीवान राम एक बहुत गरीब व्यक्ति थे और स्थानीय गतिविधियों और दैनिक मजदूरी कार्यों से उनकी आय कुछ कम थी। उन्हें परिवार को भोजन उपलब्ध कराने व अपनी छोटी- छोटी लेकिन बहुत जरूरी आकांक्षा को पूरा करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था तथा उन पर पत्नी और अपने दो बच्चों की पढ़ाई की जिम्मेदारी भी थी। एक दिन जब उनके गांव में सीबीटी के तहत 05 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया तो वह 03 वर्षों के अंतराल के बाद फिर से क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल के संपर्क में आये। अपने नियमित दैनिक कृषि श्रम कार्यों के संचालन के अलावा प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने ओक तसर रेशम कीटपालन और उचित विसंक्रमण और स्वच्छता बनाए रखने की प्रौद्योगिकियों के महत्व का गहन ज्ञान प्राप्त किया। बंदरों की घनी आबादी के कारण होने वाले नुकसान से बचने के लिए ओक तसर कीटपालन का कार्य कमरों में ही किया जाता है। श्री दीवान राम ने एक अच्छे और मेहनती व्यक्ति के रूप में क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल से ओक तसर पालन की तकनीक और अच्छा कौशल सीखा । थोड़े समय में उन्होंने अपने गांव के अन्य स्थानीय लोगों को शामिल किया और उनको कीटपालन में प्रेरित किया । उन्होंने एक बार फिर साबित कर दिया कि ओक तसर से आय वृद्धि से उनका जीवन बदल सकता है और बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल सकती है ।

श्री दीवान राम अपने गाँव में 100 डीएफएलएस ओक तसर कीटपालन का कार्य अपनी कड़ी मेहनत के साथ कर रहे थे और जब कीटपालन अंतिम चरण में था तभी एक सुबह यह चौंकाने वाली खबर आई कि श्री दीवान राम ने अपने जीवन की आखिरी सांस खो दी है और वह श्री दीवान राम का आखिरी दिन था । यह न केवल क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल के लिये बल्कि पूरे रेशम उद्योग, केंद्रीय रेशम बोर्ड और रेशम उत्पादन विभाग उत्तराखंड का निजी नुकसान था। इस बड़ी क्षति व दुख: की घडी में भी श्री दीवान राम द्वारा छोड़े गए परिवार ने अंतिम चरण में चल रहे कीटपालन का कार्य नहीं छोड़ा, बल्कि कीटपालन के कार्य में लगे रहे और 100 डीएफएल में से 5661 अच्छे कोकून की कटाई पूरी की और 11322.00 रुपये की राशि अर्जित की। ओक तसर रेशम कीट पालन की यह प्रथा न केवल कमाई का एक तरीका है, बल्कि ओक तसर संस्कृति से जुड़े लोगों के लिए भविष्य की दृष्टि भी है। आज उनका परिवार ओक तसर से जुड़कर अच्छी आय प्राप्त कर रहा है।

*वरिष्ठ तकनीकी सहायक क्षे.रे. उ.अ.के, भीमताल

सफलता की कहानी

कुमारी कांति पुजारी की सफलता की कहानी

सुनील कुमार मिश्र*

छत्तीसगढ़ राज्य का बस्तर जिला घने जंगलों, नक्सली समस्या, आदिवासीयों की अनोखी जीवन शैली के लिए मशहूर है। जब आदिवासी जीवन के विविध पहलुओं की बात आती है - सांस्कृतिक विविधता, असाधारण सुंदर परिवेश जिसमें वे रहते हैं, भौगोलिक विभिन्नता के साथ बस्तर देश में एक विशेष स्थान रखता है। साहित्य, लोक गीत और नृत्य के साथ-साथ भाषाएँ इस क्षेत्र के आदिवासियों को उनकी विशिष्टता के लिए खड़ा करती हैं। इसी क्रम में तसर प्रजाति रैली जो रेशम के कोसाओं में सर्वाधिक आर्थिक मूल्य वाला होते हुए, बस्तर का मूल निवासी (नैसर्गिक प्रजाति) होना एवं बस्तर क्षेत्र में अत्यधिक प्राप्ति से बस्तर जिला को भी पहचान दी है। बस्तर जिला की महिलाएँ विशेषतः मेहनती होने के कारण पूरे दिन का कामकाज का लगभग दो तिहाई हिस्सा काम में लगाती हैं एवं श्रम बल का एक तिहाई हिस्सा योगदान करते हैं। कुमारी कांति पुजारी पिता सोंडी पुजारी छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के कालीपुर गाँव के एक आदिवासी परिवार से हैं। बस्तर के महिलाओं की तरह वो भी मेहनती और समय परिचालन में निपुण हैं। उनके पिताजी इनके ज्ञान आने से पहले ही स्वर्गवास हो गए। उनके परिवार में तीन बहनें और उनकी माँ हैं। कोई अंतर्निहित पैतृक संपत्ति न होने के कारण उनका परिवार कृषि श्रम से होने वाली आय से जीवन-यापन करता था। इस प्रांत में गहरे सामाजिक बंधन और परम्पराएँ व रीति रिवाज़, घर से बाहार निकलने या किसी और की भूमि में काम करने के लिए मुश्किल करती थी। कुमारी कांति पुजारी स्कूल से आते-जाते रास्ते पर तसर संग्रहालय में तसर कोसा सुखाने एवं गिनने देखा करती थी। 14 साल की उम्र में अपनी मीडिल शिक्षा जारी रखते हुए कुमारी कांति ने 2003 के दौरान अपने परिवार के दैनिक खर्चों में मदद के लिए तसर कोकून के धागाकरण गतिविधियाँ पर अपना रुचि दिखाना शुरू की। किसी भी समुदाय में विकास के लिए महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बहुत जरूरी है। उनका धैर्य, दृढ़ता, देख-रेख और नई प्रौद्योगिकियों की अपनाने की उनकी उत्सुकता और रुचि उनको आगे की और ले गई। रेशम उद्योग में असीमित रोजगार संभावना होने के कारण एवं उनकी निर्णय लेने की और महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की चाह उनको एक के बाद एक पायदान पर चढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ। वह याद करती है कि पहले महीने में उनकी आय रु. 250.00 (रुपये दो सो पचास) मात्र थी। धीरे-धीरे उन्होंने रीलिंग गतिविधियों का अभ्यास किया। अपने पुराने दिनों को याद करते हुए नम आँखों से वह अपने पहले गुरु स्वर्गीय श्री इंद्रपाल राज, रीलिंग प्रशिक्षक, राज्य रेशम विभाग, छत्तीसगढ़ को याद करती हैं और अपना आभार प्रकट करती हैं। अब 21 वर्षों के अनुभव के साथ वह छत्तीसगढ़ सरकार के अधीन रेशम उत्पादन विभाग में धागाकरण में मास्टर ट्रेनर हैं। वह इस स्तर तक अपनी यात्रा को याद करते हुए निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मार्गदर्शन को सदैव सम्बंधित अधिकारी एवं कर्मचारियों के द्वारा दी गई सुविधा एवं प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद ज्ञापन करती हैं।

1. 05.01.18 से 12.02.18 तक मुख्यमंत्री कौशल विकास योज़ना के द्वारा Modular Employable Skills course का प्रशिक्षण।
2. 27.01.2021 से 01.02.2021 तक ग्रामोद्योग संचालनालय, रेशम प्रभाग द्वारा वार्प रीलिंग एवं स्पिनिंग प्रशिक्षण।
3. 25.07.22 से 31.07.22 तक जेंडर मैन स्ट्रीमिंग रिसर्च एसोसिएशन द्वारा प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

वो कहती हैं कि क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, जगदलपुर एवं केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संसथान, राँची के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मास्टर ट्रेनर के रूप में भाग लेते

हुए भी उन्होंने वैज्ञानिकों, तकनीकी सहायकों से ज्ञान आदान-प्रदान करते हुए नई तकनीक तथा विभिन्न नैसर्गिक प्रजाति के कोसों का संशोधित करने की विधि अपनाई। अब वह धागाकरण प्रक्रिया को जारी रखते हुए कई समूहों की परिचालिका हैं - धरमपुरा में दो स्वयं सहायक समूहों की अध्यक्ष हैं और कालीपुर स्वयं सहायता समूह-आस्था रेशम केंद्र के प्रबंधक हैं। एक मास्टर रीलर के रूप में एवं एक संसाधन व्यक्ति के रूप में क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, जगदलपुर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों और जगदलपुर में महात्मा गाँधी रूरल इंडस्ट्रियल पार्क (RIPA) में पोस्ट कोकून रेशम अनुभाग में भाग लेती हैं। वे रीलिंग के माध्यम से स्थानीय लोगों का समर्थन करने के लिए दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों में दो समूहों को सहायता करती हैं। वर्तमान में समूहों के प्रबंधक के रूप में वह गर्व से समूहों को कोकून की व्यवस्था करने, कच्चे रेशम उत्पादन की गुणवत्ता की निगरानी करने, कच्चे रेशम की बिक्री की निगरानी करने, समूह के सदस्यों को भुगतान सुनिश्चित करने, समूह के सदस्यों और छत्तीसगढ़, ओडिशा, बनारस जैसे विभिन्न स्थानों के व्यापारियों के बीच संपर्क रख करके अपनी सेवा प्रदान करती हैं। तंगहाली से खुशहाली तक की अपनी 25 साल की यात्रा में वह गर्व से कहती हैं कि मैंने अपनी छोटी बहन को मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा की पढ़ाई में आर्थिक रूप से मदद की है, जो एमपीएम अस्पताल, जगदलपुर में तकनीशियन के रूप में काम करती है। अपने घर परिसर में उन्होंने दो दुकानें बनवाई और अभी उनका परिवार कृषि मजदूरी करना छोड़ दिया है एवं अपने घर में ही धागाकरण से एक सामाजिक दर्जा के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राप्त की है। रेशम उद्योग में पूरी प्रक्रिया में विशेषज्ञता, धैर्य उच्च कौशल की आवश्यकता होती है जो महिलाओं में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। ऐसी स्थिति में कुमारी कांती पुजारी के लिए रेशम उद्योग एक वरदान साबित हुआ जिसमें वे घर के चार दीवारी के अन्दर अपनी छत के नीचे काम करती हैं। इसके अलावा वे स्वयं नियमित घर के कामों में भाग लेते हुए दूसरे और समस्त अन्य कार्य निभाती हैं। कुमारी कांती पुजारी नि:संदेह आज की ग्रामीण महिलाओं की पथ प्रदर्शक हैं।

*वैज्ञानिक-डी, क्षे.रे.उ.अ.के., जगदलपुर

कहानी

रेशम गली

सपना चन्द्रा*

रचना की शहर में नयी-नयी पोस्टिंग हुई थी । ऑफिस जाने के क्रम में मुख्य सड़क से थोड़ी दूर एक किनारे डंडे के सहारे खड़ी जंग लगी एक बोर्ड दिखी । उस पर साफ-साफ अक्षरों में लिखा था.. "रेशम गली" । एक बार नाम पढ़कर रेशम से नर्म मुलायम खयालात रचना के मानस पटल पर उभरने लगे । किसी ख्वाब की तरह उसकी सोच भी उड़ने लगी थी । अरे वाह कितना रोचक नाम है.."रेशम गली" । एक कौतूहल सा हो आया था । स्कूटर को धीमी रफ़्तार में चलाते हुए वह उधर की ओर ही नजरें घुमा-घुमाकर उस जगह को देखते हुए आगे बढ़ती रही । लेकिन कहीं भी उस नाम से मेल खाती चीजें उसे नजर नहीं आ रही थीं...फिर ये रेशम गली कैसे....???? बेतरतीब से मकान, जगह -जगह फैली गंदगी, कचरे के ढेर और लोगों का रहन-सहन भी बिल्कुल अजीब सा । सब कुछ किसी प्रेत लोक का आभास करा रही थी । क्या मैं प्रेत लोक के रास्ते से गुजर रही हूँ..? ये सवाल रचना के मन में उभरे ही थे कि उसे दूर चबूतरे पर एक बूढ़ा आदमी बैठा हुआ दिखाई पड़ा । चेहरे की बनावट और झुर्रियों से भरा बदन, सब कुछ अटपटा लग रहा था । दो सूनी आँखें और मैले-कुचैले कुर्ते से ढका निढाल जिस्म, नजर तो मिली पर कोई हरकत नहीं । थोड़ी ही दूर पर इंसान और भगवान के रिश्ते को जोड़ता एकमात्र गवाह वो मंदिर अपनी बेवशी पर रोता दिखा । इंसानों की बस्ती में इस कदर जर्जर और उपेक्षित मंदिर की दिवारें, काई लगी, घांस-फूस भरे रास्ते और किनारे से टूटी सीढियाँ बता रही थीं कि ईश्वर के किसी फैसले से नाराज लोगों ने उनसे सम्बन्ध ही तोड़ लिए हैं । पर मंदिर के बाहर एक कोने में बाँस पर लगी रेशमी चुनरी हवा में लहराती हुई इस बात की तसदीक करा रही थी कि कोई तो है जो इस जगह आता-जाता है । इन्हीं नजारों में उलझी हुई वह ऑफिस पहुँचने पर भी सब कुछ जान लेने की बेकरारी, आखिर सच क्या है..? रचना को बेचैन कर रही थी । शाम को वापसी पर उस मंदिर की सीढ़ी पर एक वृद्धा को देख उसकी आँखें अचरज से भर गईं। पुराने, सिलवट भरे कपड़े, चेहरे पर गहरा सूनापन, खामोश निगाह लिए बैठी कौन है यह और इस उम्र में मंदिर की सीढ़ी पर क्या कर रही है ...?? कई दिनों तक यूँ ही उसकी आँखें वही सब देखते-देखते बीत रही थी । मन में अनगिनत सवाल सुलगते रहे । यहाँ इस वृद्ध और वृद्धा के अलावा कोई और क्यूँ नहीं नजर आता । हर रोज उस वृद्ध से नजरें टकराती और वह आगे बढ़ जाती । रोज की तरह ही आज उधर से गुजरते हुए उस वृद्ध ने उसे देखकर मुस्कुराया, उसने भी मुस्करा कर अनकहे रिश्ते को जोड़ लिया । पर अगले दिन वो चबूतरा सूना था.. वो वृद्ध कहाँ है..?? अपने मन में ये सवाल लिए आगे बढ़ने पर उस घर का खुला दरवाजा और कुछ औरतों का झुंड में मातम करना, तन-मन एक अनजाने खौफ से भर गया था । इस बार गुजरते हुए रचना के मन में आया चलकर कमरे के अंदर देख आऊँ...इसी ख्याल से अंदर कदम रखते ही वो मैला कुर्ता सीलन भरी दीवार पर टंगा मिला । आसपास के माहौल से ये समझ में आ गया था कि अब वो वृद्ध नहीं रहे । वह झट कमरे से बाहर आ गई । थोड़ी ही देर बाद वो वृद्धा.. आज मंदिर की उसी सीढ़ी पर बैठी दिखी । पर कुछ अलग सी, सिर पर गोटे लगे चुनरी ओढ़े बैठी हुई, जिसके किनारे उधड़े हुए और जो हैरान करने वाला दृश्य था, चेहरे के बीच से झाँकती बड़ी सी लाल गोल बिंदी, चुपचाप आँसू बहाती आँखें कहानी की एक-एक परत खोलती गई । रेशम गली का वो रेशमी रिश्ता और वह ठगी सी इस कहानी की आखिरी दर्शक बनकर उस वृद्धा को एकटक निहारती रही । ओह ! कितना मार्मिक, ये रेशम गली का रेशमी रिश्ता....

*श्यामपुर रोड, लालापुर भदेर कहलगांव,
भागलपुर-813203, बिहार

व्यंग

वीरू-बसंती वैवाहिक प्रस्ताव

विनोद कुमार विक्की*

वीरू की असीम याचना पर मित्र जय उसके विवाह का रिश्ता लेकर मौसी के रामगढ़ वाले घर पहुँचा।

-राम राम मौसी

-खुश रहो बबुआ।

औपचारिक अभिवादन के पश्चात् जय बोला-अरे मौसी अभी तक टिकी हुई हो लगता है दोनों वैक्सीन के अलावा बूस्टर डोज भी ले लिया है !

मौसी - अरे हाँ बेटा। पहली बार सरकार ने आश्वासन के बाद कुछ मुफ्त में दिया तो लगवाय लिये।

जय - चलो बढिया है, इसी तरह बनी रहो...मौसी मैं अपने दोस्त वीरू के लिए तुम्हारी लड़की बसंती का हाथ माँगने आया हूँ।

मौसी - क्यों, वीरू क्या आईसोलेशन में है जो खुद नहीं आया ?

दरअसल मौसी काफी बिजी शिडयूल है उसका, यूँ कहो कि मरने तक की फुर्सत नहीं है उसे, इसलिए उसके बिहाफ में मैं चला आया।

मौसी - अरे ऐसी क्या व्यस्तता। काहे किसी कंपनी समूह का मालिक है तुम्हारा वीरू ?

जय - अरे एक नहीं मौसी, पाँच-पाँच समूहों का मालिक है वीरू।

मौसी-अरे वाह ! किस प्रकार का काम होता है उसके मालिकाना समूह में ?

जय - प्रोडक्शन, इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट सब कुछ होता है मौसी।

मौसी (कान खुजलाते हुए) - तनी विस्तार से बताओ बबुआ।

जय - दरअसल मौसी ऐसा है कि हमारा वीरू चार साहित्यिक व्हाट्सएप ग्रुप और एक पारिवारिक ग्रुप का मालिक (एडमिन) है। उसके समूह में कहानी, कविता, व्यंग्य के उत्पादन से लेकर विभिन्न व्हाट्सएप समूह से गुड मॉर्निंग, गुड इवनिंग सहित मौलिक और फारवार्डेड विचारों का आयात-निर्यात होता रहता है।

मौसी (खीज कर) - मतलब कोई जिम्मेदारी नहीं उठा रखी उस निकम्मे ने ?

जय - अरे बिल्कुल मौसी। जिम्मेदारी उठाने के लिए ही तो बेगम की चाह में गुलाम बादशाह के साथ तनावपूर्ण दिन गुजार रहा है बेचारा।

मौसी (आश्चर्य से)-हयं बेगम, गुलाम, बादशाह मतलब ताश और जुआ खेलता रहता है ?

जय - छी:-छी: ऐसा नहीं है मौसी। दरअसल बेगम यानि तुम्हारी बसंती की चाह में दिन भर गाना एप्प पर गुलाम अली की गजल और बादशाह का रैप साँग सुनता रहता है।

मौसी (मुँह से मास्क हटाते हुए) - कहने का मतलब अपनी कोई पूछ-पहचान नहीं उसकी !

जय - कमाल करती हो मौसी। अम्बुजा सिमेंट से भी बड़ी पहचान है उसकी और पूछ तो पूछो ही मत, शायद ही कोई ऐसा दिन हो जो बड़े-बड़े सम्मानित व्यक्ति वीरू का शुक्रिया धन्यवाद और आभार ना प्रकट करते हो !

मौसी (बड़ा सा मुँह खोलकर) - ऐसा क्या ?

जय (जेब से मोबाइल निकालकर दिखाते हुए) - विश्वास ना हो तो खुद ही देख लो।

मौसी (गर्दन उचका मोबाइल देखते हुए) - वीरू क्या समाजसेवी अथवा वीवीआईपी है जो बड़े-बड़े लोग आभार प्रकट करते है !

जय - दरअसल मौसी वह दिन-रात सभी फेसबुक फ्रेंड की प्रत्येक पोस्ट या ट्विट पर बड़ी तन्मयता से बधाई और शुभकामना संदेश देता रहता है तो रिप्लाय में वे सभी आत्मीय आभार प्रकट करते हुए वीरू को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

मौसी (खिसियाते हुए) - ओह तो निठल्ला कुछ करता-धरता नहीं।

जय - ऐसा मैंने कब कहा मौसी दरअसल वो एक अच्छा अभिनेता, गायक और निर्देशक है।

मौसी (उत्सुकता से) - अरे वाह किस फिल्म में अभिनय और गायन किया है जरा एक का नाम तो बताओ।

जय - एक हो तो बताऊं मौसी ! वो तो मिनट-मिनट में वीडियो बना लेता है और गायन में तो तानसेन फेल !

मौसी (मुंह खोलते हुए) - ऐसा क्या !

जय - खुदा कसम मौसी टिकटॉक, मौज पर तो इतनी तेजी से वीडियो बना लेता है जितनी देर में मैगी भी तैयार नहीं होती और स्टारमेकर पर देर रात तक गाना गाता रहता है। एक राज की बात बताऊँ, पौने दो दर्जन फॉलोअर्स भी है उसके।

जय की बातें सुनकर मौसी की भौंहे तनने लगी।

परिस्थिति भांप जय धीरे-धीरे वहाँ से खिसकते हुए बुदबुदाया- तो... मैं ये...रिश्ता पक्का समझूँ मौसी...!

*ग्राम पो.-महेशखूंट बाजार,
खगड़िया-851213, बिहार

लघु कथा

ऊपर से रंग

पूनम पांडेय दुर्गेश*

ओमी ने एक कस्बे मे आकर अपनी नयी नौकरी शुरू की थी। उसे महानगर की तुलना में कस्बा बहुत ही अचछा लगा। एक सप्ताह में उसकी भौमिक से अचछी दोस्ती हो गई। भौमिक उससे दस साल बड़ा था और खूब हँसमुख भी। भौमिक का यह पारदर्शी व्यवहार और अनुशासन ओमी को खास पसंद था। मगर ओमी को इसी दफ्तर के नौरंगी से बहुत दिक्कत थी। उसका कारण यह था कि नौरंगी हर किसी को मुख के सामने तो कुछ कहता था और पीठ पीछे कुछ और। अक्सर नारद मुनि बनकर अफवाह फैलाता और सरल बातों को भी चटपटी चाट बनाता था। ओमी ने उसका यह रूप तीन-चार बार पकड़ लिया था इसलिए उसको नौरंगी पर भरोसा होता ही नहीं था। एक दिन ओमी ने भौमिक से इस बारे में बात की तो भौमिक ने बताया कि उसकी परवरिश ऐसी ही हुई है। कैसी ? ओमी ने सवाल पूछ ही लिया तो भौमिक ने बताया,"यह नौरंगी सारा बचपन अपने नाना के घर नौकरों के बीच पला और बढ़ा। वो नौकर इधर की उधर करते, किसी से कहते कुछ और करते कुछ इसीलिए यह भी ऐसा हो गया है। शायद धीरे-धीरे सुधर जाये। "ओह, ओमी के मुँह से निकला। हम सब अपने जीवन पर कोई रंग छिड़क ही लेते है, नौरंगी का भी यही अपना एक रंग है। इसलिए तुम चिंता न करो ओमी।" कहकर भौमिक अपना काम करने लगा कि तभी किसी ने भौमिक से कहा भौमिक बाहर आपकी पत्नी आपके इंतजार में खड़ी है। शायद कुछ काम है। भौमिक चट से सीढ़ी उतर कर नीचे गया। ओमी ने वहीं खिड़की से झाँक कर देखा तो सन्न रह गया। एक विकलांग महिला रिक्शे में थी वह भौमिक से बात कर रही थी। भौमिक वापस आया तो ओमी हैरान खड़ा था। "भौमिक वह आपकी पत्नी थी। ओमी ने अचरज से पूछा," अ..हाँ ओमी। मेरी पत्नी है वह मुझसे तीन साल बड़ी है। दरअसल मेरी कहानी ही ऐसी है। मैं गरीब और अनाथ हूँ। मेरी पत्नी के पिता ने छात्रवृत्ति देकर मुझे पाला पोसा। अब जब उन्होंने अपनी होनहार बेटी संग विवाह की बात कही तो मैं मना नहीं कर सकता था। "भौमिक, तो तुम खुश हो।" अरे, बिल्कुल। इसलिए कि मेरी पत्नी भी संतोषी है, वह मेरी जीवनशैली से खुश है। पिता से उसने गाड़ी, मकान कुछ नहीं लिया। "ओहो,।" ओमी के मुँह से निकला,"अरे, ओमी ओहो की कुछ बात ही नहीं हैं, वह यहाँ एक निजी स्कूल में गणित की शिक्षिका है।अपने पैरो पर खड़ी है।" ओह, भौमिक का ऐसा खुश मिजाज स्वभाव यह भी तो सादे जीवन पर एक अलग रंग छिड़कना ही तो था। ओमी को समझ आया।

पुष्कर रोड, कातरा, अजमेर-305004, राजस्थान

कहानी

रक्षा बंधन

महेश कुमार केशरी*

आज रक्षा बंधन का त्योहार था । संजीव कहीं बाहर जाने वाला था । तभी मोबाइल की घंटी बजी थी । कोई नया नंबर था । चूँकि आज रक्षा बंधन था । इसलिए संजीव को डर था कि कहीं बहनों ने फोन ना किया हो । इसलिए उसने इग्नोर करते हुए फोन काट दिया । इस बार संजीव की ये हरकत जगदंबा बाबू को नागवार गुजरी । अखबार एक तरफ रखते हुए संजीव से बोले - "उठा लो तुम्हारी बहनों का नहीं है क्योंकि, तुम्हारी बहनें जानती हैं कि मेरा भाई पैसों या अन्य जरूरतों को लेकर मेरा फोन नहीं उठाता । इसलिये अक्सर वो मेरे नम्बर पर ही फोन करती हैं । तुम्हारे नवम्बर पर नहीं । "संजीव बढ़ती महँगाई और घर के खर्चों से पहले ही परेशान था । अपने पिता से गुस्साते हुए बोला - " आपको ही सात बेटियों के बाद बेटा चाहिये था। आखिर, आपने एक बेटी से ही क्यों नहीं संतोष कर लिया था ? एक बेटी तो ठीक ही थी। एक बेटे की चाहत में आप लगातार सात बेटियाँ पैदा करते चले गये । अगर, आप एक बेटी पर ही संतोष कर लेते तो मेरी जान सांसत में तो नहीं पड़ती । "अभी वो और भी बहुत कुछ कहने की सोच रहा था कि दरवाजे पर की कॉलबेल बजी और संजीव अपनी बात कहते-कहते रूक गया । दरवाज़े पर आकर दरवाजा खोला तो दरवाजे पर अपनी बड़ी बहन लक्ष्मी को देखा । निशांत ने मामा को उलाहना देते हुए कहा मामा आपको कब से फोन कर रहा था । आप फोन क्यों नहीं उठा रहे थे ? "लक्ष्मी ने तंज किया" मामा को लगा होगा मैंने फोन किया है, जेब ढीली करनी पड़ेगी" । इसलिये फोन नहीं उठा रहा होगा । क्यों ठीक कह रही हूँ ना मैं?" लक्ष्मी ने संजीव को छेड़ा। संजीव इस सच्चाई को सुनकर जमीन में जैसे गड़ सा गया । औपचारिकता वश झुककर बड़ी बहन लक्ष्मी के पाँव छुए । साथ में भगना निशांत भी था । निशांत ने झुककर अपने मामा संजीव के पाँव छुए । लक्ष्मी अपने ही क्वार्टर और उसमें रखे फर्नीचर को देखकर मुग्ध हुए जा रही थी । अतीत जैसे जोंक की तरह उसके आत्मा को जकड़ता जा रहा था। अम्मा से जिद करके उसने क्रोशिये का काम सीखा था। मोती जड़े निर्जीव तोते आज बीस साल पहले की कहानी कह रहे थे । लक्ष्मी की जब शादी हुई थी । उसके पति एक मामूली क्लर्क थे । बाद में स्थिति कुछ खराब हुई तो भाई और भाभी ने आँखें फेर ली । संजीव सातों बहनों में से किसी का फोन कभी नहीं उठाता था। बेकार के खर्चों और आकस्मिक जरूरतों को बेवक्त झेलना उसे गैर मुनासिब लगता था।

घर में रखा अचार का मर्तबान, तुलसी पिंडा, उसकी अलमारी। सारी चीजें अपनी जगह ज्यों की त्यों थीं । इन बीस सालों में किसी शरणार्थी की तरह वो ही बिलग हो गई थी घर से ! अंतस में कुछ भीगने लगा तो उसने रूमाल से आँखों के कोर पोंछे ।" और, सब घर में कैसे हैं, पापा.. ? "लक्ष्मी की आवाज काँप रही थी । "सब, ठीक है, बेटा.. ! बैठो ना । ...दामाद जी कैसे हैं ? " जगदंबा बाबू की आवाज भी भींगने लगी थी ।" पापा ... इन बीस वर्षों में राजीव ..जी ने बहुत संघर्ष किया और आज उसी क्लर्क की हैसियत से उठकर कंपनी के डायरेक्टर बन गये । आज लाखों रुपये का पैकेज है । निशांत का एक फ्राँस की कंपनी में सलेक्शन हो गया है । कोठी और बागान हम लोग छोड़कर कहीं जा नहीं सकते । इधर राजीव भी परमानेंट फ्राँस शिफ्ट होने की सोच रहे हैं । निशांत एक फ्रांसिसी लड़की जेनी से प्रेम करता है । वो भी सॉफ्टवेयर इंजीनियर है, फ्राँस में । अगले महीने हमारे घर पर ही एँगेजमेंट होगी । संजीव - सुनंदा भाभी और पापा आप सब आइयेगा। फ्राँस में राजीव ने कुछ प्रॉपर्टी खरीदी है । उनका भी वहीं बिजनेस हो रहा है ।पापा, मैं आपसे एक बात कहना चाह रही थी । हमारे अब्रॉड शिफ्ट होने के बाद हमारा नोएडा वाला घर खाली रहेगा । हमलोग तो अब्रोड शिफ्ट हो रहे हैं । राजीव जी ने एक फैसला किया है कि हम अपना मकान संजीव और भाभी के नाम कर दें ताकि भईया और भाभी और उनके बच्चों को रिटायरमेंट के बाद इधर-उधर न भटकना पड़े । संजीव, अब मेरी ये आखिरी ख्वाहिश जरूर पूरी कर देना । आज रक्षाबंधन है । आज मैं अपने भाई को गिफ्ट दूँगी । जब हमारी परिस्थिति खराब थी । तब

हम बहनों ने तुमसे बहुत कुछ लिया। लेकिन, आज ऊपर वाले की दया से हमारी सब बहनें अपने-अपने घरों में खुश हैं। इस बार मैं कुछ लेने नहीं देने आयी हूँ। इस घर ने और आप लोगों ने मुझे बहुत कुछ दिया है। संजीव मेरी बात मान लो। संजीव का भी गला रूँधने लगा था। उसने अपनी सहमति दे दी। सुनंदा पास में ही आकर ना जाने कब से खड़ी थी। उसने लक्ष्मी के पाँव छुए। फिर पूजा की थाली लेकर आई। थाली में राखी, रोली, कपूर और मिठाई थी। लक्ष्मी ने संजीव के लालाट पर तिलक लगाया और कलाई पर राखी बाँधी। फिर आरती की। स्निग्धता और प्रेम एकाकार होकर लक्ष्मी की आँखों से बह रहे थे। उन आँखों में अपने भाई और अपने इस घर की तरक्की के लिये ईश्वर से अनंत प्रार्थनायें की थीं।

राखी बाँधने के बाद लक्ष्मी चलने को हुई तो संजीव ने अपनी बहन को एक पाँच सौ रुपये का एक नोट दिया। लेकिन लक्ष्मी ने पाँच सौ का नोट ये कहते हुए लौटा दिया कि लक्ष्मी हमेशा देने के लिये आती है। लेने के लिये नहीं। संजीव ने मनुहार करते हुए कहा दीदी- ''आज के दिन तो कम-से-कम रूक जाओ।"

लक्ष्मी दरवाजे तक जाती हुई बोली - "आज , केवल भाई से ही नहीं बल्कि अपनी छः बहनों से मिलने भी निकली हूँ और कौन कहता है कि रक्षा बंधन केवल भाइयों से मिलने का दिन होता है ? ये दिन तो अपनी बहनों से मिलने का दिन भी होता है। उन्हें भी तो निशांत के एंगेजमेंट में बुलाना है। वैसे भी पीहर में हमारे लिये एक शाम से ज्यादा का समय नहीं होता। या मैनें ज्यादा कह दिया। कुछ घंटे ही हमारा पीहर में बसेरा होता है। शादी के बाद हम लड़कियाँ चिड़ियाँ हो जाती हैं। अपने ही घर में कुछ घंटों की मेहमान !" और लक्ष्मी चिड़ियाँ बनकर अपने बाबुल के घोंसले से उड़ गई। आज संजीव अपने ही नजरों में इतना गिर गया था कि वो अपने-आप से ही आँखें नहीं मिला पा रहा था। आँखों से पश्चाताप के आँसू बह रहे थे।

*मेघदूत मार्केट, फुसरो, बोकारो-829144, झारखंड

लघु कथा

आभारी चोर

डॉ. चेनापल्ली रवि शंकर*

मैं एक गरीब सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी हूँ। मैंने और मेरी पत्नी ने कुछ दिनों के लिए रत्नागिरी में अपने पैतृक स्थान जाने की योजना बनाई। हमारा एक बेटा और दो बेटियाँ हैं, जो शादीशुदा हैं और दूर-दराज के शहरों में अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। जब हम दौरे के लिए आगे बढ़ेंगे तो हमारे घर की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। इसलिए हमें डर था कि अगर कोई चोर घर में घुस गया तो बक्सों और अलमारियों में धावा बोलकर और चोर को पैसे न मिलने से घर को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया जाएगा। इसलिए, मैंने मेज पर एक हजार रुपये की मुद्रा रखने का फैसला किया और चोर के लिए एक नोट छोड़ दिया। "माफ़ करें ! आपकी कड़ी मेहनत के लिए धन्यवाद ! मैं एक मध्यम वर्ग सेवानिवृत्त बैंक कर्मचारी हूँ जो थोड़ी पेंशन पर जी रहा हूँ, जिसे अभी अपडेट किया जाना है। हमारे पास घर पर कोई नकद नहीं है। आप आखिरकार यहाँ आए, मुझे डर है कि हो सकता है कि आपने अपना समय बर्बाद किया हो, इसलिए मैंने आपके लिए एक कामकाजी यात्रा उपहार के रूप में 1,000/- रुपये अलग रखे हैं। प्रिये, यदि आप अपनी फसल का विस्तार करना चाहते हैं तो मेरे घर के सामने आठवीं मंजिल ऑटो रिक्शा चालक से राज्य मंत्री बने, सातवीं मंजिल पर सत्ताधारी दल की नगर पालिका के आयुक्त हैं, छठी मंजिल पर एक 'भाई' का दाहिना हाथ है', पाँचवीं मंजिल शहर प्रमुख का घर है और चौथी मंजिल प्रमुख हवाला डीलर की है। उनके पास काफी नकदी है और चोरी की स्थिति में वे कभी पुलिस को रिपोर्ट नहीं करेंगे। मैं आपके फलदायी फसल की कामना करता हूँ !" एक महीने बाद, जब हम घर आए, तो पाया कि 1,00,000/- रुपये नकद और मेज पर एक नोट था। आपकी जानकारी के लिए प्रिय गरीब बैंकर धन्यवाद। मिशन सफलतापूर्वक पूरा हो गया था और फसल फलदायी रही है। इसलिए मैं आपके लिए कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए 1,00,000/- रुपये छोड़ता हूँ। कृपया इसे भविष्य में भी जारी रखें और बेहतर आर्थिक विकास के लिए जानकारी प्रदान करते रहें।

*वैज्ञानिक-डी (सेवानिवृत्त), कुरनूल जिला, आंध्र प्रदेश

मन की खूँटी

ज्योति मिश्रा*

लोहे की खूँटी ने आदमी से तल्ख़ी से कहा "हटाओ यार ये अपना बदरंग लबादा, मैंने तुमसे कितनी बार कहा कि तुम ये अपना गंदा मुखौटा कहीं और टाँगा करो। मुझे बिल्कुल नहीं अच्छा लगता तुम्हारे इन गंदे दाग़-धब्बों का बोझ ढोना। देखो तो मकान मालिक ने दीवारें कितनी चिकनी और गुलाबी कर दी हैं, अब मेरा रंग भी पहले की तरह काला नहीं रहा। गोल्डन पालिश ने मुझे भी चमका दिया है और तुम फिर से अपनी सारी गंदगी मुझ पर टाँग कर बेफिक्र हो जाते हो। मैं तुम्हारे पसीने की महक और गंदे लबादे के नीचे घुट रही हूँ। तुम कहीं और क्यों नहीं अपना ये लबादा टाँगते ? हैं तो घर में कितनी बड़ी-बड़ी स्टील की अलमारियाँ ..?" आदमी ने बेबसी से खूँटी की ओर देखा और अपने शब्दों में अपने मन की सारी मुलायमियत घोल कर बोला "क्योंकि तुम मेरे मन की खूँटी हो प्रिये ! तुम मेरी सबसे अच्छी दोस्त हो। मैं और किसी के सामने इस तरह खुल कर अपने सारे मुखौटे नहीं टाँग सकता। बेशक़ ! सारी अलमारियाँ मुझे बहुत अच्छा और सुन्दर समझती हैं लेकिन वे मेरे इत्र में डूबे रंगीन मुखौटे को तो अपने अंदर बंद कर लेंगी पर पसीने में भींगे मुखौटे फ़र्श पर फेंक देंगी ..और लोहे की बंद अलमारियों में सुन्दर मुखौटा लगाए-लगाए मेरा दम घुटता है यार। एक तुम ही हो जो मेरे अच्छे-बुरे सारे मुखौटों से परिचित हो। वहाँ मैं न केवल अपनी मुस्कान रख सकता हूँ बल्कि यहाँ मैं अपने दुख-दर्द और दाग़-धब्बों को भी रख कर सुकून पाता हूँ। प्लीज़ मुझसे ये अधिकार मत छीनो"। "खूँटी झल्लाकर आदमी पर चिल्लाई" देखो इतने दिनों तक मैंने तुम्हें बर्दाश्त किया इसका मतलब ये नहीं कि तुम ज़िंदगी भर मुझ पर हक़ जमाओ। वैसे भी तुम अब उम्र दराज़ हो चुके हो। तुम केवल झुर्रियों वाले लबादे मुझ पर टाँगते हो.. पहले की तरह न तो तुम्हारे मुखौटे में अब न चमक है और न ही खुशबू। मुझे फूल पत्तियों वाली तस्वीरें पसंद हैं या फिर तुम्हें मुझ पर कोई यंग फ़िल्मी हीरो-हिरोइन वाली तस्वीर टाँगनी चाहिए। लेकिन तुम अपनी सारी गंदी आदतों के मुखौटे मुझ पर टाँगते हो। खूँटी ने व्यंग्य से मुस्कुरा कर तंज़ कसा "लोग तुम्हें कितना अच्छा समझते हैं लेकिन तुम शराब पीते हो और वो बदनाम बार गर्ल भी दिन दहाड़े यहाँ चली आती है, ये सिर्फ़ मैं जानती हूँ"। "आदमी मुस्कुराया" हाँ ! सही कहती हो मैं कभी-कभी छुपकर यहाँ शराब पीता हूँ। जानता हूँ शराब पीना एक पंडित समझे जाने वाले आदमी के चरित्र के लिए ग़लत है लेकिन मुझे तो मेरे ही अपने हर रोज़ ज़हर पिला रहे हैं। उसका क्या..? रिश्तों के नाम पर मेरे ज़िस्म और आत्मा पर कब्ज़ा कर बैठे हैं ..। ये तो तुमने भी देखा है। मेरी शराब की एकाध पैग से हो सकता है मेरे शरीर को थोड़ा बहुत नुकसान हो जाए..ये किसी और पर ज़ुल्म नहीं करती। दुनिया कहती है, आत्मा ही परमात्मा है लेकिन सच तो यह है कि जिंदगी के सारे रिश्तों ने अब तक केवल मेरे जिस्म के कपड़ों और पाकेट के पैसों को ही देखा है। मेरी आत्मा की तड़प तुम्हारे सिवाय और कौन जानता है ?" आदमी की भारी आवाज़ पूरे कमरे में भर गई..। उसने थोड़ा ठहर कर अपनी आवाज़ साफ़ की और खूँटी को देखते हुए कहा "और बार गर्ल जिसे देखकर शरीफ़ लोग दिन में बचकर निकलते हैं, रात को उसका डांस देखने जाने को ललायित रहते हैं। डांस करना बार गर्ल का पेशा है, वो बाज़ार में ख़ुलेआम नाचती है। जो वहाँ जाएंगे, उसका डांस देखेंगे उनको पैसे देने पड़ेंगे। वो किसी से छल करके तो पैसे नहीं लेती। सच्चाई तो ये है कि वही लोग उसे बुरा कहते हैं, जिनके वो हाथ नहीं आती है"। खूँटी ज़ोर से ठहाके लगा कर हँस पड़ी.. "अच्छा ! तो तुम उसे इसलिए अच्छी कह रहे हो क्योंकि वो तुम्हारे हाथ आ गई है ?" आदमी खूँटी की विद्रूप हँसी दरकिनार करके शांत स्वर में बोला... नहीं ! बिल्कुल नहीं। तुमने देखा होगा कि मैं उससे कितने सम्मान और प्यार से बात करता हूँ। मैंने कभी उससे बार गर्ल समझ कर बात नहीं की। मैं जानता हूँ कि हर आदमी उसे बुरी निगाह से देखता है। वो भी जो याचक बनकर उसके घर की सीढ़ी चढ़ते हैं,

उसके साथ आनंद का पल बिताते हैं, सीढ़ियों से उतरते वक़्त उनकी ज़ुबान पर भी उसके लिए गाली होती है। मैं उसे यहाँ इसलिए आने देता हूँ क्योंकि जानता हूँ उसके पास भी चरित्र का एक उजला पक्ष है जो कोई नहीं देखता है। उसके पैसे की रोटी खाने वाला उसका परिवार भी पेट भरने के बाद उसे नीची दृष्टि से देखता है। मैं उसके चरित्र की अच्छी-बुरी सब बात सुनना चाहता हूँ। मैं उसके लिए वैसी ही खूँटी बनना चाहता हूँ जैसे तुम मेरे लिए हो, जहाँ मैं बेफिक्र होकर अपने सारे मुखौटे टाँग सकता हूँ। वो भी एक इंसान है और हर आदमी को चाहिए होती है एक विश्वास भरे 'मन की खूँटी' जहाँ वो अपनी सारी अच्छाई-बुराई, दुख-दर्द टाँगकर भूल जाए। खूँटी पर आदमी की भलमनसाहत का कोई असर नहीं हुआ। उसने चिढ़कर कहा "देखो तुम क्या करते हो इससे मुझे कोई मतलब नहीं। ठीक है कि लम्बे समय तक तुम मेरे अच्छे दोस्त रहे और मैंने चाहे-अनचाहे तुम्हारे सारे अच्छे-बुरे किरदार को ख़ुशी से गले लगाया लेकिन अब मेरे ऊपर एक गोल्डेन पालिश है और मैं अब इस नई रंग की गई ख़ूबसूरत गुलाबी दीवारों पर टिकी हूँ जिसे गंदगी नहीं अच्छी लगती। इसलिए तुम्हारे गन्दे लबादों का बोझ अब मैं नहीं ढो सकती। तुम मुझपर कोई सुन्दर और साफ़ तस्वीर टाँगते हो तो ठीक है, वर्ना मैं गिरा दूँगी तुम्हारी सारी गंदगी।" आदमी ने बेबसी से खूँटी को देखा और चुपचाप अपने मन का भारी बोझ समेटने लगा। खूँटी अब अक्सर आदमी के दाग़-धब्बों वाले मुखौटे फ़र्श पर फेंकने लगी और आदमी चुपचाप अपने गन्दे लबादों को ओढ़ कर सोने लगा। उसने अब खूँटी पर अपना मन टाँगना छोड़ दिया और धीरे-धीरे अपने ही मन के बोझ के नीचे दबकर एक दिन मर गया। कुछ दिनों बाद उस मकान में नया ख़रीददार आया। उसे पुराने ज़माने की बनी घर की दीवारें नहीं पसंद आई। उसने घर की रीमॉडलिंग करवाई। पुरानी दीवारें तोड़कर दीवारों में नई शीशे की कबर्डस बनवाई गई और लोहे की गोल्डन पालिश वाली खूँटी टूटकर कहीं नीचे मिट्टी में दब गई।

*द्वारा: श्री सी. पी. मिश्रा, गली नं. 3,
चिरैयाटांड, पटना-800001, बिहार

कविता

सार्थकता

सविता दास सवि*

मन करता है ,
हरी दूब के फर्श पर लेटे
तारों को साक्षी कर
हाथ तुम्हारा थाम
कुछ बाते दिल की करें।
कुछ अनकही, अनसुनी
जो मैंने भी कभी ना जानी,
ऐसी दिल की गिरहे खोले।
कुछ तुम मेरे ज़ख्मों के
मरहम बनो
कुछ दर्द तुम्हारा मैं कम करूँ।

ये मिलन अकस्मात ना था,
हमारे आत्मा की कोई दबी
चाहत होगी।
मेरे बिखरे अस्तित्व को,
अपने अंग में जब भर लोगे,
मौन प्रेम की सार्थकता होगी,
आँखों के कोने से, दो आँसू
भले ही लुढ़के,
होंठो पे मेरे
बस मुस्कान होगी।

*लाचित चौक, सेंट्रल जेल के निकट,
डाक-तेज़पुर, शोणितपुर-784001, असम

कहानी

अंतर्द्वंद्व

नीलोत्पल रमेश*

आरती अर्द्धनग्न वस्त्र पहने हुए भागी जा रही थी। उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त थे। वह चीखती-चिल्लाती भागे जा रही थी। भागते-भागते कुछ दूर जाकर अचानक ईंट से चोट खाकर गिर पड़ी और बेहोश हो गई। आरती का पति पीछे से उसे खोजते-खोजते आ पहुँचा। आते ही देखा कि आरती बेहोश पड़ी है। उसके पति का नाम लारेन है। पति की मार से ही वह घर छोड़कर भागी थी। थोड़ी ही देर पहले आरती को खूब डंडे से मारा था उसने और वही उसके पास बैठकर आँसू बहा रहा था। दुखी मन से वह बोला-"आरती, उठो! देखो मैं हूँ। अब मैं इस तरह की हरकत कभी नहीं करूँगा। बोलती क्यों नहीं...।" लारेन इतना ही कह पाया था कि आरती हिचकी दर हिचकी लेने लगी। उसकी स्थिति को देखकर साफ जाहिर हो रहा था कि अब वह बचेगी नहीं। लारेन आरती को उठाकर किसी तरह से लाया और डॉक्टर को बुलाकर दिखाया। धीरे-धीरे आरती की स्थिति सुधरने लगी। कुछ दिनों बाद वह भली-चंगी हो जाती है। "आरती! मैं सोच रहा था कि तुम बचोगी नहीं। तुम्हारी हालत ऐसी हो गई थी कि तुम एकदम लार-पुआल की तरह हो गई थी।" "तुम्हीं तो मुझे जीने नहीं देना चाहते हो। इस तरह से क्यों मारते हो ?" "देखो आरती! तुम पत्र लिखकर अपने माता-पिता को सूचित कर दो कि जो उन्होंने टी.वी., बी.सी. आर. आदि देने को कहा था, दे दें, नहीं तो...।" इतना ही लारेन कह पाया था कि आरती बोल पड़ी-"मुझे मार डालोगे। यही न! अगर तुझे मारना ही है तो उस दिन मुझे बचाया ही क्यों? फिर वही बात शुरू कर दिये? इसी बात को लेकर तो तूने मुझे उस दिन पीटा था। मैं उसी दिन मायके चली जाती। लेकिन (रुककर)... और मैं कभी नहीं तुम्हारे घर आती।" "आरती, अधिक बोलने की कोशिश मत करो। समझी? नहीं तो तुझे छठी का दूध याद करा दूँगा।" लारेन ने गुस्से में कड़कते हुए कहा।"हाँ-हाँ, तुम मुझे छठी का दूध ही याद करा दो और..।" आवेश में आरती बोले जा रही थी। "देखो! जो मैं कह रहा हूँ, वह करो। यानी अपने माता-पिता के पास पत्र लिख दो। बस।" "मैं हाथ जोड़ती हूँ। इस तरह के पत्र लिखने को विवश मत करो लारेन। मैं अपने घर की स्थिति को अच्छी तरह से जानती हूँ। वे लोग कहाँ से इतने रुपये का सामान देंगे।" "नहीं देना था, तो वे लोग कहे क्यों? उन लोगों की स्थिति चाहे जो भी हो, यह मुझे नहीं देखना है। मुझे टी.वी. और बी.सी. आर. चाहिए। बस।" "मैं उन लोगों की तरफ से पाँव पड़ती हैं। लेकिन इस तरह का पत्र लिखने को मुझे मत मजबूर करो।" इतना ही वह कह पायी थी कि लारेन आव देखा न ताव - साड़ी पकड़कर उसे पलंग से नीचे घसीटने लगा। इसके बाद बाल पकड़कर खूब पीटा। पिटाई में ही उसके सारे कपड़े चिथड़े हो गए। वह उसी दशा में घर से निकली और सीधे मायके की राह ले ली। आरती का मायके उसी शहर के एक दूसरे हिस्से में पड़ता था। शाम का समय हो गया था। चारो ओर घनघोर अंधेरा था। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। इसी में वह भागे जा रही थी। हाँफते-हाँफते आरती अपने मायके पहुँच गई। वह माँ को बुलाना चाहती थी - दरवाजा खोलने के लिए। लेकिन मुँह से शब्द नहीं निकल रहा था। कुछ देर के बाद किसी तरह धीरज बाधकर बोली- "माँ! सुनती हो? दरवाजा खोलो।" "आती हूँ। कौन है?" इतना कहकर आरती की माँ ने दरवाजा खोला तो देखा कि सामने उसकी लाडली अर्धनग्न रूप में रोती खड़ी है। दरवाजा खुलते आरती माँ को पकड़ चीख-चीखकर रोने लगी। धीरज बँधाने पर भी वह रोती ही जा रही थी। रोने की आवाज सुनकर आरती के पिताजी एवं घर के और लोग वहाँ आ पहुँचे। किसी तरह भारती को सामना देकर उसे धीरज बँधाया गया। घर के अंदर ले जाकर उसके कपड़े बदलवाये गए। आरती जब शांत हुई तो उसकी माँ ने पूछा - "बेटी! यह कैसे हुआ?" "मां! आज उस निगोड़े ने मुझे खूब पीटा। पीटा इसलिए कि मैं तुम लोगों के पास टी.बी. और बी.सी.आर. के लिए पत्र न लिख सकी। मैं समझती थी कि इतने रुपये आएंगे कहाँ से? जो रुपये थे, वह तो तुम लोगों ने मेरी शादी में लगा दी थी।" "पत्र क्यों नहीं लिखा? बेटी! मैं किसी तरह रुपयों का प्रबंध करके उनकी माँग की पूर्ति करती। एक बेटी अपनी माँ के जिंदा रहते इस तरह की यातना सहे, हम लोगों से कदापि सहन नहीं होगा।"

"माँ ! मैं अच्छी तरह से जानती हूँ कि पिताजी की आमदनी इतनी अधिक नहीं है जिससे कि वे उस निगोड़े की माँग की पूर्ति करें ।" "नहीं बेटी ! मैं एक-दो सप्ताह में प्रबंध कर दूँगी । अगर कहीं से प्रबंध न हुआ तो इस मकान का आधा हिस्सा ही बेंच दूँगी ।" "माँ ! अब मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगी। पति के रहते आजीवन वैधव्य धारण करूँगी लेकिन अब मुझे उस निगोड़े के पास जाने को मत कहो ।" ...समय बीतते गए और जल्दी ही आरती माँ के पास रहते हुए ही एक सिलाई सेन्टर खोल ली जिसमें महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई की शिक्षा देने लगी । वह इससे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगी । एक दिन आरती के मन में आया कि क्यों न वह धिक्कार से भरा एक पत्र लारेन के पास लिख भेजे । उसी दिन लारेन के नाम उसने एक पत्र लिखा । लारेन अपने काम में व्यस्त था, तभी डाकिया ने लारेन को एक पत्र दिया । काम की व्यस्तता को छोड़कर वह पत्र पढ़ने लगा - "लारेन ! मैं अब ठीक है । तुम टी.बी. एवं बी.सी.आर. तो खरीदकर देखते होगे । खैर, मैं अब तुम्हारे रहते वैधव्य जीवन बिता रही हूँ और जीवन भर बिताऊँगी । प्रेम-विवाह में भी दहेज अड़चन बन पायेगा, यह मैं पहले नहीं जानती थी लेकिन वह सब मुझे देखने को मिल रहा है । हाँ, इतना तो अवश्य कहूँगी कि जिसने मुझे जिस तरह से यातना दिया उसके ऊपर भी उसी तरह के यातना के पहाड़ टूटेंगे । याद रखना, जीवन में सुख और दुख दैनिक-गति के समान आते-जाते हैं । आरती" पत्र समाप्त ही कर पाया था कि उसके दिमाग में एक ही वाक्य हथौड़े की तरह बार-बार चोट करने लगा था- "जीवन में सुख और दुख दैनिक-गति के समान आते-जाते हैं । आज ही लारेन की बहन की बारात आने वाली है । दरवाजे पर लोगों की भीड़ एकत्र हो गई थी । बारात के मिलन का समय हो गया था । अब दोनों ओर से लोग एकत्र होने लगे थे । द्वार पूजा हुई, शादी हुई और लारेन की बहन नीरजा पीया के घर चली गई । नीरजा के पति उमेश हैं । उमेश को हमेशा शराब पीने की आदत लग गई थी । पत्नी के आने के बाद वह लत भला कैसे छूटती । पत्नी उमेश से बार-बार कहती- "उमेश ! शराब पीना छोड़ दो । मैं बार-बार कहती हूँ कि ऐसी आदत ठीक नहीं ।" "तुम मेरा शराब पीना रोकोगी । तुझे क्या पड़ी है ? मैं पीता हूँ ।" उमेश शराब के नशे में इतना ही कह पाया था कि नीरजा सहम गई । नीरजा जब इस घर में आयी थी, उस समय उमेश के घर की स्थिति साधारण परिवार जैसी थी । ठीक से सुबह-शाम चूल्हा-चक्की गर्म हो जाया करती थी । लेकिन वही घर अब एक शाम चूल्हा गर्म करने के लिए लालायित रहने लगा । नीरजा यदि कहीं से कुछ कर धरकर लाती है तो चुल्हा गर्म हो जाता है, नहीं तो ऐसे ही ठाले पड़े रहते हैं । पतोहू की विवशता ही हर जगह है । पतोहू ही किसी भी तरह से उपेक्षित की जाती है । चाहे पति हो, चाहे सास-ससुर हों, चाहे नन्द ही क्यों न हो, नारी-नारी को ही नीच दृष्टि से देखती है । नीरजा को दस रोज बिना खाये हो गया । पेट की भूख को किसी तरह से सह रही थी । इस पर पति ने उसे आकर खूब पीटा । वह इसलिए कि उसने कही से खाने का प्रबंध क्यों नहीं किया ? इसी दुख में उसने उस दिन अपने भाई लारेन को पत्र लिखा - "आदरणीय भैया जी सादर प्रणाम ! मैं बहुत ही लाचार स्थिति में अपना जीवन बिता रही हूँ । आज दस रोज बिना खाये हो गया, न जाने आपने मुझे किस खूँटे में बाँध दिया । वे हैं कि शराब पीने में ही मेरे सारे जेवर बेंच डाले । मैं जब भी प्रतिकार करती हूँ, वे खूब पीटते हैं । मैं सोचती है कि जिस तरह से आप भाभी को प्रताड़ित किया करते थे, ठीक वैसे ही अब आपकी बहन प्रताड़ित की जा रही है । जब पत्र आपके हाथ में मिलेगा, तब तक नीरजा इस लोक में शायद ही बची रह सके । आपकी अभागी बहन नीरजा" पत्र लिखने के बाद नीरजा ने उस बैरन-पत्र को किसी के सहारे डाक में डलवा दिया । उस शाम नीरजा भूख से कहीं ज्यादा पति की मार से चीखती-चिल्लाती और छटपटाती रही है । नीरजा के ऊपर दुख के पहाड़ टूट पड़े थे । एक तरफ भूख से पीड़ित थी तो दूसरी तरफ पति की मार से पीड़ित । रात में ही नीरजा ने भूख और दर्द से छटपटा-छटपटाकर दम तोड़ दी । लारेन अपने छोटे-से व्यवसाय में मगन है । इधर का सामान उधर और उधर का सामान इधर कर रहा है । तभी डाकिया लारेन को एक बैरन-पत्र दे गया । "कितना पैसे हुआ ? लारेन बोला । "दो रुपये, साहब ।" डाकिया ने बताया । "ठीक है ।" लारेन ने डाकिया को रुपये दिया और पत्र को पॉकेट में रखकर सोचा कि शाम को ठीक से निश्चिन्तता में पढ़ूँगा । शाम हो गई । आराम करने के लिए लारेन अपने कमरे में गया कि तभी पत्र की याद आ गई । पत्र खोलकर पढ़ने लगा । पत्र पढ़ते-पढ़ते वह पागल हो उठा और वह सोचने लगा-"आज मेरी बहन की स्थिति लगभग वही है जो स्थिति मेरी पत्नी की थी । दोनों स्थितियों में यदि भिन्नता है तो केवल यह कि मैं शराब नहीं पीता और उमेश शराब पीता है और दान-दहेज सब...।" अंतर्द्वन्द्व में रातभर लारेन पड़ा रहा । कभी सोचता कि पहले आरती के पास जाऊँ, कभी सोचता कि पहले नीरजा के पास जाऊँ । इसी अन्तर्द्वन्द्व में वह बहुत देर तक सोचता रहा । अंत में वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि किसी तरह से आरती को ही मनाकर लाऊँ ताकि नीरजा के पास जाऊँ तो वह मुझसे यह सूचना सुनकर खुश हो ।

*पुराना शिव मंदिर, बुध बाजार, गिद्दी -ए,
जिला-हजारीबाग -829108, झारखंड

कहानी

पाँच पांडव

गीता चौबे ''गूँज''*

"किसने किया यह हाल इन पाँचों पांडवों का...?" बुरी तरह से चीख पड़े मि.रस्तोगी ! जब सुबह सैर पर निकलते समय उनकी नजर सोसाइटी के गार्डेन में लगे अशोक के उन पाँचों वृक्षों पर पड़ी, जो बुरी तरह से कतरे हुए थे । वे जब भी घर से निकलते, एक नजर उन वृक्षों पर अवश्य डालते, जिन्हें वे प्यार से "पाँच पांडव" कहा करते थे । उन पाँचों वृक्षों को अपने हाथों से ही लगाया था उन्होंने । बड़े प्यार से सींचते, सहलाते उनके कोमल पत्तों को । बिल्कुल अपने बच्चे की तरह । रोज पुचकारने भी जाते थे... "जब तुम सभी बड़े हो जाओगे और मैं भी बूढ़ा हो जाऊँगा, तब शांत-सी दोपहरी में, तुम्हारी छाया में, एक खटिया डालकर लेट जाऊँगा और फिर हम सभी खूब बातें करेंगे ।" सभी पौधे भी ऐसे झूमते मानों अपनी सहमति दे रहे हों । हालाँकि सोसाइटी के गार्डेन की देखभाल के लिए माली की बहाली की गयी थी परंतु मि.रस्तोगी को इन अशोक वृक्षों से विशेष स्नेह था और इनकी देखभाल की जिम्मेवारी उन्होंने स्वयं ले रखी थी । उनके प्राण बसते थे इनमें और यह बात सोसाइटी के सभी लोग जानते थे । अक्सर उन्हें छेड़ा भी करते, "कहिए रस्तोगी साहब ! कैसे हैं आपके बच्चे ?" स्तोगी साहब भी बड़े उत्साहित होकर उनके विकसित होने की, नए-नए पत्ते निकलने की कहानी सुनाने शुरू कर देते थे । मुझे आज भी वह दिन अच्छी तरह से याद है जब मि.रस्तोगी ने उन अशोक वृक्षों को सोसाइटी में लाने की कहानी सुनायी थी । मुझे सोसाइटी में आए हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे । एक दिन शाम को मैं गार्डेन में टहल रही थी तो देखा कि रस्तोगी साहब हाथ में खुरपी लिए गार्डेन में मिट्टी खोद रहे थे । पूरा शरीर मिट्टी से सन गया था । मैं उत्सुकतावश उनके पास गयी और कहा, "अरे भाई साहब ! जब माली काका हैं ही तो आप क्यों परेशान हो रहे हैं ? वे खोद देंगे मिट्टी और जो पौधा लगाना हो उनको दे दीजिए, वे लगा देंगे ।" "आप नहीं समझेंगी भाभी जी ! ये पौधे नहीं, मेरी जान हैं...। वैसे भी माली के पास ढेरों काम हैं, ऐसे में ये उपेक्षित न हो जाएँ ।" पौधे लगाने के बाद वे मिट्टी सने हाथों को धोकर गार्डेन में पड़ी बेंच पर बैठ गए । मुझे भी बैठने को इशारा किया और इन पौधों को सोसाइटी में लाने की कहानी सुनाने लगे । मेरी उत्सुकता भी काफी बढ़ गयी थी । मैं भी बड़े मनोयोग से उनकी कहानी सुनने लगी ।"

किसी काम से कचहरी गया था । काम खत्म कर वापस लौट रहा था । पास में ही पौधों की नर्सरी थी । अपने प्रकृति-प्रेम के कारण, मैं खिंचा हुआ सा नर्सरी के अंदर दाखिल हुआ । इधर-उधर देख रहा था कि फूलों की कोई नयी किस्म दिखे तो ले जाऊँ । मेरे छत पर लगभग सभी किस्मों के फूल गमलों में लगे हुए हैं । कोई नया पौधा नहीं दिखाई दिया तो मैं वापस लौटने लगा । तभी मेरी नजर एक किनारे रखे हुए पौधों पर पड़ी । एक जैसे और एक ही लंबाई के अशोक वृक्ष के पाँच पौधे थे । लगा जैसे आशा भरी निगाहों से वे मुझे देख रहे हों । थोड़ा पास गया तो लगा, उनके कोमल पत्ते जैसे मुझसे कह रहे हों... "हमें भी अपने साथ ले चलो न" ! पता नहीं कैसे मेरे अंदर एकदम से वात्सल्य भाव उमड़ पड़ा । परंतु मैं तो फ्लैट में रहता हूँ । गमले में इन पौधों का समुचित विकास नहीं हो पाएगा । यह सोच कर मैं भारी मन से लौट आया । पर घर आकर भी मेरा मन उदास रहा । बार-बार उन पाँचों स्वस्थ पौधों की छवि आँखों के सामने आती रही । एक आइडिया दिमाग में आया कि क्यों न उन्हें लाकर सोसाइटी के गार्डेन में लगा दूँ । इस ख्याल के आते ही सुबह के इंतजार में मैंने पूरी रात बेचैनी में काटी । अगले दिन मैं सोसाइटी के आफिस में गया । सोसाइटी सेक्रेटरी मि.चड्ढा उस वक्त ऑफिस में बैठे हुए थे । मि.चड्ढा भी प्रकृति से प्रेम करते थे, उन्होंने बड़ी खुशी-खुशी गार्डेन में अशोक के पौधों को लगाने की अनुमति दे दी । उस वक्त मुझे इतनी खुशी हुई जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन है । मैं दुबारा उस नर्सरी में गया । रास्ते भर यही प्रार्थना करता रहा कि वे पौधे बिके न हों । मैं सीधा उस जगह पर पहुँचा, जहाँ पिछले दिन पाँचों पौधे रखे हुए थे । पर उन पौधों को वहाँ न देखकर मेरा दिल बैठ गया । मैं बदहवास सा नर्सरी के मालिक के पास काउंटर की ओर दौड़ पड़ा । नर्सरी के मालिक को देखते ही मेरे मुँह से निकला, "क्या वे पाँचों पांडव बिक गए ?" नर्सरी का मालिक हक्का-बक्का हो मुझे इस तरह देखने लगा जैसे किसी अजायबघर के पुतले को देख लिया हो ।

शेष पृष्ट 44 पर...

कहानी

लौट आओ फिर न जाने के लिए...

डॉ. रंजना जायसवाल*

अल सुबह ठंडी हवाएं उमड़-उमड़ कर तन से लिपटी जा रही थी। नीला आसमान नीले से धूसर होने की यात्रा में था। उसने अपनी साड़ी को कसकर अपने तन से लपेट लिया। ठंडी हवा के झोंके तन पर सिरहन पैदा कर रहे थे। कल रात से ही मौसम का मिजाज़ कुछ बदला-बदला सा था। सच कहते हैं लोग जीवन और मौसम का कोई भरोसा नहीं होता। चैत का महीना... खेतो में गेहूँ की फसल अभी पूरी तरह से पकी भी नहीं थी, रात में जोरदार बारिश हो गई। गेहूँ की फसल शरारती बच्चे की तरह अपनी जिद्द पूरी न हो पाने पर नाराज़ होकर रूठ कर जमीन पर लोट गई थी। एक समय था जब उसे बारिश बेहद पसंद थी, मिट्टी की सोंधी खुशबू, मौसम की तरलता उसके चेहरे पर खुशी बिखेर देता पर वक्त के साथ सब कुछ बदल गया था। घर के सामने लगे पेड़-पौधे नहाए-धोए राजा बेटा की तरह लग रहे थे। धुली-धुली सुबह भी न जाने क्यों उसके मन को खुश नहीं कर पाई थी। वक्त के साथ मन और जीवन में भी कालिमा पुत गई थी। घर के सामने बना घर उसके जीवन की तरह ही जर्जर हो गया था, हँसता-खेलता घर अचानक से खंडहर हो गया था। जिन दीवारों और इंच-इंच जमीन के लिए भाई-भाई का प्यासा हो गया था आज उसे पूछने वाला कोई नहीं था। दीवारें ढहने को आ गई थी और छतें खुद के लिए छत ढूँढने लगी थी। कभी इस घर का दरवाजा इस घर की शान होता था। आज जगह-जगह से उखड़ा पेंट उस घर, उस दरवाजे के दुर्दिन की कथा सुना रहा था। दो पल्ले का दरवाज़ा अपने वजन से लटककर वैसे ही झुक गया था जैसे किसी बूढ़े व्यक्ति की कमर वक्त की मार से झुक जाती है और दरवाजे पर लगी कुंडी उस बूढ़े व्यक्ति के बिना बत्तीसी के जबड़ों की तरह झूल रही थी। उसकी जिन्दगी भी तो इस घर की तरह ही तो हो गई थी। रविवार की वजह से सड़क पर हल्की-फुल्की चहल-पहल थी। सामने दीवार में लगी तस्वीर में सुरभि अभिनव के साथ मुस्करा रही थी। लाल पाड़ की बनारसी साड़ी में ढीला सा जूड़ा और उसमें सलीके से लिपटे रजनीगंधा के फूलों का गजरा सजा हुआ था। रजनीगंधा.... रजनीगंधा की खुशबू अभिनव को कितनी पसंद थी। रजनीगंधा के फूल, अगरबत्ती, परफ्यूम, रूम स्प्रे और साबुन सब उसे रजनीगंधा की खुशबू वाले ही चाहिए होते थे। अभिनव की पसंद कब उसकी पसंद बन गई उसे पता भी न चला। कितना फर्क था उन दोनों की पसंद में उसे बारिश पसंद थी वह बच्चों की तरह नाव बनाकर तैराना चाहती थी। बारिश में घंटों भीगना चाहती थी, उसकी सोंधी खुशबू को महसूस करना चाहती थी पर अभिनव के लिए बारिश का मतलब पानी, कीचड़, बिजली गुल, गन्दगी, कीड़े-मकोड़े ट्रैफिक जाम से ज्यादा कुछ नहीं था। नमक-मिर्च लगे कच्ची कैरियों के स्वाद में आकंठ डूब जाने वाली सुरभि को अभिनव के ड्रैगन फ्रूट और स्ट्राबेरी के स्वाद कभी समझ नहीं आए पर उसने अभिनव के स्वाद में अपने स्वाद को ढूँढ लिया था। "तुम अपने बालों में रोज़ गजरा लगाया करो।" "रोज़?" उसने आश्चर्य से कहा था, उस दिन से आज तक घर में रोज़ रजनीगंधा का गजरा आता और सुरभि के बालों में सजता पर अब...सुरभि ने अपने कंधे तक कटे गीले बालों को झटका और उन्हें सूखने के लिए खुला छोड़ दिया। रजनीगंधा आज भी घर में आता था पर वह सुरभि के बालों में नहीं भगवान के चरणों में सजता था। शायद एक उम्मीद आज भी दिल के किसी कोने में जिंदा थी कि अभिनव लौट कर आएंगे और यह गजरा उनके बालों में फिर सजेगा। अब तो लोगों ने अभिनव के बारे में पूछना भी बंद कर दिया था। रात-रात भर गायब रहने वाले अभिनव के इंतज़ार में उसने कितनी रातें खाली गुजारी थी, "बाहर क्या कर रही हो, घर की लाइट रात-रात भर क्यों जल रही है।" लोग पूछते नहीं थकते थे पर वह जवाब देते-देते थक गई थी। अब तो उसके पास उनकी इन बातों का कोई जवाब भी नहीं था। याद है उसे आज भी वह दिन अभिनव जुए में उसका मंगलसूत्र हार आए थे। "एक गहना ही तो है। फिर बनवा दूँगा" "गहना ?" इससे पहले भी तो वह काफी कुछ हार चुके थे, जो गहने से भी कहीं ज्यादा कीमती था। सुरभि की आँखों में खुद के लिए सम्मान, विश्वास और शायद इंतज़ार भी...कितना लड़ी

थी वह उस दिन अभिनव से ...फिर धीरे-धीरे चुप होती चली गईं। शायद रिश्ते ठीक होने के सारे विकल्प भी अब ख़त्म हो गए थे। शायद अंदर कहीं कुछ मर गया था... हाँ शायद उनका रिश्ता ? वह कहीं-न-कहीं मर चुकी थी पर वह तो साँसें ले रही थी। क्या साँसें लेने भर से इंसान को जिंदा मान लिया जाता है। तब तो किसी ने उसके दर्द को समझने की कोशिश नहीं की और न ही जानने की पर अभिनव के कायरों की तरह ही भागते ही अचानक से पास-पड़ोसी, नाते-रिश्तेदारों की आँखों में सवाल खर-पतवार की तरह उग आए थे। यूँ अचानक से अभिनव सब कुछ छोड़कर कहाँ और क्यों चले गए। सुरभि ने दिमाग़ में घुमड़ते सवालों के सिरे को यूँ हवा में खुला छोड़ दिया और ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठ गई। हल्के नम बालों में कंघी लगाई ही थी कि माँग मुँह बाए प्रश्न की तरह खुल गई। कभी-कभी उसे लगता बालों में खींची यह सीधी मांग घर के सामने बने उस खंडहर मकान की दीवारों की तरह है जो अनगिनत सवालों को लेकर खड़ी हो जाती है। ऐसे सवाल जिनके जवाब किसी के पास नहीं है। सुरभि ने सिंदूर दानी से सिंदूर निकाला और अपने मांग में टीक लिया। माँ हमेशा कहती थी कि सुहागिन स्त्री को नहाने के बाद मांग जरूर भर लेनी चाहिए पति की उम्र लम्बी होती है पर वह कैसी सुहागन थी। जिसके नाम का सिंदूर वह इतने वर्षों से भरती चली आ रही थी और उसे यह भी पता नहीं कि उसका सुहाग जीवित है भी या नहीं ? है तो आखिर कहाँ है। तभी दरवाजे पर एक दस्तक हुई, अपनी सोच में मग्न सिंदूर में डूबी सुरभि की उंगलियाँ अचानक हुई इस आहट से चौंक कर कांप गई और सिंदूर उसकी नाक पर गिर गया।"तुम्हारा पति बहुत प्यार करता होगा।" यही तो कहा था दादी ने, प्यार...? मन न जाने क्यों सोच कर कसैला हो गया था। वह दरवाज़े की ओर बढ़ी। एक तीखी गंध से उसका सर भन्ना गया, कुछ जानी-पहचानी सी गंध थी। इस गंध से पहले भी तो रूबरू हो चुकी थी वो... अभिनव के घर छोड़ने से पहले वह कुछ ऐसे लोगों के संपर्क में आया था जो इसका सेवन करते थे। अभिनव के मुँह से कभी-कभी ऐसी ही गंध आती थी। गांजे की ही महक थी, एक तेज़ भभका उसके नथुनों में घुस गया। उसके पैर पीछे हो गए। "जय शिव शंकर !" "तुम ?" दरवाज़ा खोलते ही सुरभि ने चौंक कर कहा...सामने एक रिश्ता खड़ा था सात जन्मों तक साथ बिताने वाला रिश्ता। सामने अभिनव खड़े थे उसके पति...कैसा रिश्ता था उसका जिसने बीच में हाथ छुड़ाकर सारे बंधन तोड़ दिए थे। मन खुशी के समंदर डूब-उतरा रहा था यही तो चाहती थी वो कि अभिनव लौट आए। आज उसकी इच्छा पूरी हो गई थी पर...कितनी अजीब बात है कि इंसान के मन में इच्छाएं जन्म लेती है और उनके मन में उसके पूरे होने की आशा करती है और उसके पूरे होते ही बदल भी जाती है। क्या इस अभिनव के वापस आने की इच्छा की थी उसने...कुछ रिश्ते दरवाज़े खोल जाते हैं या तो दिल के या फिर आँखों के...आज एक रिश्ते ने हमेशा के लिए उसकी आँखें खोल दी थी। एक मिनट भी नहीं लगा था उसे अभिनव को पहचानते हुए पर कितना कुछ बदल गया था। सर पर जटाएं, तन पर गेरूआ वस्त्र, बढ़ी हुई दाढ़ी, कंधे पर कपड़े की झोली, माथे पर भभूत का त्रिपुंड, बाएं हाथ में रुद्राक्ष की माला और दाहिने हाथ में कमंडल सचमुच कितना कुछ बदल गया था वह पर जो नहीं बदला था वह थी उसकी वो पनीली आँखें...जिसे वह आज भी हजारों में पहचान सकती थी। क्या वह लौट आया था क्या वाकई पर किसलिए...प्रेम और विश्वास की आंच पर सीजते रिश्तों को तो वह काठ के बर्तन पर चढ़ा गया था। फिर अचानक यूँ..."कौन है माँ ?" सुरभि की आवाज सुन आठ साल की चुनमुन बाहर आ गई थी। "तुम्हारी बेटी है ?" अभिनव ने उसकी मांग में भरे सिंदूर की ओर देखकर हौले से पूछा, "चुनमुन अंदर जाओ ?" सुरभि ने अपनी आवाज को सख्त करते हुए कहा, सुरभि वैसे ही दरवाजा पकड़कर खड़ी रही। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह अभिनव से क्या कहे, "कैसी हो तुम..." "जैसा तुमने छोड़ा था।" सुरभि की आवाज़ न जाने क्यों तल्ख हो गई थी। "अंदर आने के लिए नहीं कहोगी ?" "सुना है सन्यास के बाद लोग सांसारिक जीवन से दूर हो जाते हैं।" अनुभव चुपचाप वैसे ही खड़ा रहा, शब्द मानो चुक गए थे। "तुम्हारे पति ?" "ऑफिस गए हैं।' सुरभि की मुठ्ठियाँ भिंच गई, उसने दरवाजे को हल्का से टेड़ा किया। दरवाजे के ठीक बगल में अभिनव और सुरभि की शादी की तस्वीर लगी थी। तस्वीर में कितने ख़ुश नजर आ रहे थे वे दोनों पर सिर्फ तस्वीर में...अभिनव की जुए की लत ने उसे कहीं का न छोड़ा था। कितनों से कर्ज ले रखा था उसने... एक दिन ऐसा भी आया लोग कर्ज के पैसे लेने के लिए उसके घर तक पहुँच गए। अभिनव सब कुछ छोड़-छाड़कर भाग गए थे, उसे तो इस बात की खबर भी न थी कि चुनमुन उस वक्त सुरभि के पेट में थी। किसी ने कहा आत्महत्या कर ली तो किसी ने कहा सन्यास ले लिया पर वह आज भी तस्वीरों में सुरभि और चुनमुन के लिए जीवित था। सुरभि अंदर से चावल ले आई। अभिनव ने झोली आगे बढ़ा दी। सुरभि पूछना चाहती थी तुम अकेले आए हो या फिर कांधे पर लटके तुम्हारी इस झोली में उसके सवालों के जवाब भी लेकर आए हो पर उसके मुँह से एक शब्द नहीं फूटे। उसने बाबा

की झोली में चावल डाल दिए और हाथ जोड़ लिए...अभिनव चुपचाप उसकी आँखों को देखता रहा । कितनी सूनी थी वह आँखें कोई भाव नहीं... न ही कोई शिकवा न ही कोई शिकायत ! सुरभि ने दरवाजा बंद कर लिया । अभिनव के खड़ाऊ की आवाज उसके कानों को देर तक महसूस होती रही । "मम्मा साधु बाबा गए ? आप तो कहती थीं कि वो बच्चों को अपनी झोली में भरकर ले जाते हैं ! क्या वह मुझे लेने आए थे ?" चुनमुन की आँखों में एक डर तैर रहा था । सुरभि बुत बनी खड़ी रही,"मैं हूँ न...तुम्हें कोई नहीं ले जा सकता ।" सुरभि ने दृढ़ता से कहा "मम्मा ! ये देखो मैंने क्या बनाया है ?" सुरभि की आँखें धुंधला गई थी, आँखों में भर आए आँसुओं को पोंछते हुए उसने कहा "अरे वाह ये तो बहुत सुंदर है ।" चुनमुन ने अपने नन्हे हाथों से पेंटिंग बनाई थी । "मम्मा ये देखो ये पापा है ये आप हो और बीच में मैं...इसे कल ही पापा को पोस्ट कर देना । भूलना मत हमेशा की तरह...देखना पापा अब की अपनी प्रिंसेस की पेंटिंग पाकर बहुत खुश होंगे और हम से मिलने दौड़े चले आएँगे । इस बार हम सब साथ मिलकर मेरा बर्थडे सेलिब्रेट करेंगे ।" सुरभि चुपचाप उसकी बात सुनती रही, "मम्मा ! पापा आएँगे न ? आप हमेशा कहती हो वो आएँगे पर वो कभी नहीं आते ।" वह एक दर्द में अब तक जी रही थी पर आज उस दर्द से वह मुक्त हो चुकी थी । वह अच्छा महसूस कर रही थी । वह अपने दर्द अपनी पीड़ा का श्रेय अभिनव जैसे लोगों को नहीं देना चाहती थी । अभिनव से उसका दिल का नहीं दर्द का रिश्ता था, गम का रिश्ता... सुरभि खिड़की से उस गेरुए आकृति को धीरे-धीरे दूर बहुत दूर जाता देख रही थी । एक उम्मीद थी कि अभिनव कभी तो लौटकर आएँगे पर वह आज उसे जाता हुआ देख रही कभी भी वापस न लौटने के लिए...उसने धीरे से फुसफुसाया । "अभिनव चुनमुन मेरी नहीं हमारी बेटी है ।"

*लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही,
मिर्जापुर-231001, उत्तर प्रदेश

... पृष्ठ 41 का शेष

मैंने तुरंत अपने को सँभालते हुए कहा - "मेरा मतलब है कल मैंने वहाँ किनारे एक जैसे पाँच अशोक के पौधे देखे थे, पर अब वहाँ नहीं हैं, क्या उन्हें कोई खरीद कर ले गया ?" "अच्छा वो ? नहीं साहब ! बिके नहीं हैं । उधर किनारे पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा था, इसलिए मैंने इधर सामने लगा दिए हैं । परंतु आपने पांडव क्यों कहा ?" "भाई ! मैंने कल पहली बार उन्हें एक साथ देखा तो मेरे मन में तुरंत पाँच पांडवों की छवि आ गयी । मैं इन्हें लेने आया हूँ और मैं इनका नामकरण भी पांडव भाइयों के नाम का ही करूँगा । आप इन्हें उठवा कर मेरी गाड़ी में रखवा दें । इनकी कीमत मैं अभी आपको दे देता हूँ । अब ये मेरे पाँच पांडव हैं । इनके बनावट के हिसाब से मैंने इनका नामकरण किया है । देखिए कितने सुन्दर लग रहे हैं मेरे पाँचों पांडव, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव । सभी मेरे पुत्र समान हैं । इस कहानी को सुनाते समय मि.रस्तोगी के हृदय में उमड़ रही वात्सल्य की धार से मैं स्वयं भी अंदर तक भीग गयी थी । तब से मैं भी रोज शाम को टहलते समय उन अशोक के पौधों को अवश्य एक नजर देखती थी । मि.रस्तोगी सचमुच बड़े प्यार से उनकी देखभाल कर रहे थे । देखते-ही-देखते सभी पौधे तरुणावस्था में पहुँच गए । गजब की तरुणाई चढ़ी थी उन पर । यह सब मि.रस्तोगी के अथक परिश्रम और स्नेह का ही परिणाम था । पूरी सोसाइटी की शान बन चुके थे वे पाँचों पांडव । पर एक मि.व्यास थे जिन्हें इन वृक्षों का बढ़ना अच्छा नहीं लगता था । इसका कारण भी था । उनका घर पहली मंजिल पर था । पेड़ों के ऊँचे और घने होने से उनके घर में रोशनी नहीं पहुँच पाती थी । कई बार दबी जुबान से उन को कटवाने का प्रस्ताव सोसाइटी की कमिटी में लाया भी था, पर मि.रस्तोगी के जुनूनी प्रेम को देख कर कोई हिम्मत नहीं कर पाया । अभी पिछले हफ्ते मि.रस्तोगी ऑफिस के काम से चार दिनों के लिए दौरे पर गए थे । मि.व्यास को यह अच्छा अवसर लगा और उन्होंने पेड़ों की व्यवस्थित छँटाई के नाम पर बाहर के किसी माली से लगभग पूरी तरह से ठूँठ बना दिया । कोरोना की वजह से किसी का निकलना नहीं हो पा रहा था; जिसके कारण इस जघन्य -कार्य को होते हुए कोई नहीं देख पाया । आज अचानक मि.रस्तोगी की चीख ने सबको हैरत में डाल दिया । हो-हल्ला सुनकर मैं भी बाहर निकल आयी और मि.रस्तोगी के पाँचों पांडवों की यह हालत देख कर मुझे भी रोना आ गया । मि. रस्तोगी का क्या हाल हुआ था, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है । मि.व्यास भी सर झुकाए खड़े थे । उन्हें इतना अंदाजा नहीं था कि स्थिति इस तरह की हो जाएगी । उन्हें लगा था कि पत्ते तो फिर आ ही जाएँगे । कोई जड़ से थोड़ी न कटवा रहा हूँ । पर मि.रस्तोगी की हालत को देखकर उन्हें बहुत पछतावा हुआ और उन्होंने मन-ही-मन नए अशोक के पौधे लाकर गार्डेन की दूसरी तरफ रोपने का संकल्प किया । शायद यही उनका पश्चाताप था ।

फ्लैट नं.1013 R.R. सिगनेचर अपार्टमेंट बालाजी
लेआउट, चौकन्ना हल्ली थानीसंद्रा, मेन रोड,
बेंगलूर-560064, कर्नाटक

गज़ल

गज़लें

रेखा भारती मिश्रा*

(1)

पैरों में गिरकर हाथों को जोड़कर
जीना क्या सम्मान अपना छोड़कर
राह में बिखरे हुए पत्थर है पर
धूल कर दे हौसले से तोड़कर
चाहे जितने पैंतरे दुनिया करें
रुख हवाओं का रहेंगे मोड़ पर
ये जमी, वो चाँद, सारा आसमां
नाप लेंगे हौसले को ओढ़कर
है मुहब्बत में कशिश कैसी गजब
देख लो दिल से जरा दिल जोड़कर
तुम लबादा ओढ़ लो नफरत का पर
हम जियेंगे ये मुहब्बत ओढ़कर

(2)

माना तुम ले लोगे सारी दौलत मेरी
पर कैसे ले पाओगे ये शोहरत मेरी
झूठों का बाजार सजाकर रखते हो तुम
सच के दामन में सोना है फितरत मेरी
कतरा-कतरा दर्द सजाकर अपने दिल में
यूँ रखते हैं जैसे वो हो उल्फत मेरी
मेरी ग़ज़लों, नज़्मों से आबाद रहे दिल
शब्दों की लड़ियाँ बनती है हिम्मत मेरी
चाहे रस्ता कितना भी मुश्किल मिल जाए
साहस से बढ़ते जाना है आदत मेरी
फीके पड़ जाएंगे तेरे दांव सभी, जब
ऊंची हो जाएगी जग में इज्जत मेरी

*C/o कौशल कुमार मिश्रा, पश्चिमी लोहानीपुर,
रेलवे हण्डर रोड, कदमकुआं, पटना-800003, बिहार

गज़ल

लम्हें

नवीन कुमार सिन्हा*

हर लम्हा ही यादगार है किसे खाश मैं कहूँ ?
सब दूर होते जा रहे किसे पास मैं कहूँ ।
कोई बात ऐसी थी नहीं जिसे भूल जाऊँ मैं ।
सीने में जो है दफ्न वो किसको बयाँ करूँ
परेशान हो गया हूँ; अब जा कहाँ रहूँ ?
इकरार-ऐतबार की है हद नहीं कोई
जिस पर किया भरोसा दगा दे गया सोई
लम्हे जो बीत जाते, कभी लौटते नहीं ।
लम्हे ही जिन्दगी है, हम, ये सोचते नहीं
हर रंग के फूलों से ही सजते हैं बाग यार ।
दोनों से सीख मिलती है वो जीत हो या हार ।
बिकता कोई बाजार में कोई खरीदता उसे
किसको कहें बुरा और किसको भला कहें ?
जीवन अगर है डाल तो, लम्हें हैं पात-पात ।
मृत्यु तलक तो लम्हें भी चलते हैं साथ-साथ ।
हम तो नहीं जुदा कभी लम्हों से होते हैं ।
सुख और दुख छुपे इन्हीं से लम्हों में होते हैं ।
लम्हों की ये कतारें कभी टूटते नहीं ।
सब रूठ जाएँ लम्हें कभी रूठते नहीं
जब साँस चल रही, इन्हें कैसे विदा करूँ
हर लम्हा ही यादगार है किसे खास मैं कहूँ ?

*फ्लैट सं. 2-सी, अंजली अपार्टमेंट, हातमा,
काँके रोड, राँची-834008, झारखण्ड

लघुकथा

रीयल हीरो

कृष्ण बिहारी पाठक*

रोहित और रोहिणी दोनों सगे भाई-बहन हैं। आज दोनों में अजीब बहस छिड़ी हुई है। रोहिणी अपने पापा की प्यारी बेटी है और उसका कहना है कि पापा की मेहनत की कमाई से घर चलता है इसलिए पापा रीयल हीरो हैं। पर रोहित का कहना है कि उसकी मम्मा रीयल हीरो है। रोहिणी बोली - पापा को देखो, सुबह के काम पर जाते हैं, दिनभर जी तोड़ मेहनत करते हैं और देर शाम को थककर घर लौटते हैं तब जाकर कहीं घर में चूल्हा जलता है। रोहित ने कहा - ठीक है, पर ये भी तो देखो कि पापा सुबह समय पर तैयार होकर काम पर जा सके इसलिए मम्मा सबसे पहले उठकर रसोई में खपती है और रात को भी सबको खिलाकर खुद खाती है और सबके सोने के बाद सोती है। तुम ही बताओ काम के घंटे किसके ज्यादा हुए ? यह तर्क मजबूत था। रोहिणी थोड़ी देर के लिए चुप रही। फिर कुछ सोचकर बोली पापा पैसे कमाकर लाते हैं और दुनिया में बिना पैसे कुछ भी नहीं मिलता। घर का राशन भी नहीं। रोहित कहने लगा - पापा के पैसे से राशन मिलता है पर यह तो बताओ कि राशन के आटे-दाल को रोटी सब्जी में कौन बदलता है ? इस प्रश्न का कोई उत्तर रोहिणी को नहीं सूझ रहा था, वह कुछ बोलती, इतने में मम्मा कमरे में आ गई जो अपने बच्चों की बहस को मुग्ध होकर सुन रही थी। दोनों बच्चों से मम्मा बोली - किस बात पर बहस हो रही है दोनों में ? दोनों बच्चे एक साथ बोल पड़े - रीयल हीरो पर। मम्मा ने दोनों बच्चों को पास बिठाया और मुस्कुराते हुए समझाया कि गृहस्थी की गाड़ी स्त्री-पुरुष दोनों के सहयोग और समन्वय से चलती है। दोनों की भूमिका बराबर होती है, न किसी की कम न किसी की ज्यादा। इसलिए एक सफल परिवार के रीयल हीरो वे दोनों ही होते हैं। दोनों बच्चे अब खुश थे, उनके रीयल हीरो का फैसला जो हो चुका था।

*कृष्ण बिहारी पाठक, व्याख्याता हिंदी, तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी, जिला करौली राजस्थान, पिन-322230

कविता

मैं तरंगिणी

डॉ. रचना सिंह ''रश्मि''*

मै निर्मल नीर नदी
श्वेत तन उर में चंचलता
हिमखंडों को
पिघलाकर
चट्टानों से टकरा कर
अपनी राह बनाती
कभी ना रुकती
कभी ना थकती
बहती जाती
चंचल धारा सी

झोंकें पवन के,
मिलकर मेरी लहरों में
सुर-ताल लगाते
कल-कल करती
मेरी ध्वनि मधुर संगीत
सुनाती सी

मै तरंगिणी
ऊँचे शिखरों कानन से
इठलाती-बलखाती
चंचल-चपला
निर्झर बहती
जाती सी

तरु,खग,विहंग संग
मैं वसुधा की
प्यास बुझाती
पतित पावनी
पुण्य दायिनी

हरिद्वार, काशी सी
शीतल निर्मल
जल की रानी
बहती अविरल धारा
अल्हड़ मस्त
जवानी सी
खारे सागर में
मिल जाती
ब्रह्मलीन एक संध्या सी।।

*2/111 विराट खंड 2, गोमती नगर लखनऊ-226010

पुकारती है नदी

हरीशचंद्र पांडे*

नदी न होती तो मनुष्य को जंगली से सभ्य बनने में बहुत समय लग जाता। नदी केवल आदमी के लिए ही नहीं, नदी तो हर जीव-जंतु के लिए जीवन देने वाली है। इसीलिए आदमी होते-होते मनुष्य ने सभ्यता के आरंभ से ही नदी को महान मान लिया, नदी को अपने हर पर्व और उत्सव से जोड़ दिया। कितने ही ऐसे प्रसंग और कहानियाँ मिल जाती हैं जिनमें नदी को ईश्वर ही कहा गया है। नदी न केवल प्यास बुझा रही है बल्कि नदी ने अपने किनारे बसने वाले को सहारा दिया है। नदी के आँचल में दिनचर्या बन रही है। नदी अपने-आप में एक साधन और साध्य दोनों ही है। भारतीय जन-जीवन में एक अनोखी बात देखने को मिलती है कि नदी जहाँ से ग्लेशियर का रूप बदल कर पिघलती है यानी जो उसका उद्गम है और जहाँ पर वह सागर से मिलती है वहाँ पर तीर्थ स्थल है। लगभग हर नदी का एक सुंदर नाम है। उसकी एक कथा है। लोग नदी मे डुबकी लगा कर, इसकी आरती करके, इसके जल को अपने लिए बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। यह सब किसी कारण से है। शायद इसीलिए कि एक-एक मनुष्य को नदी का महत्व समझ में आ सके। वह यह महसूस कर सके कि नदी के बिना वह कुछ भी नहीं है। आज सारे भारत का हाल यह है कि जो अरबपति हैं वो मनमाने तरीके से उद्योग लगाकर इन नदियों को प्रदूषित कर रहे हैं। नदी की मछलियाँ, मगरमच्छ आदि के पेट मे प्लास्टिक भर-भर कर मिल रहा है। यह बहुत दुःखद है। शार्क और व्हेल जैसी मजबूत मछलियाँ तक नदी के खराब पानी से बेमौत मर रही हैं। मुनाफाखोर लोग इस हद तक अपना ईमान खो चुके हैं कि सिर्फ एक गंगा नदी की सफाई के लिए पिछले बीस वर्ष में कम-से-कम एक हजार करोड़ की राशि खप चुकी है मगर गंगा अभी तक साफ नहीं हुई है। यही हाल गंगा की सहायक नदी रामगंगा, यमुना, घाघरा, ब्रह्मपुत्र, गोमती, सरस्वती आदि का हो रहा है। दिल्ली की यमुना नदी के लिए ही इस साल अकेले कितने करोड रुपये लगा दिये मगर यमुना का विषैलापन वैसा ही है। शहरीकरण बहुत तेजी से हो रहा है। फ्लैट में रहने वाले यही कामना करते हैं कि उनको साफ पानी मिले पर कैसे मिलेगा। न तो किसी ने नदी किनारे पेड़ लगाये। न किसी ने नदी में लाखों टन कचरा जाने से रोका। हर नदी आज की तिथि में लगभग चालीस फीसदी ही बची है और उसमें भी कचरा है, मरे हुए जानवर भरे हैं। उद्योगों का भारी कार्बन भरा है। अब कुछ साल बाद लोग रोटी के लिए नहीं जल के लिए एक-दूसरे की जान लेने लगेंगे। गंगा सहित अनेक नदियों में हजारों सुरंगे बनाई जा रही हैं। बाँध बनाकर नदी की धारा को रोका जा रहा है। बाँध बनाते समय आसपास के इलाके बम लगाकर तोड़े जा रहे है। जबकि और भी तरीके हैं जिससे नदी का पानी सुरक्षित किया जा सकता है। कुछ छोटी छोटी झीले बनाई जा सकती है, जो एक पारंपरिक तरीका है और इससे नदी की धारा भी नहीं रुकती है। बहुत बड़े बाँध की जगह छोटे-छोटे तालाब से मिट्टी का क्षरण नहीं होता। भूजल का भंडार भी बढता है। एक समाज सेवी ने एक फिल्म बनाई थी कि नदी जो है वह केवल जल नहीं है उसे दर्द भी होता है वह भी सिसकती है। भारत के हर वेद और पुराण में कहा गया है कि नदी हमारी माँ है। मगर इसी माँ को इतना गंदा कर दिया है कि वह अब सुरूप से कुरूप हो रही है। हम अपनी अद्भुत शक्ति सम्पदा के लिए जागरूक क्यों नहीं।

*कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी-263139, उत्तराखंड

पाठकों की प्रतिक्रिया

आदरणीय संपादक जी
नमस्कार।

रेशम वाणी का जून अंक पढ़ा जो बहुत पसंद आया। आपका संपादकीय भी बहुत पसंद आया। पत्रिका में लेख, कविताएं, कहानियां भी खूब पसंद आई। निवेदन है की पत्रिका हमारे पते पर भी नियमित भेजने की कृपा करे।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
अध्यक्ष स्वर्गीय मीनु रेडियो श्रोता क्लब, गल्ला मंडी गोला बाजार 273408, गोरखपुर उ. प्र.

आदरणीय महोदय
सादर अभिवादन !

रेशम वाणी के बारे में फेसबुक की एक पोस्ट से अवगत हुआ। उसमें सिर्फ़ विषय सूची थी लेकिन इससे पत्रिका का रचनात्मकता और स्तर का बोध होता है। सादर प्रकाशनार्थ मैं अपनी कुछ ताज़ा और अप्रकाशित कविताएँ प्रेषित कर रहा हूँ। मेरी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आशा है कविताएँ पसंद आएँगी और प्रकाशित करेंगे।

केशव शरण
एस 2/564 सिकरौल, वाराणसी 221002

आदरणीय संपादक महोदय जी
सादर प्रणाम।

रेशम वाणी का दिसंबर 2022 अंक मिला। सादर आभार। गंभीर एवं गुणवत्तापूर्ण रचनाओं, सुचिंतित आलेखों से व्यवस्थित एक उपयोगी अंक के लिए संपादकीय समूह एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई, अभिनंदन।

कृष्ण बिहारी पाठक
व्याख्याता हिंदी, तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी, जिला करौली, राजस्थान

श्रीमान संपादक महोदय,
रेशम वाणी, पिस्का नगड़ी, रांची।

महाशय, आपके संस्थान की पत्रिका का 57वां अंक स-समय प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका जिस स्तर पर है उस पर कायम रहना भी एक उपलब्धि है। मुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि न केवल अपने स्तर को रेशम वाणी ने बनाए रखा है बल्कि वह उससे आगे बढ़ने की ओर सतत् अग्रसर है। पत्रिका के तकनीकी आलेख तो हमेशा ही तथ्यों से भरे रहते हैं और संस्थान के गतिविधियों की हमें जानकारी भी देते हैं। "भारत की राजभाषा और लिपि विमर्श" पर श्री य. ना. चतुर्वेदी का आलेख महत्वपूर्ण जानकारियों से भरा है, पुस्तकों का महत्व तो सदैव ही बना रहेगा यह रंजना मिश्र के आलेख में परिलक्षित होता है।आज विश्व कचरे की समस्या से जूझ रहा है और समय रहते इस पर काबू पाने की जरूरत है इस पर ध्यान केंद्रित कराता हुआ रेखा शाह आरबी का लेख पठनीय है। सभी कहानियां स्तरीय हैं, खासकर "सनक" और " घर वापसी"। व्यंग से भरा "मंसूबा" और " हाय बेचारा पति" अच्छा लगा। "चाहता हूँ बचपन में लौट जाना" कविता मानव मन में उठते विभिन्न भावों की ओर इंगित करते हुए माँ की याद शिद्दत से ताज़ा करने में सक्षम है। यह अंक समग्र रूप से पठनीय और संग्रहणीय है।

नवीन कुमार सिन्हा, राँची

प्रिय महोदय,

मुझे 'रेशम वाणी' के अंक 56 (दिसंबर 2022) की पीडीएफ प्रति देखने को मिली। इस पत्रिका की और आपके विभाग की राजभाषा विषयक गतिविधियों से मैं पहले भी परिचित रहा हूं और उनसे प्रभावित भी रहा हूँ। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि इस अंक में आपने विभागीय और सामान्य पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी, स्तरीय और ज्ञानवर्द्धक सामग्री सँजोयी है। राजभाषा तथा रेशम उत्पादन के तकनीकी ज्ञान आदि से जुड़े आलेखों की प्रेषण-सक्षम हिंदी में प्रस्तुति सराहनीय है। पत्रिका को रोचक बनाने के लिए कहानी, लघुकथा, व्यंग्य, कविता आदि का प्रकाशन भी प्रशंसनीय है। इस अंक के चित्रों के माध्यम से राजभाषा विषयक गतिविधियों की भी प्रभावपूर्ण झलक मिलती है। कुशल सम्पादन के लिए आप तो बधाई के पात्र हैं ही, इस अंक के सभी लेखकों को भी हार्दिक शुभकामनायें। आशा है, यह पत्रिका आगे और प्रगति करेगी।

राजेन्द्र गौतम, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
दिल्ली विश्वविद्यालय 906, झेलम अरोरवंश सीजीएचएस लि. प्लॉट 8, सेक्टर 5 द्वारका, नई दिल्ली

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान के 59वें स्थापना दिवस समारोह में
मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी.राधाकृष्णन का सम्बोधन

महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी. राधाकृष्णन, विशिष्ट अतिथि तथा अन्य अधिकारियों
द्वारा रेशम वाणी अंक–57 का विमोचन

महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी. राधाकृष्णन को सम्मानित करते संस्थान के
तत्कालीन निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण

झारखण्ड वन विभाग से आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण पर
आए वन रक्षकों का एक समूह

खूँटी, राँची (झारखण्ड) में आयोजित आदिवासी गौरव
दिवस में राँची के सांसद श्री संजय सेठ को शॉल एवं मोमेंटो से
सम्मानित करते संस्थान के निदेशक डॉ. एन. बी. चौधरी

आदिवासी गौरव दिवस में हटिया विधानसभा के विधायक
श्री नवीन जायसवाल को शॉल एवं मोमेंटो से
सम्मानित करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

तसर रेशम कृषि मेला

चाईबासा में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला का
श्रीमती जोबा मांझी, माननीय मंत्री, महिला एवं बाल विकास
मंत्रालय, झारखण्ड सरकार द्वारा उद्घाटन

विशिष्ट अतिथि श्रीमती गीता कोड़ा, माननीय सांसद
लोकसभा सिंहभूम, झारखण्ड
द्वारा कृषि मेला में दीप प्रज्वलन

कृषि मेला में तकनीकी बुलेटिन का
विमोचन करते माननीय मंत्री, सांसद, विधायक
एवं अन्य अधिकारीगण

कृषि मेला में किसानों को सम्मानित करतीं
मुख्य अतिथि श्रीमती जोबा मांझी, माननीय मंत्री,
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, झारखण्ड सरकार

लखनऊ में आयोजित यू.पी. स्टेट मेगा एक्सपो, 2023 में संस्थान
द्वारा लगाये गये स्टॉल का अवलोकन करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के
सदस्य सचिव, श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से.

यू.पी. स्टेट मेगा एक्सपो, 2023 में केन्द्रीय रेशम बोड के
सदस्य सचिव, श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से. को स्मृति चिन्ह प्रदान
करते संस्थान के निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान के 59वें स्थापना दिवस समारोह में
मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी.राधाकृष्णन का सम्बोधन

महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी. राधाकृष्णन, विशिष्ट अतिथि तथा अन्य अधिकारियों
द्वारा रेशम वाणी अंक–57 का विमोचन

महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड
श्री सी.पी. राधाकृष्णन को सम्मानित करते संस्थान के
तत्कालीन निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण

झारखण्ड वन विभाग से आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण पर
आए वन रक्षकों का एक समूह

खूँटी, राँची (झारखण्ड) में आयोजित आदिवासी गौरव
दिवस में राँची के सांसद श्री संजय सेठ को शॉल एवं मोमेंटो से
सम्मानित करते संस्थान के निदेशक डॉ. एन. बी. चौधरी

आदिवासी गौरव दिवस में हटिया विधानसभा के विधायक
श्री नवीन जायसवाल को शॉल एवं मोमेंटो से
सम्मानित करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

तसर रेशम कृषि मेला

चाईबासा में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला का
श्रीमती जोबा मांझी, माननीय मंत्री, महिला एवं बाल विकास
मंत्रालय, झारखण्ड सरकार द्वारा उद्घाटन

विशिष्ट अतिथि श्रीमती गीता कोड़ा, माननीय सांसद
लोकसभा सिंहभूम, झारखण्ड
द्वारा कृषि मेला में दीप प्रज्वलन

कृषि मेला में तकनीकी बुलेटिन का
विमोचन करते माननीय मंत्री, सांसद, विधायक
एवं अन्य अधिकारीगण

कृषि मेला में किसानों को सम्मानित करतीं
मुख्य अतिथि श्रीमती जोबा मांझी, माननीय मंत्री,
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, झारखण्ड सरकार

लखनऊ में आयोजित यू.पी. स्टेट मेगा एक्सपो, 2023 में संस्थान
द्वारा लगाये गये स्टॉल का अवलोकन करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के
सदस्य सचिव, श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से.

यू.पी. स्टेट मेगा एक्सपो, 2023 में केन्द्रीय रेशम बोर्ड के
सदस्य सचिव, श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से. को स्मृति चिन्ह प्रदान
करते संस्थान के निदेशक डॉ. एन.बी. चौधरी